30.00 June 2012

मरयम

Turn Page for Gift Coupon 9

बचपने में बहकने के चासेंज़

घरों की बर्बादी

कल्चरल अटैक

कुरआन में बिज़नेस मेनेजमेंट

जहेज़

इमाम अली अ॰ की हुकूमत

ग़ीबत

रजब की फ़ज़ीलत

कुरआन में एजुकेशन सिस्टम

मैं सबसे ख़ूबसूरत हूँ

मां-बाप की ज़िम्मेदारियां

امام حسین علیہ السلام

3 Shaban

इमाम हुसैन[अ०]

खुदा को बड़े-बड़े काम और हिम्मतें पसंद हैं, छोटी-छोटी चीज़ें उसे पसंद नहीं हैं।

Wiladat

Imam HUSAIN a.s.

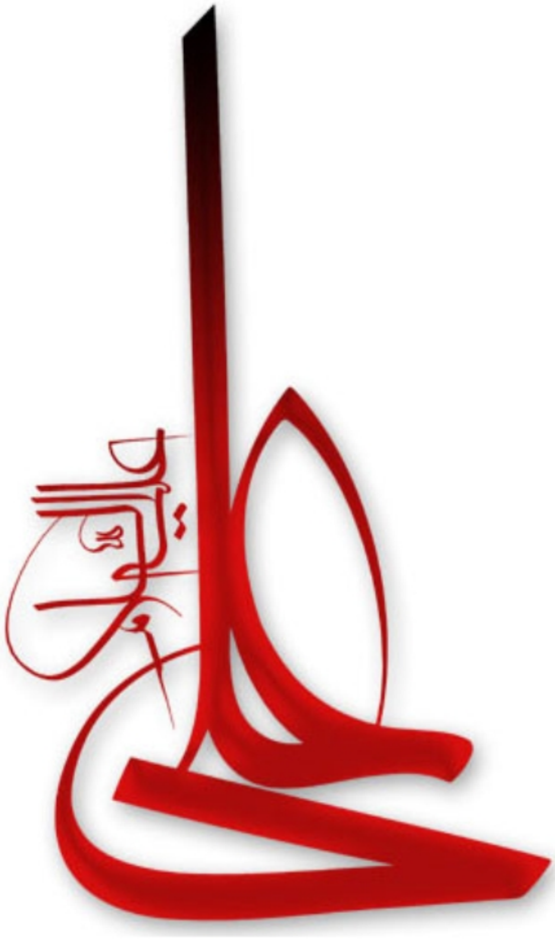

RNI No: Title Code: UPHIN41897

Monthly Magazine

मरयम

Vol:1 | Issue: 4 | June 2012

13 RAJAB

Wiladat

Hazrat

ALI a.s.

इस महीने आप पढ़ेंगी...

इमाम मोहम्मद तक़ी[अ०] का ज़माना	5
माहे रजब की फ़ज़ीलत	6
अपनी पसंदीदा चीज़ राहे ख़ुदा में दो	8
इमाम अली[अ०] की हुकूमत	9
कुरआन में एजुकेशन सिस्टम	11
Exams के बाद...	14
बचपने में बहकने के चासेंज़	15
पकवान	16
कुरआन में बिज़नेस मेनेजमेंट	18
घरों की बर्बादी	20
कुरआन की मिसालें	22
जहेज़	24
कल्चरल अटैक	25
दुआ	28
मैं सबसे ख़ूबसूरत हूं	30
एक चरवाहा	31
ख़ुदा का शुक्रिया	32
ग़ीबत-2	34
मां-बाप की ज़िम्मेदारियां	36
फुलेरीन	39
आयतुल्लाह मोहसिन क़राअती	41

Editor

Mohammad Hasan Naqvi

Editorial Board

Nazar Abbas Rizvi
M. Fayyaz Baqir
Akhtar Abbas Jaun
Qamar Mehdi
Ali Zafar Zaidi

Managing Editor

Abbas Asghar Shabrez

Executive Editor

Fasahat Husain

Assist. Exec. Editor

M. Aqeel Zaidi

Contributors

Imtiyaz Abbas Rizwan
Azmi Rizvi
Fatima Qummi
M. Mohsin Zaidi
Tauseef Qambar

Graphic Designer

imagine **Siraj Abidi** **9839099435**

Typist

S. Sufyan Ahmad

'मरयम' में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामंदी हो, यह ज़रूरी नही है।
'मरयम' में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कारवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और 'मरयम' में छपे लेख और तस्वीरें 'मरयम' की प्रॉपर्टी हैं।
इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले 'मरयम' से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। 'मरयम' में छपे किसी भी कंटेंट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कारवाई प्रकाशन तिथी से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद किसी भी तरह की पूछताछ और कारवाई पर हम जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।
संपादक 'मरयम' के लिए आने वाले कंटेंट्स मे ज़रुरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer, publisher & Proprieter S. Mohammad Hasan Naqvi printed at Swastika Printwell Pvt. Ltd., 33, Cant. Road, Lucknow and published from 234/22 Thavai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017 (Lucknow), +91-9892393414 (Mumbai)
Email: maryammonthly@gmail.com

इमाम मोहम्मद तक़ी[अ०] का ज़माना

इमाम मोहम्मद तक़ी[अ०] के ज़माने में कई इंक़ेलाब बरपा हुए जिनकी लीडरशिप अलवियों के पास थी। इनमें से दो मूवमेंट अहम हैं:-

1-अब्दुल रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन उमर बिन अली बिन अबी तालिब जिन्होंने यमन के इलाक़े में इंक़ेलाब बरपा किया। यह इंक़ेलाब वहां के बदकिरदार हाकिमों के ख़िलाफ़ था और उसका नारा था 'आले मुहम्मद की मर्ज़ी के लिए'। लोगों ने इस दावत को कुबूल किया और अब्दुल रहमान की बैअत कर ली यहां तक कि मामून एक बहुत बड़ा लश्कर भेजने पर मजबूर हो गया।

2- दूसरा इंक़ेलाब मुहम्मद बिन अलक़ासिम बिन अली बिन उमर बिन अली बिन हुसैन बिन अली बिन अबी तालिब ने तालिक़ान के इलाक़े में बरपा किया था।

इन मूवमेंट्स के लीडर्स के नारों से पता चलता है कि वह सब हुकूमत को इमामों[अ०] का हक़ समझते थे।

इसलिए इस हक़ को इमाम तक पहुंचाने के लिए नीचे पेश की जा रही रिवायतों से हमें अंदाज़ा होगा कि इमाम[अ०] किस तरह और किन हालात में दीन को फैलाने की कोशिशें कर रहे थे।

इमाम[अ०] ने अपने हाथ से यह ख़त अपने बेहतरीन सहाबी अली बिन मेहज़ियार के लिए लिखा था, ''अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो रहमान व रहीम है। ऐ अली! ख़ुदा तुम्हें जज़ाए ख़ैर दे और तुम्हें अपनी जन्नत में जगह दे, तुम्हें दुनिया व आख़िरत में रुसवाई से बचाए, तुम्हें हमारे साथ महशूर करे! ऐ अली! मैंने ख़िदमत, नसीहत, इताअत, इज़्ज़त और जो काम तुम पर वाजिब थे उन के ज़रिए तुम्हें आज़माया है। बस अगर मैं यह कहूं कि मैंने तुम जैसा कोई शख़्स नहीं देखा तो मुझे उम्मीद है कि यह बात सच्ची होगी। ख़ुदा तुम्हें जन्नत में जगह दे। तुम्हारा मुक़ाम और सर्दी-गर्मी, दिन-रात में तुम्हारी ख़िदमत मुझसे छुपी नहीं हैं। मैं ख़ुदा से दुआ करता हूं जब ख़ुदा सारी मख़लूक़ को जमा करे तो तुम्हें ऐसी रहमत अता करे जिस पर तुम रश्क करो और ख़ुदा दुआ का सुनने वाला है।''

इस ख़त से पता चलता है कि इमाम[अ०] ने अली बिन मेहज़ियार को कुछ अहम कामों के करने पर सराहा और माना कि उन्होंने हर हाल में इमाम का साथ दिया है। इससे साबित होता है कि अली बिन मेहज़ियार इमाम के लिए काम करते थे और इसीलिए इमाम ने उन्हें जन्नत की बशारत दी थी।

इसी तरह कुछ दूसरी रिवायतों में आया है कि इमाम[अ०] ने अपने किसी सहाबी से फ़रमाया, ''तुम्हारी राय मेरी राय है।''

यानी कुछ ऐसे लोग थे जो कुछ मसलों में इमाम[अ०] की तरफ़ से अपनी राय बयान करते थे और हर सियासी, माली, तहरीकी मुश्किल का जवाब देते थे और यह लोग सारी इस्लामी दुनिया में फैले हुए थे।

एक और रिवायत में आया है, ''मेरा यह ख़त लेकर उसके पास जाओ और कहो कि माल मुझे भेजे।'' इस ख़त से पता चलता है कि आपके वकील हर तरफ़ आपकी टीचिंग्स को फैलाने के लिए माल जमा करते थे और इमाम[अ०] उस सारी रक़म को इस्लाम का नाम बाक़ी रखने के लिए ख़र्च करते थे।

इसीलिए एक और रिवायत में आया है, ''हिसाब मिल गया। मैंने इतने दीनार भेजे हैं।''

इसी तरह एक और हदीस है कि जब आप हज के लिए जाते थे तो हर शहर से आपके चाहने वाले आते थे और आपसे आगे के हालात के बारे में बातचीत करते थे और अपनी मुश्किलों का हल पूछते थे।

इन रिवायतों से पता चलता है कि इमाम[अ०] अपने ज़माने में अपनी पूरी ताक़त के साथ दीन को बाक़ी रखने में लगे हुए थे। बनी अब्बास को डर था कि मामून ने इमाम तक़ी[अ०] से अपनी बेटी की शादी करके इमाम[अ०] के लिए ख़िलाफ़त का रास्ता साफ़ कर दिया है। इसीलिए मामून के मरने के बाद जब मोतसिम ख़िलाफ़त पर आया तो उसने 219 हिजरी में आपको मदीने से बग़दाद बुलाया और इस डर को दूर करने के लिए 220 हिजरी में ज़हर देकर शहीद कर दिया। ●

رجب المرجب

माहे रजब की फ़ज़ीलत

रजब, शाबान और रमज़ान बड़ी अज़मतों वाले महीने हैं जिसके लिए बहुत सी रिवायतें भी बयान हुई हैं। जैसे रसूले इस्लाम[स॰] फ़रमाते हैं कि रजब का महीना ख़ुदा के नज़दीक अज़मत वाला महीना है। इस महीने में जंग करना हराम है। साथ ही यह भी रिवायत में मिलता है कि रजब ख़ुदा का महीना है और शाबान मेरा महीना है। यह भी हदीस में मिलता है कि रजब में एक रोज़ा रखने वाले को ख़ुदा की ख़ुशनूदी हासिल होती है, ख़ुदा का ग़ज़ब उससे दूर हो जाता है और जहन्नम के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा उस पर बंद हो जाता है। इमाम मूसा काज़िम[अलै॰] फ़रमाते हैं कि रजब के महीने में एक रोज़ा रखने से जहन्नम की आग एक साल की दूरी तक दूर हो जाती है और जो शख़्स इस महीने में तीन रोज़े रखे तो उसके लिए जन्नत वाजिब हो जाती है। इमाम फ़रमाते हैं कि रजब जन्नत में एक नहर है जिसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा है। जो शख़्स इस महीने में एक दिन का रोज़ा रखेगा वह उस नहर से सेराब होगा।

इमाम जाफ़र सादिक़[अ॰] से रिवायत है कि रसूले अकरम[स॰] ने फ़रमाया कि रजब मेरी उम्मत के लिए इस्तग़फ़ार का महीना है। इसलिए इस महीने में अपने लिए ज़्यादा से ज़्यादा मग़फ़िरत चाहो क्योंकि ख़ुदा बहुत बख़्शने वाला और मेहरबान है।

रसूले इस्लाम फ़रमाते हैं कि रजब को 'असब' भी कहा जाता है क्योंकि इस महीने में मेरी उम्मत पर ख़ुदा की रहमत बहुत ज़्यादा बरसती है। इसलिए इस महीने में बहुत ज़्यादा **'अस्तग़फ़िरुल्लाह व अस-अलुत्तौबा'** कहा करो यानी 'मैं ख़ुदा से बख़्शिश चाहता हूं और तौबा की तौफ़ीक़ मांगता हूं।'

शेख़ सुदूक़ ने सालिम से रिवायत बयान की है कि उन्होंने कहा कि मैं रजब के आख़िर में इमाम जाफ़र सादिक़[अ॰] की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो हज़रत ने मेरी तरफ़ देखते हुए फ़रमाया कि इस महीने में तुमने रोज़ा रखा है? मैंने कहा कि नहीं! आपने फ़रमाया कि तुमने इतना सवाब खो दिया है कि जिसकी मिक़दार ख़ुदा के सिवाए कोई नहीं जानता क्योंकि यह वह महीना है जिसकी फ़ज़ीलत सारे महीनों से ज़्यादा है। मैंने कहा कि अगर मैं इसके बाक़ी बचे हुए दिनों में रोज़ा रखूं तो क्या मुझे वह सवाब मिल जाएगा? आपने फ़रमाया कि ऐ सालिम! ध्यान रहे कि जो शख़्स रजब के आख़िर में एक रोज़ा रखेगा ख़ुदा उसको मौत की सख़्तियों, मौत के बाद की हौलनाकी और क़ब्र के अज़ाब से महफ़ूज़ रखेगा। जो शख़्स महीने के आख़िर में दो रोज़े रखेगा वह पुले सिरात से आसानी से गुज़र जाएगा और जो तीन रोज़े रखेगा उसे क़यामत की सख़्तियों से महफ़ूज़ रखा जाएगा और उसको जहन्नम की आग से आज़ादी का परवाना अता होगा।

रजब के आमाल

यह रजब के आमाल में पहली क़िस्म के आमाल हैं जो किसी ख़ास दिन के नहीं हैं बल्कि इन्हें रोज़ाना अदा किया जा सकता है:-

1- रजब के पूरे महीने में यह दुआ पढ़ना चाहिए। रिवायत है कि यह दुआ इमाम ज़ैनुल आबिदीन[अ॰] ने रजब में पढ़ी थी:

या मंय यम-लिकु हवा-इजस्सा-ई-ली-न व या-ल-मु-ज़मी-रस्सा-मिती-न लि-कुल्लि मस-अ-ल-तिम मिन्का समउन हाज़िरून व जवाबुन अतीद। अल्लाहुम्मा व मवा-ई-दु-कस्सादि-तु व अयादीकल फ़ाज़िल-तु व रहमतुकल वासि-अतु। फ़-असल-अलु-क अन तुसल्लि-य अला मुहम्मद व आलि मुहम्मद। व अन तक़्-ज़ि-या हवा-ई-जी लिद्-दुनिया वल आख़िरा। इन्नका अला कुल्लि शैईन क़दीर।

तर्जुमा: *"ऐ वह जो सवालियों की हाजतों का ज़िम्मेदार है और ख़ामोश लोगों के दिलों की बातें जानता है। हर वह सवाल जो तुझसे किया जाए तेरा कान उसे सुनता है और उसका जवाब देता है। ख़ुदाया! तेरे सब वादे सच्चे हैं। तेरी नेमतें बहुत ज़्यादा हैं और तेरी रहमत बड़ी फैली हुई है। मेरा सवाल यह है कि मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मेरी दुनिया व आख़िरत की हाजतों को पूरा फ़रमा दे कि तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।"*

2- यह दुआ पढ़े कि जिसे इमाम जाफ़र सादिक़[अ॰] रजब में हर रोज़ पढ़ा करते थे:

ख़ाबल वाफ़ि-दू-न अला ग़ैरि-क व ख़सि-रल मु-त-अर्रि-ज़ू-न इल्ला ल-क व ज़ाअल मुलिम्मू-न इल्ला बि-क व अज-द-बल मुन-तजि-ऊ-न इल्ला मनिन त-ज-अ फ़ज़-ल-क बाबु-क मफ़तूहुल लिर राग़िबी-न व ख़ैरू-क मबज़ूलुल लित्ता लिबी-न व फ़ज़-लु-क मुबाहुल लिस्सा-ई-ली-न व नैलु-क मुताहुल लिल आमिली-न व रिज़्-क़ु-क मबसूतुल लिमन असा-क व हिल-मु-क मु-त-रिज़ुल लिमन नावा-क। आ-द-तु-कल एहसानु इलल मुसीय्यीन। व सबीलु-कल इबक़ा-ऊ अलल मु-तदीन। अल्लाहुम्मा फ़ह-दिनी हुदल

मुह-तदीन। वरजुक़नी इजतिहादल मुजतहिदीन। व ला तज-अलनी मिनल ग़ाफ़ि-लीनल मुब-अदीन। वग़फ़िर ली यौमद्-दीन।

तर्जुमाः *"ऐ ख़ुदा! तेरे ग़ैर के दरवाज़े पर आने वाले घाटे में हैं और तेरे अलावा किसी से मांगने वाले नुक़्सान में हैं। जो किसी और के दरवाज़े में घुस जाए वह बर्बाद है और जो किसी और के फ़ज़्ल की उम्मीद करे वह क़हत का शिकार हो जाएगा। तेरा दरवाज़ा राग़िबों के लिए खुला हुआ है और तेरा ख़ैर मांगने वालों के लिए बराबर अता हो रहा है। तेरा फ़ज़्ल सवाल करने वालों के लिए आम है और तेरी अता उम्मीदवारों के लिए हमेशा तैयार है। तेरा रिज़्क़ गुनाहगारों के लिए फैला हुआ है, तेरी बुर्दबारी दूर हो जाने वालों के लिए भी तैयार है, तेरी यह आदत है कि तू गुनाहगारों के साथ भी एहसान करता है और ज़ालिमों को भी छूट देता है। ऐ ख़ुदा! मुझे हिदायत याफ़्ता लोगों जैसी हिदायत दे और कोशिश करने वालों जैसी कोशिश की हिम्मत अता फ़रमा! मुझे उन ग़ाफ़िलों में से क़रार न देना जो तेरी बारगाह से दूर हो गए हैं और क़यामत में मुझे बख़्श देना!"*

3- इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं कि रजब में यह दुआ पढ़ा करोः अल्लाहुम्मा इन्नी अस-अ-लु-क सब-रश्शा-किरी-न ल-क व अ-म-लल ख़ाईफ़ी-न मिन-क व यक़ीनल आबिदी-न ल-क। अल्लाहुम्मा अन-तल अलिय्युल अज़ीम। व अना अबदु-कल बाईसुल फ़क़ीर। अनतल ग़निय्युल हमीद। व अनल अबदुज़्ज़लील। अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मद व आलि-हि वम-नुन बि-ग़िना-क अला फ़क़री व बि-हिल-मि-क अला जहली। व बि-क़ुव्व-ति-क अला ज़ाफ़ी। या क़विय्यु या अज़ीज़। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मद व आ-लिहिल औसि-या-ईल मर-ज़ीय्यीन। वक-फ़िनी मा अहम्मनी मिन अम-रिद्-दुनिया वल आख़िरा। या अर-ह-मर रा-हिमीन।

तर्जुमाः *"ऐ माबूद! मैं तुझसे सवाल करता हूं कि मुझे शुक्रगुज़ारों का सब्र, डरने वालों का अमल और इबादतगुज़ारों का यक़ीन अता फ़रमा। ऐ माबूद! तू बुलंद और बुज़ुर्ग है और मैं तेरा फ़क़ीर और मोहताज बंदा हूं। तू बेहाजत और तारीफ़ वाला है और मैं तेरा पस्त और हक़ीर बंदा हूं। ऐ माबूद! रहमत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद और उनकी आल पर और मेरी मोहताजी पर अपने ग़नी होने से, मेरी नादानी पर अपने हिल्म से और अपनी क़ुव्वत से मेरी कमज़ोरी पर एहसान फ़रमा! ऐ क़ुव्वत वाले, ऐ इज़्ज़त वाले, ऐ माबूद! रहमत फ़रमा मुहम्मद और उनकी आल पर जो तेरे पसंदीदा और वसी व जानशीन हैं और दुनिया व आख़िरत के अहम मामलों में मेरे लिए काफ़ी हो जा! ऐ सबसे ज़्यादा रहम करने वाले!"*

किताबे इक़्बाल में सैय्यद बिन ताऊस ने भी इस दुआ को लिखा है इससे ज़ाहिर होता है कि यह बहुत अच्छी दुआ है जिसे हर वक़्त पढ़ा जा सकता है।

4- मुहम्मद बिन ज़कवान कहते हैं कि मैंने इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मैं आप पर क़ुर्बान हो जाऊं! यह रजब का महीना है, मुझे कोई दुआ बताईए कि ख़ुदा उसके ज़रिए मुझ पर रहमत नाज़िल फ़रमाए। आपने फ़रमाया कि लिखो और रजब के महीने में हर रोज़ यह दुआ पढ़ा करोः बिसमिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम। या मन अर-जू-हो लि कुल्लि ख़ैरिन व आ-म-न स-ख़-त-हू इन-दा कुल्लि शर्रिन। या मंय्यो तिल कसी-र बिल क़लील। या मंय्यो-ति मन स-अ-ल-हु।यामंय्यो-ति मन-लम यस-अल-हु व मन-लम यारिफ़-हु तहन्नु-नम मिन-हु व रहमतन। आ-तिनी बि-मस-अ-ल-ति इय्या-क जमी-आ ख़ैरिद्-दुनिया व जीम-आ ख़ैरिल आख़िरा। वसरिफ़ अन्नि बि मस-अ-लती इय्या-क जमी-आ शर्रिद्-दुनिया व शर्रिल-आख़िरा। फ़-इन्न-हु ग़ै-रू मनक़ूसिम मा आतै-त व ज़िदनी मिन फ़ज़्लि-क या करीम।

'ख़ुदा के नाम से शुरू करता हूं जो रहमान और रहीम है। ऐ वह जिससे हर भलाई की उम्मीद रखता हूं और हर बुराई के वक़्त उसके ग़ज़ब से अमान चाहता हूं। ऐ वह जो थोड़े अमल पर ज़्यादा सवाब देता है, ऐ वह जो हर सवाल करने वाले को देता है, ऐ वह जो उसे भी देता है जो सवाल नहीं करता और उसे भी देता है जो तुझे नहीं पहचानता, अपनी रहमत व महरबानी की वजह से तू मुझे भी मेरे सवाल पर दुनिया व आख़िरत की सारी भलाईयां और नेकियां अता फ़रमा दे और दुनिया व आख़िरत की सारी बुराईयों को मुझ से मोड़ दे कि तू जिसको अता करेग उसमें कमी नहीं होगी और फिर अपने फ़ज़्ल से और इज़ाफ़ा कर दे, ऐ करीम ख़ुदा!"

रावी कहता है कि इसके बाद इमाम[अ०] ने अपनी दाढ़ी को दाहिनी मुट्ठी में ले लिया और अपनी शहादत वाली उंगली को हिलाते हुए बड़े गिरया व ज़ारी की हालत में यह दुआ पढ़ीः

या ज़ल जला-लि वल इकराम। या ज़न ना-माई वल जूद। या ज़ल मन्नि वत्तौल। हर्रिम शै-ब-ति अलन नार।

तर्जुमाः *"ऐ साहिबे जलालत व बुज़ुर्गी! ऐ नेमतों और करम के मालिक! ऐ एहसान व अता करने वाले! मेरे इन बालों को आग पर हराम फ़रमा दे!"*

पन्द्रह रजब का दिन

यह बड़ा ही मुबारक दिन है और इसके कुछ ख़ास आमाल हैं जो यह हैं:

1- ग़ुस्ल, 2- इमाम हुसैन[अ०] की ज़ियारत, 3- नमाज़े सलमान, 4- अमले उम्मे दाऊद और यही इस दिन का खास अमल है जो हाजतों के पूरा होने, मुसीबतों के दूर होने और ज़ालिमों के ज़ुल्म से बचाव के लिए बहुत असरदार है। यह अमल इस तरह से हैः अमले उम्मे दाऊद करने के लिए 13, 14, 15 रजब को रोज़ा रखे और 15 रजब को ज़वाल के वक़्त ग़ुस्ल करे। ज़वाल के फ़ौरन बाद नमाज़े ज़ोहर व अस्र इस तरह बजा लाए कि रुकू व सजदों में ख़ौफ़ और आजिज़ी का इज़हार करे और ऐसी जगह पर हो जहां कोई उससे बात न करे। जब नमाज़ ख़त्म हो जाए तो क़िब्ला रूख़ होकर इस तरह अमल करे :-

सौ बार सूरए अलहम्द, सौ बार सूरए तौहीद और दस बार आयतल कुर्सी। इसके बाद यह सूरे पढ़े- सूरए अनआम, सूरए बनी इसराईल, सूरए कहफ़, सूरए लुक़मान, सूरए यासीन, सूरए साफ़्फ़ात, सूरए हा-मीम सजदा, सूरए हा-मीम-ऐन-सीन-क़ाफ़, सूरए दुख़ान, सूरए फ़त्ह, सूरए वाक़ेआ, सूरए मुल्क, सूरए नून, सूरए इन्शेक़ाक़ और उसके बाद क़ुरआन की आख़िरी सूरत तक लगातार पढ़े और फिर क़िब्ला रुख़ हो कर अपनी दुआएं मांगे।

अपनी पसंदीदा चीज़ राहे ख़ुदा में दो

■ नरजिस ख़ातून रिज़वी
जामेअतुज़्ज़ेहरा
लखनऊ

क़ुरआने मजीद में है, *"तुम नेकी की मंज़िल तक नहीं पहुँच सकते जब तक कि तुम अपनी पसंदीदा चीज़ों को राहे ख़ुदा में इन्फ़ाक़ न करो।"*

इन्फ़ाक़ अरबी लफ़्ज़ है जिसका मतलब है ख़ुदा की ख़ुशी के लिए अपना माल ख़र्च करना। हमारे समाज में लोग इन्फ़ाक़ तो करते हैं लेकिन उन चीज़ों को नहीं जो उनकी पसंदीदा हों बल्कि जो चीज़ें फ़ालतू और उन्हें पसंद नहीं होती हैं उन्हें ही इन्फ़ाक़ करते हैं और इसके साथ ही साथ एहसान जताकर और परेशान करके उस इन्फ़ाक़ को भी बातिल कर देते हैं। जबकि ऐसा इन्फ़ाक़ न तो इन्फ़ाक़ करने वाले की इन्सानी रूह की परवरिश करता है और न ही ज़रूरतमंदों को इससे कोई फ़ाएदा पहुँता है और न ही इन्सान की रूहानियत में इज़ाफ़ा होता है बल्कि इस तरह के इन्फ़ाक़ को तौहीन और बेइज़्ज़ती की एक क़िस्म में गिना गया है।

ख़ुदावंदे आलम क़ुरआन मजीद में फ़रमा रहा है, "ख़बरदार! इन्फ़ाक़ के इरादे से ख़राब माल को हाथ भी न लगाना कि अगर यह माल तुमको दिया जाए तो आँख बंद किए बिना छुओगे भी नहीं।"

आजकल हमारे समाज में छोटी सोच के कुछ लोग जो कि माले दुनिया से दिल लगी रखते हैं वह ज़रूरतमंदों की मदद करने से बचते हैं और ज़रूरतमंदों को इन्फ़ाक़ करने को एक तरह से माल को फ़ालतू ख़र्च करना समझते हैं जबकि उसी माल के ज़रिए वह अपनी फ़ालतू ज़रूरतों और ख़्वाहिशों को भी पूरा करते हैं।

हमारे समाज में कुछ लोग खाने और लिबास से महरूम हैं लेकिन कुछ लोगों को कि जिनको ख़ुदा ने माल और दौलत दी है वह अपने माल को अपने ज़रूरतमंद भाईयों पर ख़र्च करना पसंद नहीं करते हैं। उनके पास सारी चीज़ें होती हैं यहाँ तक कि उनके जानवरों के इलाज के लिए हॉस्पिटल और तरह-तरह की ग़िज़ाएं भी होती हैं और दूसरी तरफ़ बेचारे ज़रूरतमंद लोग ज़िंदगी की ज़रूरी चीज़ों को छू भी नहीं पाते और अगर कुछ लोग इन्फ़ाक़ करते भी हैं तो इसके लिए जो शर्तें बताई गई हैं उन पर अमल ही नहीं करते।

1- ख़ुदावंदे आलम सूरए बक़रा में कह रहा है कि ख़राब माल के ज़रिए इन्फ़ाक़ न करो बल्कि पसंदीदा माल के ज़रिए इन्फ़ाक़ करो। जबकि हम देखते हैं कि अकसर लोग नापसंदीदा चीज़ों को ही इन्फ़ाक़ करते हैं।

2- ख़ुदावंदे आलम सूरए हश्र में कह रहा है कि उस चीज़ को इन्फ़ाक़ करो जिसकी तुम्हें ख़ुद बहुत ज़रूरत हो जबकि आमतौर से जो चीज़ें ज़रूरत से फ़ालतू होती हैं लोग उन्हीं को इन्फ़ाक़ करते हैं।

3- ख़ुदावंदे आलम सूरए बक़रा में फ़रमा रहा है कि छुप कर इन्फ़ाक़ करो जबकि अगर इन्फ़ाक़ किया जाता है तो सब पर ज़ाहिर करके।

4- ख़ुदा सूरए बक़रा में फ़रमा रहा है कि ऐसे लोगों को दो जिन्हें सख़्त ज़रूरत है, जबकि हम देखते हैं कि लोग नाम और शोहरत के लिए अपने बराबर ही के लोगों को कुछ देना पसंद करते हैं और असल ज़रूरतमंद को कुछ देना पसंद ही नहीं करते।

5- सूरए बक़रा में है कि ऐहसान जताने और तकलीफ़ पहुँचाने के ज़रिए इन्फ़ाक़ को बातिल न करो जबकि हम देखते हैं कि इन्फ़ाक़ करने वाला ज़रूरतमंद की ज़िंदगी में उसे सुना-सुना कर अधमरा कर देता है।

6- सूरए बक़रा में है कि ख़ुदा की मर्ज़ी हासिल करने के लिए इन्फ़ाक़ करो जबकि हम देखते हैं कि हमारे समाज का इन्फ़ाक़ दूसरों को दिखाने के लिए होता है।

7- सूरए मुदस्सिर में है कि जो कुछ इन्फ़ाक़ करो उसको छोटा समझो जबकि हम देखते हैं कि जब हम छोटी सी चीज़ को भी इन्फ़ाक़ करते हैं तो उसको बहुत बड़ा समझते हैं।

8- अपने आपको कभी हक़ीक़ी मालिक मत समझो बल्कि अपने आपको ख़ुदा और मख़लूक़ के बीच वास्ता समझो जबकि अगर हम इन्फ़ाक़ करते हैं तो सोचते हैं कि हमारा इतना माल कम हो गया है जैसे हम ही इसके हक़ीक़ी मालिक हों।

9- सूरए माएदा में है कि हलाल माल को इन्फ़ाक़ करो जबकि कुछ लोग तो इन्फ़ाक़ के लिए हराम माल को भी इन्फ़ाक़ करने में नहीं झिझकते।

ऊपर बयान की गई बातों से हमें इन्फ़ाक़ के आदाब अच्छी तरह समझ में आ गए हैं इसलिए अगर हम इन चीज़ों का ध्यान रखते हुए इन्फ़ाक़ करेंगे तो ख़ुदा हमारे इन्फ़ाक़ को ज़रूर क़ुबूल करेगा और हमें इसकी जज़ा भी देगा। ●

نهج البلاغة

इमाम अली स० की हुकूमत

■ मोहम्मद बाक़िर अंसारी

इसमें कोई शक नहीं कि इस्लामिक हिस्ट्री शुरू ही से बहुत नाज़ुक हालात और वाक़ेआत से भरी रही है और रसूले अकरम[स०] की वफ़ात के बाद इन हालात की सेंसिटिविटी काफ़ी बढ़ी हुई दिखाई देती है और मुसलमान बड़े ख़तरनाक सियासी हालात में घिरे हुए नज़र आते हैं। यहाँ तक कि एक छोटी सी मुद्दत के बाद, मुसलमान हज़रत अली[अ०] के दरवाज़े पर खड़े हुए दिखाई देते हैं और हज़रत अली[अ०] भी इस्लाम को बिखरने से बचाने के लिए हुकूमत की ज़िम्मेदारी क़ुबूल करते हुए इस्लामी हुकूमत की बुनियाद रखते हैं। नीचे नहजुल बलाग़ा की रोशनी में इस इस्लामी हुकूमत की एक झलक पेश है।

क़ुरआन और हदीस पर बेस्ड हुकूमत

हज़रत अली[अ०] ने दुनिया और उसकी रौनक़ों की तरफ़ ज़रा सा भी ध्यान नहीं दिया। आपने ख़ुदा के सिवा और किसी भी चीज़ के बारे में ज़रा सा भी नहीं सोचा और आप हमेशा इस्लाम के एहकाम की पाबंदी करते रहे। इस बारे में इमाम फ़रमाते हैं, ''मेरी नज़र में तुम्हारी दुनिया की रौनक़ बकरी की एक छींक से ज़्यादा नहीं है।'' (1)

अगर हम नहजुल बलाग़ा के ख़ुतबों को पढ़ें तो हमको पता चलेगा कि हज़रत अली[अ०] ने क़ुरआन के एहकाम और अहादीस की बुनियाद पर हुकूमत चलाने के तौर तरीक़े की बहुत सी मिसालें पेश की हैं। आप ने मुसलमानों को मुतवज्जेह किया है कि वह इन दोनों सीधे और सच्चे रास्तों से ज़रा भी अलग न हटें। यहाँ नहजुल बलाग़ा की कुछ मिसालें पेश की जा रही हैं:-

1- याद रखो! अल्लाह ने तुम्हें किताब दी है तुम्हारी रहनुमाई के लिए, इस किताब में 'हक़ व बातिल की, नेकी व बदी की और सच व झूठ की साफ़-साफ़ वज़ाहत कर दी गई है। तुम्हें सच्चाई और हक़ का रास्ता चुनना चाहिए ताकि तुम सीधे रास्ते पर क़ायम रहो। तुम्हें बुराई के रास्ते से दूर हो जाना चाहिए ताकि तुम निजात और बख़्शिश पा सको। (2)

यह गाईड लाईन नहजुल बलाग़ा के ख़ुतबा/172 के शुरू के हिस्से में मौजूद है जो हज़रत अली[अ०] ने अपनी ख़िलाफ़त शुरू करते हुए एक मजमे में दिया था।

2- ख़ुदा की क़सम! मुझे ख़िलाफ़त की कोई ख़्वाहिश या आरज़ू नहीं थी। तुम सब ने मुझे इस ओहदे को क़ुबूल करने की दावत दी तो मैंने इसको क़ुबूल कर लिया और जब मैंने यह ओहदा क़ुबूल कर लिया और तुम्हारा ख़लीफ़ा बन गया तो फिर मैंने क़ुरआने मजीद और अहादीस के मुताबिक़ इस ओहदे के फ़राएज़ और ज़िम्मेदारियों को अंजाम देना शुरू कर दिया। (3)

3- जब लोगों ने मुझे क़ुरआन के फ़ैसले की तरफ़ बुलाया तो मैं अल्लाह की उस किताब की तरफ़ से मुँह नहीं फेर सकता था। अल्लाह ने फ़रमाया है, ''अगर आपस में किसी बात पर इख़्तेलाफ़ हो जाए उसे अल्लाह और रसूल[स०] की तरफ़ पलटा दो।'' (4)

अल्लाह की तरफ़ पलटाने का मतलब यह है कि हमें क़ुरआने मजीद को देखना और पढ़ना चाहिए और उसमें दिए गए अहकाम के मुताबिक़ अमल करना चाहिए। रसूल अल्लाह[स०] की तरफ़ पलटाने का मतलब यह है कि पैग़म्बर[स०] की पैरवी करें और उनकी सुन्नत के मुताबिक़ अमल करें।

''अगर हम क़ुरआने मजीद के अहकाम की सच्चाई के साथ पैरवी करते हैं और अपने दिल व दिमाग़ में कोई शक नहीं रखते हैं तो हर शख़्स देखेगा कि हमें इस अमल का कितना फ़ायदा होता है। इसी तरह अगर हम सुन्नते रसूल[स०] पर अमल करते हैं तो हर शख़्स को मालूम हो जाएगा कि हमें अपने इस अमल का कितना फ़ायदा होता है।'' (5)

4- ख़ुदा की क़सम! मैं जो कहता हूं वह क़ुरआने मजीद और अल्लाह के वादों के मुताबिक़ होता है। क़ुरआने मजीद में है कि जो लोग अल्लाह को अपना मालिक मानते हैं और पक्का ईमान रखते हैं उन्हें फ़रिश्ते यह आवाज़ देंगे कि तुम न ख़ौफ़ज़दा हो न ग़मगीन हो, जन्नत के इस फ़रहत आफ़रीं मक़ाम पर आओ जिसका तुमसे वादा किया गया था। अगर तुम अल्लाह को अपना हाकिम मानते हो तो फिर तुम्हारा यह फ़र्ज़ है कि उसने अपनी किताब क़ुरआने मजीद में जो कुछ एहकाम दिए हैं उन पर अमल किया जाए, दीन की टीचिंग्स की पैरवी की जाए और इस्लाम ने इबादत के जो तरीक़े बताए हैं, उन तरीक़ों से अल्लाह की इबादत व बंदगी की जाए। तुम अल्लाह के हलक़े से बाहर निकलने की कोशिश न करो क्योंकि क़यामत के दिन अल्लाह से मुँह फेरने वालों को अल्लाह की रहमत और उसके करम में से कोई हिस्सा नहीं मिलेगा। (6)

मरयम
JUNE 2012
Monthly Coupon
ड्रॉ में शामिल होने के लिए
10 कूपन जमा करके हमें भेजिए।

नहजुल बलाग़ा के ख़ूबसूरत जुमलों में से यह सिर्फ़ कुछ ही मिसालें थीं जो इस्लामी हुकूमत, हज़रत अली[अ॰] के ख़यालात और सोच को साफ़ तौर पर ज़ाहिर करती हैं।

इन नज़रियों पर बेस्ड इस्लामी हुकूमत के जो उसूल हज़रत अली[अ॰] ने बनाए हैं, उनकी ख़ास मिसाल हैं मालिक और उस्मान बिन हनीफ़ के नाम लिखे जाने वाले लैटर्स। इस्लामी हुकूमत के बारे में हज़रत अली[अ॰] का जो नक़्शा या मन्सूबा था वह नीचे पेश किया जा रहा है।

इस्लामी हुकूमत की प्लानिंग

इस्लामी हुकूमत की प्लानिंग चार बुनियादी मक़सदों पर बेस्ड है।

1- बैतुलमाल (ख़ज़ाने) के लिए टैक्स को जमा करना, जो कि इस्लामी हुकूमत के बजट का सबसे अहम ज़रिया है।

2- इस्लामी हुकूमत के दुश्मनों से और मुख़ालेफ़त करने वालों से जंग।

3- समाज को ऊपर उठाने के लिए कोशिश।

4- शहर व गाँव की तरक़्क़ी।

हज़रत अली[अ॰] की इस्लामी हुकूमत के यह बुनियादी उसूल हैं। मालिके अश्तर के नाम लिखे जाने वाले ख़त से हम यहाँ उन बुनियादी उसूलों पर रोशनी डालने की कोशिश करेंगे। नहजुल बलाग़ा में यूँ तो इस सिलसिले में दूसरे ख़त और ख़ुतबे भी मौजूद हैं लेकिन हमने इसी एक ख़त को अपनी बातचीत के लिए चुना है।

बैतुलमाल और शहर व गाँव की तरक़्क़ी के लिए हज़रत अली[अ॰] के उसूल को यहाँ पेश किया जा रहा है:-

1- टैक्स ही हुकूमत की आमदनी का ख़ास ज़रिया होते हैं जिनके बिना कोई भी हुकूमत नहीं चल सकती। इसलिए टैक्स की वसूली के लिए अपनाए गए रास्तों की पूरी-पूरी निगरानी की जानी चाहिए।

2- अवाम से टैक्स की वसूली, हिसाब-किताब, पैसे के लेन-देन के अलग-अलग स्टेप्स व अलग-अलग ब्रांचेस में सिर्फ़ उन ही लोगों को रखा जाना चाहिए जो ईमानदार हों और जिन पर भरोसा किया जा सके।

3- टैक्स लगाने के साथ ही साथ हुकूमत की यह कोशिश भी होनी चाहिए कि अवाम के लिए काम और रोज़गार के मौक़े भी पैदा किए जाएं। खेती, तकनीक ओर मवेशियों की नस्ल को बढ़ाया जाना, ऐसे शोबे हैं जिनको और तरक़्क़ी देनी चाहिए ताकि अवाम की आमदनी में इज़ाफ़ा होता रहे, अवाम की आमदनी बढ़ेगी तो टैक्स से होने वाली आमदनी में भी क़ुदरती तौर पर इज़ाफ़ा होगा।

टैक्स की आमदनी में इज़ाफ़ा होने पर हुकूमत शहरी व देही इलाक़ों को और तरक़्क़ी देने का काम कर सकेगी और लोगों को और शहरी सहूलतें दी जा सकेंगी।

हज़रत अली[अ॰] इस बात पर भी ज़ोर देते हैं कि इस्लामी हुकूमत के अफ़सरों और हाकिमों को चाहिए कि वह इस बारे में अवाम की हौसला अफ़ज़ाई करते रहें कि वह अपने मुल्क के नेचरल रिसोर्सेज़ को तरक़्क़ी दें जैसे पानी के तालाब, जंगलात मादनयात और खेती के क़ाबिल ज़मीन वग़ैरा को ताकि पैदावार बढ़े जिस के नतीजे में लोगों की आमदनी भी बढ़ती रहे। आप ने अपनी हुकूमत के अफ़सरों और हाकिमों से सख़्त अलफ़ाज़ में कहा था कि वह लोगों को आमदनी के रिसोर्सेज़ को अपनी जागीर या मिलकियत न समझ बैठें।

1-नहजुल बलाग़ा/ख़ुतबा-7, 2-नहजुल बलाग़ा/172, 3-नहजुल बलाग़ा/210, 4-4/59, 5-नहजुल बलाग़ा/128, 6-नहजुल बलाग़ा/ख़ुतबा-181

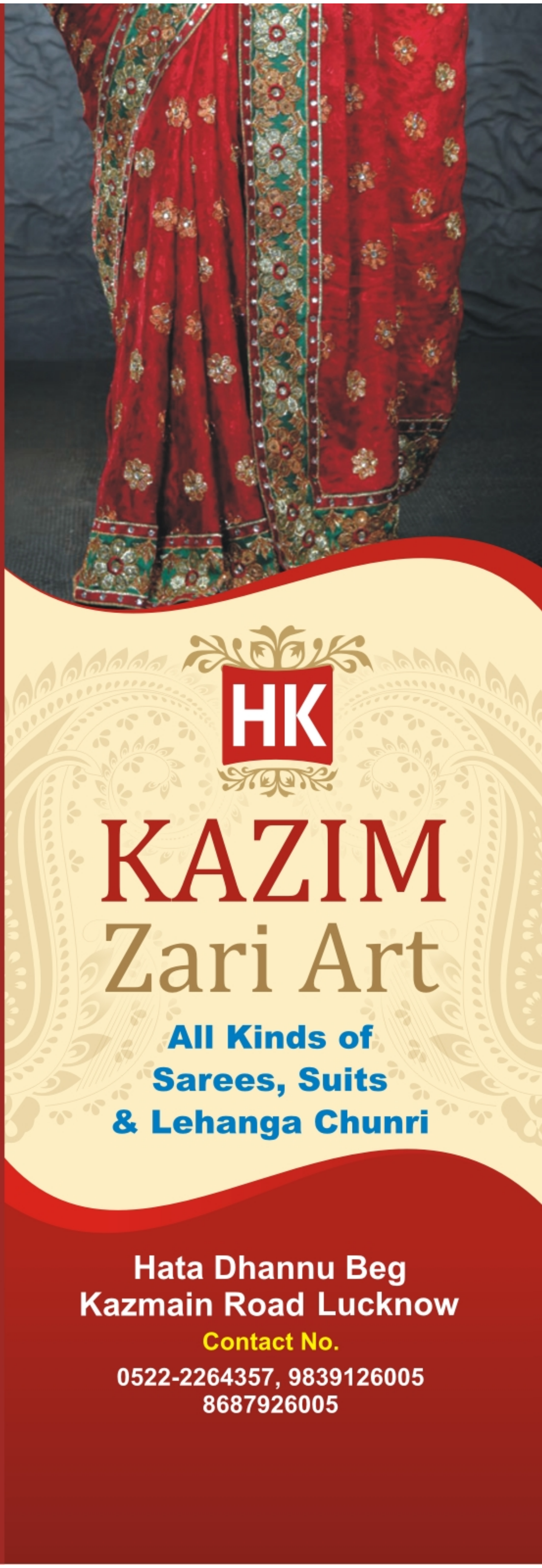

कुरआन में एजुकेशन सिस्टम

■ उज़्मा हुसैनी

पिछले इशू में हम ने आपके सामने बच्चों की परवरिश की उस मुश्किल को रखा था जो एजुकेशन और स्कूल की वजह से पैदा होती है यानी जो एजुकेशन और परवरिश का सेंटर था वही अब मुश्किल पैदा करने लगा है।

हम ने आप से यह वादा भी किया था कि इस इशू में हम आपको एजुकेशन का वह सिस्टम बताएंगे जो कुरआन पेश कर रहा है।

कुरआन मजीद में सूरए जुमा कि जिसको हर हफ़्ते नमाज़े जुमा में या दूसरी कुछ नमाज़ों में पढ़ना मुस्तहब है, शायद ख़ुदा ने उसको हर हफ़्ते पढ़ने को इसीलिए कहा है कि उसमें ज़्यादा तर डेली यूज़ की बातें हैं, इसकी दूसरी ही आयत में रसूले ख़ुदा[स॰] की बेसत का मक़सद बयान करते हुए ख़ुदा फ़रमाता है, ''उसने मक्के वालों में एक रसूल भेजा है जो उन ही में से था ताकि उनके सामने आयतों की तिलावत करे, उनके नफ़्सों को पाकीज़ा बनाए और उन्हें किताब व हिक्मत की तालीम दे। अगरचे यह लोग बड़ी खुली हुई गुमराही में घिरे थे।''

इस आयत में ख़ुदा ने तीन अहम बातों का ज़िक्र किया है:

1- रसूले ख़ुदा[स॰] को भेजने का मक़सद

2- ऐजुकेशन का सिस्टम

3- खुली हुई गुमराही से बचने का रास्ता एजुकेशन और परवरिश

1- बेसत का मक़सद

ख़ुदा ने इस पूरी दुनिया को पैदा करके सबसे अज़ीम हस्ती जो भेजी वह ख़ुदा की निगाह में रसूले ख़ुदा[स॰] हैं, और रसूल[स॰] को भेजने का मक़सद यह है कि वह लागों के बीच सही एजुकेशन और परवरिश फैला सकें ताकि उसके ज़रिए लोग ख़ुदा की ज़ात को पहचान सकें।

2- एजुकेशन सिस्टम

इसमें ख़ुदा ने तीन बातें या तीन स्टेप्स बताए हैं:-

1- ख़ुदा की निशानियों की तिलावत

2- नफ़्स को पाकीज़ा बनाना

3- किताब और हिकमत की तालीम

यही वह सिस्टम है जो एक परफ़ेक्ट एजुकेशन और परवरिश के सिस्टम को पेश करता है जिसमें-

पहली बात यह है कि सबसे पहले ख़ुदा की आयतों की तिलावत या उसकी निशानियों को पहचानना है। यह बात क्लियर है कि तिलावत एक बड़ा सब्जेक्ट है जिसके हक़ को अदा करना इस आर्टिकल में मुमकिन नहीं है।

दूसरी बात यह है कि तालीम या एजुकेशन से पहले नफ़्स को पाकीज़ा होना चाहिए। इसको यूँ समझा जाए कि नफ़्स उस बर्तन का नाम है जिसके अंदर एजुकेशन को लिया जाता है और ख़ुदा एजुकेशन से पहले उस बर्तन की सफ़ाई की बात कर रहा है। शायद ख़ुदा यह कहना चाहता है कि जब तक तुम्हारा बर्तन साफ़ नहीं होगा उस वक़्त तक हम उसमें अपनी तालीम जैसी पाक व पाकीज़ा चीज़ नहीं डाल सकते।

आप अपने घर में एक गिलास पानी भी पीती हैं तो गिलास में पानी डालने से पहले उसको ठीक से देख लेती हैं कि वह साफ़ है कि नहीं, गंदे गिलास में पानी या दूध जैसी चीज़ नहीं डाली जाती क्योंकि सबको मालूम है कि वह भी गंदा हो जाएगा और इस्तेमाल के लाएक़ नहीं रहेगा।

इसी तरह गंदे नफ़्स में इल्म जैसी चीज़ डाल दी जाए तो वह भी इस्तेमाल के लाएक़ नहीं रहेगा। इसीलिए रसूल[स॰] फ़रमाते हैं, ''इल्म एक नूर है, ख़ुदा जिसके दिल में चाहता है उसे डाल देता है।''

'जिसके दिल में चाहता है' का यही मतलब है कि जिसका दिल पाक व पाकीज़ा होता है और ख़ुदा जिसके दिल को इस लाएक़ समझता है, उसे अता कर देता है।

तीसरी बात किताब और हिकमत की तालीम की है। जब नफ़्स पाक व पाकीज़ा हो जाए तो इस लाएक़ होता है कि उसमें तालीम यानी इल्म जैसी चीज़ डाली जाए और अब इन्सान इस लाएक़ होता है कि वह किसी चीज़ का आलिम बन सके।

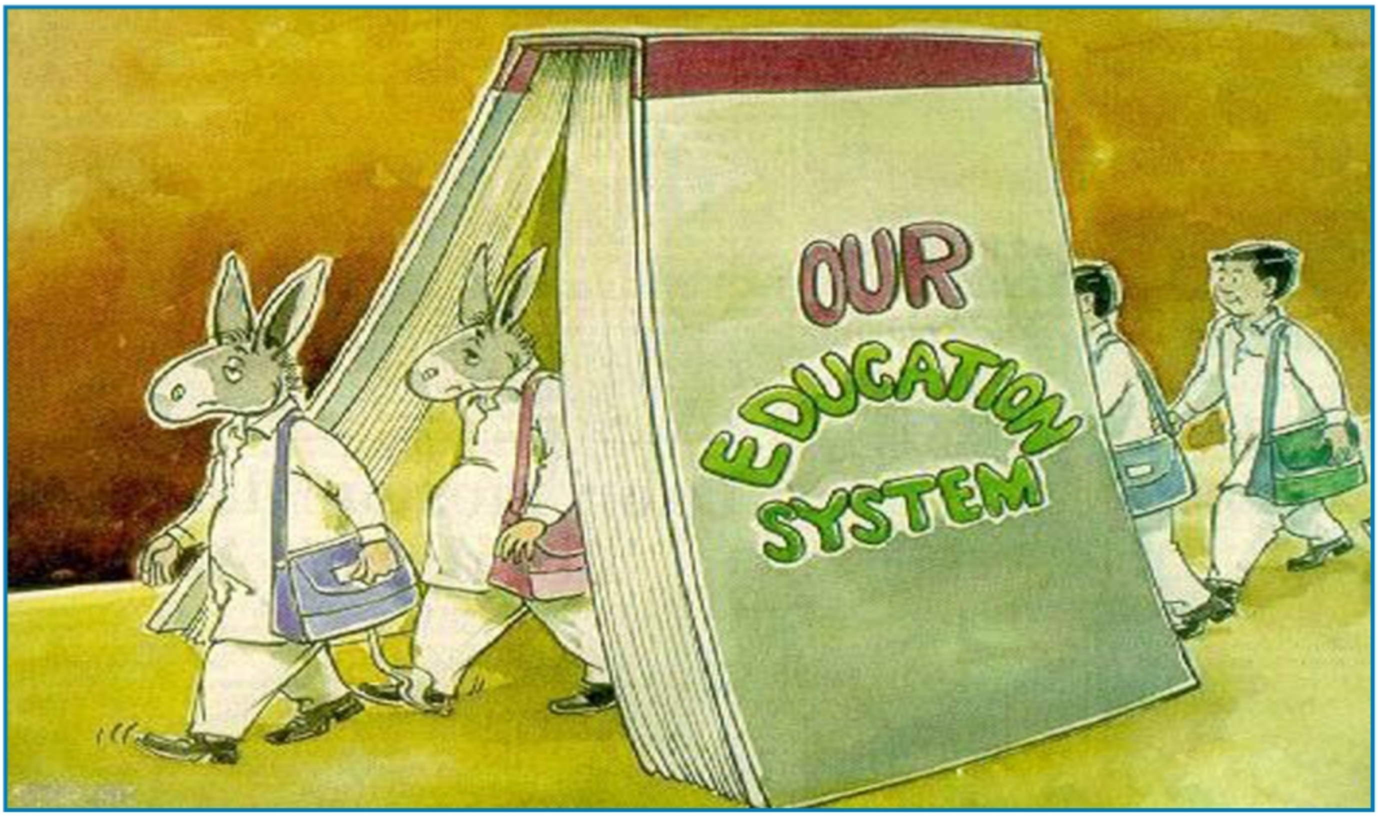

यह तीन चीज़ें नहीं बल्कि तीन स्टेप्स हैं जो खुदा के मुताबिक़ इल्म हासिल करने के लिए ज़रूरी हैं, लेकिन यह तीनों ऐसे हैं जो एक साईकिल होकर हमेशा चलते रहेंगे और किसी भी मौक़े पर इन्सान यह नहीं कह सकता कि इस एतेबार से हमारी ज़िम्मेदारी ख़त्म हो गई।

यानी पहले स्टेप से दूसरे स्टेप और दूसरे से तीसरे और इसके बाद फिर अगले स्टैंडर्ड के पहले स्टेप पर आ जाएगा। इस तरह साइकल होती रहेगी और इन्सान का स्टैंडर्ड बढ़ता रहेगा।

1- आयतों की तिलावत

2- नफ़्स की पाकीज़गी

3- किताब और हिकमत की तालीम

यह खुदा और रसूल की नज़र में एजुकेशन सिस्टम है। लोग समझते हैं कि सिर्फ़ किताबों को पढ़कर याद कर लेना और समझ लेना ही इल्म है, मगर इस्लाम यह समझता है कि जब तक इन्सान की इन्सानियत में इज़ाफ़ा न हो उस वक़्त तक इल्म, इल्म नहीं है। इल्म होता ही इसलिए है कि वह इन्सान को बदल कर उसके कैरेक्टर को ऊँचाई की तरफ़ ले जाए और यही इल्म हासिल करने का मक़सद भी है।

एजुकेशन का मक़सद

आज के समाज में अच्छे ख़ासे लोग इल्म हासिल करने का मक़सद यही समझते हैं कि इसके ज़रिए माल-दौलत कमाकर अपना और घर वालों का पेट भर सकें या समाज में जाहिल न कहे जाएं या किसी के सामने शर्मिंदा न होना पड़े कि यह तो जाहिल है या अगर पढ़ाई नहीं की तो शादी नहीं होगी...।

इनमें से कोई बात इस लाएक़ नहीं है कि इल्म के हासिल करने का मक़सद बन सके। हाँ! अगर इल्म होगा तो यह सब ज़रूर मिलेगा मगर इल्म इतनी सी चीज़ के लिए नहीं है बल्कि वह तो इन्सान और इन्सानियत की तरक़्क़ी के लिए है।

एजुकेशन और परवरिश गुमराही से बचने का रास्ता

अगर सिर्फ़ एजुकेशन हो तो इन्सान को एजुकेशन का मक़सद नहीं मालूम होता है बल्कि जब एजुकेशन के साथ-साथ तरबियत भी हो तो इन्सान को एजुकेशन का मक़सद भी मालूम होता है और गुमराही से बचने का रास्ता भी निकल आता है।

अगर सिर्फ़ एजुकेशन हो और तरबियत न हो तो इन्सान के बहकने, बिगड़ने, गुमराही फैलाने और तबाही फैलाने के चांसेज़ ज़्यादा हो जाते हैं, जैसेः

1- टी.वी. का ग़लत इस्तेमाल इन्सान को बहका सकता है लेकिन अगर तरबियत के ज़रिए अच्छे-बुरे का फ़र्क़ मालूम होगा तो इन्सान खुद पर कंट्रोल करके अपने को बहकने से बचा लेगा।

2- एजुकेशन इन्सान को डाक्टर बनाकर आप्रेशन करना सिखाती है मगर तरबियत यह बताती है कि आप्रेशन करके किडनी चोरी करना ग़लत काम है।

3- एजुकेशन इन्सान को साइंटिस्ट बनाकर हथियार बनाना सिखाती है मगर तरबियत इसका सही इस्तेमाल बताती है।

ऐसी बहुत सारी मिसालों से दुनिया भरी पड़ी है बल्कि हर फ़ील्ड में आपको ऐसी मिसालें मिल जाएंगी। आज समाज में रिश्वत, क्रप्शन, कामचोरी, धोका-धड़ी, फ़्राड और घपले जैसे बेइन्तेहा क्राइम पाए ही इसीलिए जाते हैं कि एजुकेशन बहुत आम हो गई है मगर तरबियत का कहीं पता ही नहीं। इसलिए तालीम को ग़लत मक़सद के लिए बहुत ज़्यादा इस्तेमाल किया जा रहा है।

इसीलिए क़ुरआन ने हमको गुमराही से बचने का रास्ता बताया कि एजुकेशन और परवरिश साथ हो तो वह इन्सान सिर्फ़ यही नहीं कि गुमराही से बच जाए बल्कि यह उसको उसके हक़ीक़ी मक़ाम तक पहुँचाएगी। एजुकेशन की मिसाल एक हथियार या चाक़ू की तरह है कि समझदार लोग उस से फल और सब्ज़ी काटते हैं और गुमराह लोग उस से ख़ून कर देते हैं। इसीलिए एजुकेशन पर अच्छी

हज़रत अली अ० फ़रमाते हैं

उन लोगों में से न हो जाओ...

1- उन लोगों में न हो जाना जो अमल के बिना आख़िरत की उम्मीद रखते हैं और लम्बी उम्मीदों की बिना पर तौबा को टाल देते हैं।

2- दुनिया में बातें ज़ाहिदों जैसी करते हैं और काम दुनिया परस्तों जैसा करते हैं।

3- कुछ मिल जाता है तो सेर नहीं होते और नहीं मिलता है तो क़नाअत नहीं करते।

4- जो दे दिया गया है उसका शुक्र भी अदा नहीं करते हैं लेकिन मुस्तक़बिल में ज़्यादा के तलबगार ज़रूर हैं।

5- लोगों को मना करते हैं लेकिन ख़ुद नहीं रुकते हैं। और उन चीज़ों का हुक्म देते हैं जो ख़ुद नहीं करते हैं।

6- नेक किरदारों से मोहब्बत करते हैं लेकिन उनके जैसा अमल नहीं करते और गुनाहगारों से बेज़ार रहते हैं लेकिन ख़ुद भी उन्हीं में से होते हैं।

7- गुनाहों की ज़्यादती की वजह से मौत को नापसंद करते हैं और फिर ऐसे ही आमाल पर बाक़ी भी रहते हैं जिनसे मौत नागवार हो जाती है।

8- बीमार होते हैं तो गुनाहों पर शरमिन्दा हो जाते हैं और सेहतमंद होते हैं तो फिर लहवो-लअब में डूब जाते हैं।

9- बीमारियों से निजात मिल जाती है तो अकड़ने लगते हैं और आज़माइश में पड़ जाते हैं तो मायूस हो जाते हैं।

10- कोई बला नाज़िल होती है तो मुज़तर बनकर दुआ करते हैं और सहूलत व आसानी मिल जाती है तो धोका खाए हुए की तरह मुँह फेर लेते हैं।

11- उनका नफ़्स उन्हें ख़याली बातों पर उभार देता है लेकिन वह यक़ीनी बातों में उस पर क़ाबू नहीं पा सकते हैं।

12- दूसरों के बारे में अपने से छोटे गुनाह से भी डरे रहते हैं और अपने लिए आमाल से ज़्यादा जज़ा की उम्मीद रखते हैं।

13- मालदार हो जाते हैं तो मग़रूर फ़ितनों में घिर जाते हैं और ग़ुरबत ज़दा हो जाते हैं तो मायूस और सुस्त हो जाते हैं।

तरबियत और सही फ़िक्र का पहरा ज़रूरी है।

हमारी ज़िम्मेदारी

आज के इस ज़माने में जबकि एजुकेशन देने को सब तैयार हैं मगर तरबियत नज़र नहीं आती, ऐसे में हमारे बच्चों का फ़्युचर किस तरफ़ जा रहा है इसका अंदाज़ा हम बेहतर लगा सकते हैं।

क्या इस वक़्त हमारी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है?

क्या हमें अपने बच्चों के फ़्युचर का कोई ख़याल नहीं है?

क्या हम उनके लिए कुछ कर नहीं सकते या कर नहीं रहे हैं?

या अपने बच्चों को उनके हाल पर ही छोड़ देना हमारी ज़िम्मेदारी है?

इस्लाम वह दीन है कि जिसमें एजुकेशन लेने और देने दोनों पर बहुत ज़ोर दिया गया है। एजुकेशन का इतना बेहतरीन सिस्टम मौजूद है मगर फिर भी मुसलमानों के स्कूल न के बराबर दिखते हैं। क्यों?

आज हमारी ज़िम्मेदारी है कि अगर हमारे पास इतना अच्छा सिस्टम मौजूद है तो उसको दुनिया के सामने पेश करके अपनी और अपने मुल्क वालों की तरक़्क़ी की भरपूर कोशिश करें।

यह याद रहे कि बच्चा अगर यतीम हो जाए तो उसको सहारा मिल सकता है, मगर बिना सोच और तरबियत के यतीम एजुकेशन से पूरा समाज बेसहारा हो जाता है, ऐसे में कौन किसका सहारा बन सकता है? ●

Exams के बाद...

इंजीनियर हसन रज़ा नक़वी

जब भी आप कोई फ़ार्म भरें या कोई भी अहम Document आप किसी को दें या किसी से लें तो यह ज़रूर ज़ेहन में रखें कि आपके पास उसकी एक Photocopy ज़रूर Save रहे और यह सब एक फ़ाइल की शक्ल में हो। अभी स्कूल-कालेज का ज़माना है, बाद में Practical ज़िंदगी का ज़माना आएगा। तब यह आदत बहुत काम आएगी। आज अगर फ़ीस की रसीदें हर महीने महफ़ूज़ रहें तो कल बिजली और पानी के बिल की रसीदें महफ़ूज़ रहेंगी।

अब जबकि इम्तेहान भी ख़त्म हो चुके या हो रहे हैं, Admission का ज़माना भी है या नए क्लास में जाने का ज़माना है तो आप अपनी ज़िंदगी को नए सिरे से प्लान कीजिए और जो बीत गया उसे पकड़ कर न बैठिए बल्कि उस से Lesson लीजिए और नए साल के लिए उसे एक अहम मोड़ समझिए।

अपनी Highlights और Weeknesses को समझिए। हमारे समाज में यह बहुत बड़ी ख़राबी है कि हम हमेशा दूसरों को देखते हैं और उनकी कमज़ोरियों को ढूँढने में लगे रहते हैं जबकि इसका दसवाँ हिस्सा अगर खुद अपनी कमज़ोरियों और ख़ूबियों पर ग़ौर करने में लगा दें तो ज़िंदगी संवर जाए।

आप दूसरों को देखिए ज़रूर मगर खुद को कुछ सिखाने के लिए, न कि दूसरों को ठीक करने के लिए। आपको किसी की कोई बात ख़राब लगती है तो खुद में वह ख़राबी मत आने दीजिए और अगर है तो दूर कीजिए।

नई Generation दूसरों के पीछे भागने की बहुत शौक़ीन है। अपने Talents को देखिए उसके हिसाब से चलें। एक बात अक्सर देखने में आई है कि एक बच्चा अगर Electronics इंजीनियरिंग में Admission चाहता है तो सारे बच्चे उसी Branch में जाने की कोशिश करते हैं। अभी कुछ दिन पहले की बात है कि एक बच्चा Engineering में Select हो गया। उसे किसी भी वजह से Biotechnology मिल गई थी। यह Branch लखनऊ के कुछ ही Colleges में है और हिन्दुस्तान में भी ज़्यादा जगह पर नहीं है। उसे बताया गया कि Electronics ज़्यादा अच्छी है यह ब्रांच बहुत से colleges में है और बहुत से बच्चे इसे ले भी रहे हैं मगर इस पर बड़े-बड़े Donation चल रहे हैं। कैसे-कैसे करके उसने भी मेहनत की और बिना पैसा दिए Electronics में ट्रांसफ़र हो गया। सब घर वाले बेहद खुश कि जिस पर इतना पैसा ख़र्च करना पड़ता वह मुफ़्त में मिल गई। मैंने उस बच्चे से और उसके Parents से पूछा कि जिस ब्रांच में आज तीन-चार साल बाद पूरे हिन्दुस्तान से दो हज़ार बच्चे निकलेंगे उसमें Employment आसान होगा या जिसमें कुछ सौ बच्चे निकलेंगे उसमें आसान होगा! हो सकता है किसी ब्रांच में Vacancies ज़्यादा निकलती हों लेकिन कोई भी Branch बिना ज़रूरत के तो खोली नहीं जाती। हमारे हिन्दुस्तात में हो सकता है कि वह इतनी अहम न हो या उस पर इतना काम न हो रहा हो लेकिन दूसरे Developed Countries में ज़्यादा काम हो रहा हो...तो किधर फ़ाएदा है! यह सिर्फ़ एक मिसाल है ऐसी सैकड़ों मिसालें हैं।

हिन्दुस्तान में आज Teachers को अच्छी Salaries मिल रही हैं। दूसरे कई मुल्कों में बल्कि Continents में इसे Noble Profession कहा जाता है। हमेशा से इज़्ज़त के लाएक़ भी रहा है और होना भी चाहिए क्योंकि अगर Teachers ही अच्छे न हुए तो समाज अच्छा कैसे बनेगा?आप अच्छी Salaries देंगे तो अच्छे लड़के उसको Profession बनाएंगे वरना वही होगा जो यहाँ पचास साल पहले से हो रहा है अच्छे Students को Teaching Job पसंद नहीं आती। बहरहाल बात कहाँ से कहाँ चली गई।

कहना यह है कि Talents

बहुत सारे Gene में ट्रांसफ़र होते हैं। आप अपने अंदर का Talent ढूँढिए। एक Interest होता है और एक नेचरल कमाल होता है, आप इन दोनों को एक Platform पर लाइए और फिर देखिए कि आप कहाँ से कहाँ पहुँचते हैं। इसी को सही मोड़ देने के लिए यह ढेड़-दो महीने की छुट्टियाँ होती हैं। अपने आप को तलाश कीजिए और नया साल इसी तरह प्लान कीजिए।

अगर Sports की तरफ़ रुजहान है तो उसमें भी देखिए कि कौन-कौन से खेल हिन्दुस्तान में अहम माने जाते हैं। जैसे फ़ुटबाल की हालत शुरु से ही यहाँ बिगड़ी रही है। जो खेल दुनिया में सबसे ज़्यादा Popular भी हो, खेला भी जाता हो बल्कि सबसे ज़्यादा पैसा भी देता हो वह हिन्दुस्तान में एक Regional Game बन कर रह गया है। ज़ाहिर है कि मिलावट का खाना खाकर और गुटके और तम्बाकू के साथ यह नौजवान Fitness कहाँ से लाएंगे और सबसे ज़्यादा मज़बूती और Fitness इसी खेल में चाहिए। फिर भी अगर खेल की तरफ़ ध्यान है तो Parents को चाहिए कि अच्छी कोचिंग कराएं। हर जगह पैसे से ही काम नहीं होता बल्कि कुछ जगहों पर Talent भी देखा जाता है। आप खुद Talented बनिए और अपने बच्चे को बनाइए। सुबह की ताज़ा हवा दिन भर की Exercise से ज़्यादा क़ीमती होती है। सवेरे की धूप हज़ार बीमारियों से बचाती है। सवेरे की थोड़ी सी खिलाई-पिलाई दिन भर आपको Active रखती है। हमारे बच्चे कुछ तो Cable और कुछ हिन्दुस्तान में समझदार लोगों के फ़ैसले के हाथों बिक गए हैं। सारे अच्छे प्रोग्राम नौ-दस बजे रात से शुरु होते हैं और अब तो IPL का ज़माना है, दो महीने की फ़ुरसत। सुबह कब होगी यह कौन जाने, पहले सोएं तो!

खुदा भी सारा रिज़्क़ सुबह-सुबह तय कर देता है, बंदे को भी सुबह अपना ऑफ़िस आबाद चाहिए और बच्चे तैयार किए जा रहे हैं रतजगे के लिए। बीस साल तक देर में सोने और देर में जागने की आदत पड़ने के बाद आप जमाई लेते हुए स्कूल तो चले जाएंगे मगर Practical Life में बहुत भारी पड़ेगा क्योंकि क्लास में तो सर झुका कर बैठा जा सकता है ऑफ़िस में या Field में यह महंगा पड़ेगा। सुबह उठने से इबादत की आदत भी पड़ेगी। जिस घर से सुबह-सुबह क़ुरआन की तिलावत की आवाज़ आती है वहाँ खुदा अपनी रहमतों में ख़ास ध्यान उस घर की तरफ़ देता है, वहाँ से बलाओं और दुश्मनों को दूर रखता है और साथ-साथ रिज़्क़ के दरवाज़े खोलता जाता है। आप मज़दूरों को देखिए कि कितने सुकून से जीते हैं। अगर यही मज़दूर जैसा Routine एक पढ़ा-लिखा इन्सान बना ले तो कहाँ से कहाँ पहुँचेगा। सारे तरक़्क़ी करने वाले लोग रात में कम सोते हैं और सुबह सवेरे ज़रूर उठते हैं।

छुट्टी का ज़माना है। कुछ Giants of Success के बारे में ज़रूर पढ़िए। कुछ पर किताबें लिखी गई हैं और कुछ ने खुद अपने बारे में लिखा है। हो सकता है कि उनको पढ़कर आप बहुत कुछ Changes फ़ील करें...साथ-साथ हमारे पैग़म्बरों और इमामों की सीरत भी पढ़िए कि कैसे उन लोगों ने इतनी सारी मुश्किलों के बाद भी बादशाहों और क़ौमों में अपनी हैसियत बनाई और कैसे यह लोग आज भी उसी शान से ज़िंदा हैं। कामयाब बनने की लिए कामयाब लोगों को पढ़िए भी और अपने ज़माने के कामयाब लोगों से मिलिए भी क्योंकि वह भी हमारी आप की तरह कल एक आम आदमी की तरह जिए और हमेशा-हमेशा के लिए ज़िंदगी पाकर दुनिया से चले गए... ●

बचपने में बहकने के चांसेज़

अगर बच्चे की जायज़ ज़रूरतें पूरी न हों तो बच्चे की ज़ेहनी और जिस्मानी तरक़्क़ी रुक जाती है जिस से वह दिमाग़ी उलझनों का शिकार हो जाता है।

बच्चे का घर में एहतेराम न होने की वजह से बच्चे का ज़ेहनी सुकून छिन जाता है और वह बहक जाता है।

अगर बच्चे के खाने और पहनने का मुनासिब इन्तिज़ाम न हो तो बच्चे का कान्फ़ीडेंस कमज़ोर पड़ने लगता है।

मियाँ-बीवी की अनबन की वजह से बच्चों में सख़्त ज़ेहनी उलझनें पैदा हो जाती हैं जिसकी वजह से उसे घर से ही नफ़रत होने लगती है और वह अपना वक़्त पड़ोसियों और दोस्तों के साथ गुज़ारने लगता है।

ऐसे पैरेन्ट्स जिनका पेशा ही जुर्म करना है उनके बच्चे अगर खुद से न बहकें तो भी पैरेन्ट्स के मुजरिमाना कैरेक्टर को अपनाने लगते हैं।

कुछ पैरेन्ट्स बच्चों को खिलौना समझते हैं और एक लम्बे पीरियड तक उनकी एजूकेशन और परवरिश का मुनासिब इन्तिज़ाम नहीं करते। जब बच्चे बड़े हो जाते हैं और बिगड़ने लगते हैं तो पैरेन्ट्स बिगड़े बच्चों को सज़ा और धमकियों से सुधारना चाहते हैं। बच्चे क्योंकि उस के आदी नहीं होते इसलिए वह ज़्यादा वक़्त घर से बाहर गुज़ारने लगते हैं। उनकी मुलाक़ात मौहल्ले के दूसरे भगोड़ों से होती है तो बच्चे उन से मिलकर और शरारत करने लगते हैं।

पैरेन्ट्स की बच्चों से मुहब्बत में ज़्यादती या कमी।

बच्चों पर पैरेन्ट्स की निगरानी का न होना।

पैरेन्ट्स का आफ़िस या जॉब की वजह से औलाद को कम वक़्त देना या उस पर ध्यान न देना।

पैरेन्ट्स की सुस्ती और लापरवाही।

यह वह चीज़ें हैं जिनसे बच्चों के बहकने के चांसेज़ बहुत बढ़ जाते हैं। ●

पकवान

recipe

आज कल की बिज़ी लाइफ़ में ऐसे मौक़े अक्सर आते रहते हैं कि आप को खाना पकाने की जल्दी होती है लेकिन बच्चों की ख़्वाहिश होती है कि कोई नई चीज़ बनाई जाए। इसलिए इस महीने हम आपको नूडेल्स से तैयार की हुई कुछ डिशों के बारे में बता रहे हैं। आपको और आपके बच्चों को ज़रूर पसंद आएंगी।

नूडेल्स सलाद

नूडेल्सः	100 ग्राम
चिकेन क़ीमाः	100 ग्राम
लहसुनः	2 जवे बारीक कटे हुए
अदरकः	100 ग्राम बारीक कटी
पिसी मिर्चः	चाय का चम्मच
सोया सॉसः	2 खाने के चम्मच
चिली सॉसः	चाय का चम्मच
हरी प्याज़ः	2 (कटी हुई)
नींबू का रसः	4 बूंद
नमक, काली मिर्चः	टेस्ट के हिसाब से
हरा धनियाः	थोड़ा सा

तरकीब

नूडेल्स को आधे घंटे तक भिगोए रखिए। बाद में उन्हें नमक के साथ दो मिनट तक उबालिए और फिर पानी फेंक कर छान लीजिए। एक बर्तन में तेल गर्म करें और लहसुन, अदरक और मिर्चें डाल कर दो मिनट तक चम्मच चलाती रहिए। अब चिकेन का क़ीमा डालकर पांच मिनट तक और भूनिए। एक पैन में नूडेल्स लेकर उनमें सोया, सॉस, चिली सॉस, प्याज़, धनिया और नींबू का रस डालिए और धीरे-धीरे चलाती रहिए। सारी चीज़ें मिक्स करके गर्म-गर्म सर्व करें।

मीटः	आधा किलो
नूडेल्सः	250 ग्राम
हल्दीः	आधा चाय का चम्मच
लाल मिचः	ज़रूरत के हिसाब से
गर्म मसाला पिसा हुआः	आधा चाय का चम्मच
ज़ीराः	आधा चाय का चम्मच
सूखा धनियाः	आधा चाय का चम्मच
अंडाः	1
दहीः	आधा किलो
प्याज़ः	1 बड़ा साइज़
टमाटरः	दो
नमकः	ज़रूरत के हिसाब से
पकाने का तेलः	ज़रूरत के हिसाब से

मीट नूडेल्स

तरकीब

पहले दही को फेंट लें। फिर उसमें अंडा डाल दें। उसके बाद उसमें सारे मसाले डालकर ग्राइंड कर लें। एक देग़ची में तेल गर्म कर लें और नूडेल्स को भी उबाल कर तैयार कर लें। तेल में मसाले और गोश्त डाल कर भूनें। गोश्त गल जाए तो उसमें नूडेल्स डाल दें। पांच मिनट तक पकाएं। मज़ेदार नूडेल्स तैयार हैं।

क़ुरआन में BUSINESS MANAGEMENT

■ इरना रिज़वी

आज हर बड़े आर्गेनाईज़ेशन की कामयाबी कुछ Golden Principles पर टिकी होती है जिनको माने बिना कोई भी अच्छे नतीजों तक नहीं पहुँच सकता। क़ुरआन पहले ही एक Institutional Framework बना चुका है जिससे किसी मक़सद की तरफ़ बढ़ने में और रिज़ल्ट्स हासिल करने में बहुत मदद मिलती है। इस आर्टिकल में हम कुछ गोल्डेन उसूलों पर रौशनी डालेंगे।

मार्डन मैनेजमेंट की तस्वीर

आज मैंनेजमेंट को कुछ इस तरह बताया जाता है कि किसी भी काम को दूसरों के ज़रिए करवा लेना ही मैनेजमेंट है। इस Definition की रौशनी में यह तस्वीर सामने आती है कि एक मैनेजर को इस तरह समझा जा सकता है कि जो न सिर्फ़ यह जानता हो कि काम को कैसे किया जाए। बल्कि यह भी बख़ूबी जानता हो कि काम को दूसरों से कैसे करवाना है।

क़ुरआन ने इस चीज़ की तस्दीक़ की है

क़ुरआने मजीद के 43वें सूरे की आयत/ 32 में आया है, ''क्या यही लोग ख़ुदा की रहमत को तक़सीम कर रहे हैं हालांकि हम ने इन्ही के बीच मईशत को दुनिया की ज़िंदगी में तक़सीम किया है और कुछ को कुछ से ऊंचा बनाया है ताकि एक दूसरे से काम ले सकें...।''

यह आयत कहती है कि दुनियावी ज़िंदगी में हमने उनके बीच बटवारा किया है और हमने उनमें से कुछ लोगों को दूसरे कुछ लोगों से दर्जे बंदी की सूरत में ऊँचा रखा है ताकि उनमें से वह एक दूसरे से काम लें।

इसलिए इस आयत ने तमाम मार्डन मैनेजमेंट्स के फ़लसफ़े को बख़ूबी समझाया है। इस आयत ने पुरज़ोर तरीक़े से मैनेजमेंट के निज़ाम (Hierarchy) के बनाने की ज़िम्मेदारियों को लोगों के इल्म के हिसाब से बाँटने को बख़ूबी ज़ाहिर किया है।

इस्लाम ने Institutional Framework भी बनाया है, जिससे इन उसूलों को अमली ज़िंदगी में लाया जा सके और लोग उसे पूरी तरह मानें:-

1- अपने से बुलंद दर्जे (Authourity) की इताअत और एहतेराम

2- बराबरी का मौक़ा देना (Principle of Equal Opportunity)

3- हौसला अफ़ज़ाई (Motivation) और वाबस्तगी (Committment)

1-अपने से बुलंद दर्जा (Authourity) की इताअत और एहतेराम

किसी भी काम को करवाने के लिए अपने से बुलंद दर्जे पर बैठे इन्सान की इताअत और एहतेराम एक बुनियादी ज़रूरत है। सबके साथ मिलकर काम करने का मतलब यही होता है कि हर इंसान अपने से बुलंद दर्जे की बात को माने। यह हर काम करने वाले का फ़रीज़ा है कि वह अपने काम को पूरा करे और सारे क़ानून और मुनासिब अहकामात की पैरवी करे।

क़ुरआन ने बताया है, ''अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो और साहेबाने अम्र की इताअत करो जो तुम ही में से हैं।'' (1)

यह आयत एक हुक्म की तरह नाज़िल हुई है, न कि दरख़्वास्त की तरह। एक अच्छे मुसलमान होने के लिए यह ज़रूरी है कि वह अल्लाह के हुक्म को अपनी अमली ज़िंदगी में लाए और उसे ईमानदारी के साथ माने।

अगर हर मुसलमान इस आयत को अपने ज़ेहन में रखेगा और उसे मानेगा तो इससे एक बहुत मज़बूत सिस्टम बन जाएगा।

2-बराबरी का मौक़ा देना (Principle of Equal Opportunity)

यह Principle इस बात पर ज़ोर देता है कि हर इन्सान को बराबरी का मौक़ा मिलना चाहिए, सबको आगे बढ़ने का हक़ होना चाहिए और सबको शरीक होने का हक़ होना चाहिए और वह भी बिना किसी बुनियादी फ़र्क़ के।

क़ुरआन ने इस पर इस तरह ज़ोर दिया है,

"इन्सानो! हम ने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया है और फिर तुम में शाख़ें और क़बीले बनाए हैं ताकि आपस में एक दूसरे को पहचान सको। अल्लाह की नज़र में सबसे मोहतरम वही है जो ज़्यादा परहेज़गार है।" (2)

रसूले ख़ुदा[स०] ने हज्जतुल विदा के मौक़े पर इस आयत को कुछ इस तरह समझाया था, "इस आयत की रौशनी में कोई अरब किसी नॉन अरब से बुलंद नहीं है, न ही कोई नान अरब किसी अरब से बुलंद है। न कोई गोरा किसी काले से बुलंद है, न ही कोई काला किसी गोरे से बुलंद है। बल्कि अगर अल्लाह किसी को बुलंद और इज़्ज़तदार समझता है तो सिर्फ़ तक़्वे की वजह से।

इसलिए कोई तरीक़ा इस आयत से बेहतर नहीं हो सकता। बराबरी के दर्जे के इस Principle को समझाने का। Modern Management की रूह में इसका यह मतलब है कि किसी भी Benefit, Reward, Position, Status का हक़दार वह शख़्स है जिसके पास उस Position के मुताबिक़ Qualification और Experience हो और हर एक को यह सब हासिल करने का भी पूरा हक़ है।

3-हौसला अफ़ज़ाई (Motivation) और वाबस्तगी (Committment)

जो लोग किसी भी आर्गनाइज़ेशन में काम कर रहे होते हैं, उन लोगों की उस काम के लिए वाबस्तगी (Committment) भी बहुत ज़रूरी होती है, जो कि सिर्फ़ हौसला अफ़ज़ाई (Motivation) से ही हासिल हो सकती है। यह एक हक़ीक़त है कि मैनेजर का मुलाज़िमों के साथ बिहेवियर तय करता है कि मुलाज़िमों में कितनी हौसलामंदी और वाबस्तगी होगी।

क़ुरआन भी इस पर इस तरह बोला है, "ऐ रसूल! यह अल्लाह की महरबानी है कि तुम इन लोगों के लिए नर्म हो। वरना अगर तुम बदमिज़ाज और सख़्त दिल होते तो यह तुम्हारे पास से भाग खड़े होते। इसलिए अब इन्हें माफ़ कर दो। इनके लिए इस्तिग़फ़ार करो और जंगी मामलात में राय-मश्वरा करो।" (3)

यह आयत दो चीज़ों पर ज़ोर देती है: एक तो शफ़क़त के साथ अपने साथियों से पेश आना और दूसरा अपने साथियों और मुलाज़िमों के साथ राए मश्वरा करके किसी नतीजे पर पहुँचना।

Participatory Approach मार्डन मैनेजमेंट का एक Golden Principle है जो कि बहुत असरदार है। अगर यह उसूल नहीं माना गया तो धीरे-धीरे यह सब लोग ग़ायब होना शुरु हो जाएंगे और कोई भी काम पर ध्यान नहीं देगा।

Conclusion

यह Golden Principle जो कि क़ुरआन 1430 साल पहले बता चुका था आज Modern Management में इसकी बड़ी अहमियत है। इन Principles के ज़रिए एक पुर-सुकून माहोल बनाया जा सकता है जिसके ज़रिए आम आदमी को भी फ़ाएदा पहुँचेगा और Organizations को भी।

1- 4/59, 2- 49/13, 3- 3/159

मिलावट करने और धोखा देने से बचो

डा. कल्बे सिब्तैन नूरी

"रसूले ख़ुदा[स०] ने फ़रमाया है, "जो किसी मुसलमान को मिलावटी चीज़ देता है या उसे नुक़सान पहुँचाता है या उसे धोखा व फ़रेब देता है वह हम में से नहीं है।" (बिहारुल अनवार, जिल्द 77)

आज के इस दौर में कुछ लोग दौलत हासिल करने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं चाहे वह नक़ली दवाओं का कारोबार हो, मिलावटी चीज़ों को बेचकर इन्सानी जानों को ख़तरे में डालना हो या किसी भी तरह से इन्सानियत को नुक़सान पहुँचाना हो लेकिन इस्लाम किसी भी तरीक़े से इन्सानों की सेहत को नुक़सान पहुँचाने की इजाज़त नहीं देता और यही नहीं बल्कि अगर इस्लामी हुकूमत हो तो मिलावट करने वालों या नक़ली चीज़ों को बेचने वालों के लिए बहुत सख़्त सज़ाएं हैं।

क़ुरआने मजीद को पढ़ने से पता चलता है कि मिलावट करने की वजह से पूरी एक क़ौम पर अज़ाब नाज़िल किया गया था। मिलावट करने के बाद हदीस में दूसरों को नुक़सान पहुँचाने और धोखा व फ़रेब देने से रोका गया है। दूसरों को नुक़सान पहुँचाने में जो एनर्जी हम बरबाद करते हैं अगर वही एनर्जी हम नेक और फ़ाएदेमंद कामों को करने में ख़र्च करें तो कहाँ से कहाँ पहुँच जाएं। हदीस के आख़िरी टुकड़े में कहा गया है कि जो चीज़ों में मिलावट करे या दूसरों को धोखा दे वह लाख इबादतें अंजाम दे वह उस गिरोह में शामिल नहीं है जिसे हम अपना कह सकें।

Divorce घरों की बर्बादी

■ फ़ातिमा कुम्मी

तलाक़ अरबी लेंग्वेज का वर्ड है। इसका मतलब तर्क करना और छोड़ देना है। इस्लाम में इसका मतलब दो गवाहों के सामने खुद को निकाह के बंधन से आज़ाद करना होता है। शादीशुदा ज़िंदगी में भी तलाक़ का मतलब 'निकाह का टूटना' ही है।

जैसे-जैसे समाज ने तरक़्क़ी की उसी अंदाज़ में फ़ैमिली क़ानूनों में भी चेंजेज़ आए। हमारे समाज में मियां-बीवी के बीच मसले सिर्फ़ उसी वक़्त पैदा हुए जब हमारा समाज इस्लामी टीचिंग्स से दूर हो गया। इस्लाम ने इसके बारे में सारे क़ानून 1400 साल पहले ही बता दिए थे। यह क़ायदे-क़ानून हर मुसलमान घराने में क़ुरआन के अंदर मौजूद हैं। इन्हें कोई पढ़ता और समझता है या नहीं, यह एक अलग बात है।

आज शादी के इस ख़ूबसूरत बंधन को न जाने किस की नज़र लग गई है। इस रिश्ते की बुनियादों को इतना मज़बूत होना चाहिए था कि कोई तूफ़ान भी उन्हें कमज़ोर न कर पाता। ईसार, मोहब्बत, बर्दाश्त और क़ुर्बानी के बिना इस रिश्ते की नींव बिल्कुल कमज़ोर हो जाती है। इसलिए ध्यान रखिए कि किसी भी हालत में अपने आपको कमज़ोर मत पड़ने दीजिए। शादी के नाकाम होने में सबसे ख़ास वजह यही होती है कि कहीं न कहीं उसमें इन्हीं जज़्बात की कमी हो जाती है।

आज सब परेशान हैं इन सवालों से, तलाक़ की वजहों से? आख़िर इतने अरमानों और ख़्वाहिशों से की जाने वाली शादी का नतीजा तलाक़ की शक्ल में ही सामने क्यों आता है?

इसी मुश्किल को देखते हुए आज हमारे मुल्क में फ़ैमिली-क़ानून और अदालत में बहुत सी आसानियां कर दी गई हैं। उधर यह भी सही है कि औरतों में अवेयरनेस भी आई है और वह अपना हक़ मांगने लगी हैं। इसीलिए अब नए फ़ैमिली क़ानून और अदालत तक पहुंचना बहुत आसान हो गया है। इसीलिए आए दिन औरतें कोर्ट-कचहरी में नज़र आने लगी हैं और इसी वजह से तलाक़ के केसेज़ रोज़ सामने आ रहे हैं। इधर बीवी ने मुक़दमा किया उधर शौहर को बुलाया लिया गया। एक एग्रीमेंट का मौक़ा दिया गया और साथ ही तलाक़नामा भी जारी कर दिया गया, बस हो गई तलाक़। तलाक़ हासिल करने के मुक़दमों में ज़्यादातर एक ही तरह के इल्ज़ाम होते हैं "शौहर मारता है, ख़र्चा नहीं देता या फिर मां-बाप से मिलने की इजाज़त नहीं देता"। यह तीनों इल्ज़ाम क़रीब-क़रीब तलाक़ के हर मुक़दमे में बीवी की तरफ़ से लगाए जाते हैं। ऐसे केसेज़ में अदालत बीवी का पार्ट लेकर उसे इस रिश्ते से आज़ाद कर देती है।

अब ज़रा दीन के नज़रियों को दखिए! वह यह नहीं चाहता कि मियां-बीवी किसी भी हालत में एक दूसरे से अलग रहें। इस्लाम तलाक़ को रत्ती बराबर पसंद नहीं करता है बल्कि वह हर हाल में यह चाहता है कि तलाक़ फ़ौरन न ली जाए बल्कि मामले को ठंडा किया जाए और तलाक़ में इतनी देर की जाए कि दोनों तरफ़ से गुस्सा ठंडा हो जाए और दिमाग़ सही हालत पर आ जाए कि शायद इस तरह तलाक़ का ख़्याल दिल से निकल जाए। अगर इसके बाद भी तलाक़ के अलावा कोई रास्ता न हो तो दीन यही सलाह देता है कि दोनों पार्टियां अपने मसलों को हल करने की कोशिश करें और बड़े-बंज़ुर्गों से सलाह-मश्वेरा करें। इसके बावजूद भी अगर दोनों में नहीं बनती है तो फिर दोनों को अलग होने का हक़ है।

इस्लाम ने तलाक़ लेने और देने में जो यह इतना लम्बा पीरियड रखा है उसकी वजह यही है कि दोनों ठंडे दिमाग़ से सोचकर सही फ़ैसला कर लें। लेकिन आज मुरव्वत और रवादारी जैसी चीज़ें नहीं रह गई हैं। आज-कल टी.वी. पर रिले होने वाले सास-बहु सीरियल्स ने भी समाज की सूरत को बिगाड़ कर रखने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। लड़कियां इन सीरियल्स को देखने के बाद नुमाईश और दिखावे की शिकार हो जाती हैं, उनकी शौहरों से डिमांड्स बहुत ज़्यादा हो जाती हैं और जब उनकी शादियां मिडल-क्लास घरानों में होती हैं तो उनके सारे सपने टूट जाते हैं। और उसके बाद घरों में झगड़े शुरु हो जाते हैं। बरदाश्त और सब्र न होने की वजह से बात बहुत आगे बढ़ जाती है।

वैसे ज्वाइंट फ़ैमिली सिस्टम में भी कुछ ख़राबियां होती हैं, फिर भी यह सब से अच्छा सिस्टम माना जाता है। ऐसी फ़ैमिलीज़ में कुछ ही शादियां नाकाम होती हैं क्योंकि यहां पर बड़ों का बच्चों पर चेक ऐंड बेलेंस रहता है। वह कोई मसला ही नहीं पैदा होने देते।

आप भी 'मरयम' के लिए आर्टिकिल भेज सकती हैं...

1. A4 साईज़ पर लिखा हो।
2. पेपर के एक साईड पर लिखा हो।
3. इससे पहले कहीं छपा न हो।
4. आर्टिकिल की ओरिजिनल कॉपी भेजिए।
5. *'मरयम'* को भेजे गए आर्टिकिल्स एडिटोरियल बोर्ड से पास होने के बाद ही पब्लिश किए जाएंगे।
6. आर्टिकिल रिजेक्ट होने पर उसकी वापसी नहीं होगी।
7. आर्टिकिल सिलेक्ट हो जाने के बाद अपने मुनासिब वक़्त पर पब्लिश किया जाएगा।

अब नई फ़ैमिली में शादियां भी मसले पैदा कर रही हैं क्योंकि एक रिश्ते में बंधने वाली दो फ़ैमिलीज़ कभी-कभी अजनबी होने के साथ-साथ बिल्कुल एक-दूसरे से अलग होती हैं। शुरु-शुरु में दोनों का नया ख़ून होता है, नया जोश होता है और कोई ख़ास मुश्किल नहीं पैदा होती है। लेकिन क्योंकि शुरु-शुरु में दोनों झूठ और दिखावे का सहारा ले रहे होते हैं इसलिए थोड़े ही दिनों के बाद एडजस्टमेंट मुश्किल हो जाता है। इस कंडीशन में किसी एक को थोड़ा ख़ामोश रहना और बर्दाश्त करना ज़रुरी हो जाता है। बीच के दूसरे लोग भी मामला बिगाड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ते। अगर शादी की बुनियाद सच, दिल की सच्चाई, अच्छी नियत और इंसानियत पर हो तो शादी के बाद कोई मसला बड़ा नहीं बनता।

तलाक़ की एक बुनियादी वजह लड़कियों का आज के प्रोफ़ेशनल स्टेटस में हद से आगे बढ़ जाना भी है। वैसे इस्लाम एजुकेशन का मुख़ालिफ़ नहीं है, एक लड़की जितना चाहे पढ़ सकती है यहां तक कि एक लड़के से ज़्यादा एजुकेशन हासिल कर सकती है। लेकिन इस्लाम में औरतों की एजुकेशन का मक़सद सिर्फ़ यह नहीं है कि वह अपनी नेचुरल ज़िम्मेदारियों से आंखें मूंद कर और अपने घर-बार को छोड़कर दिन के 8-9 घंटे किसी ऑफ़िस या दफ़्तर में गुज़ार दें। इस्लाम में औरतों की एजुकेशन का मतलब यह है कि वह अपनी एजुकेशन के बेस पर एक अच्छी सोसाइटी बनाएं, न कि औरतों को प्रोफ़ेशनल ज़िंदगी में झोंक दिया जाए। यूं भी दीन ने कमाई-धमाई और फ़ैमिली के ख़र्चों की ज़िम्मेदारी मर्द के कंधों पर रखी है और औरतों को इससे बिल्कुल फ़्री रखा है। हां! अगर वह अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के बाद कोई आमदनी का ज़रिया तलाश कर लेती हैं तो यह उनका हक़ है और जो भी आमदनी होगी वह उनकी अपनी होगी। इसमें उनके शौहर का कोई हक़ नहीं होगा। आज लड़कियों की एजुकेशन से कोई मुश्किल नहीं हो रही है बल्कि अगर समाज बिगड़ रहा है तो प्रोफ़ेशनल एजुकेशन से। प्रोफ़ेशनल एजुकेशन से यह प्रॉब्लम सामने आती है कि यह लड़कियां और अच्छी जॉब करने वाली लड़कियां अपने से कम पढ़े-लिखे या अपने से छोटी जॉब वाले नौजवान से शादी नहीं करतीं। अगर कर भी लेती हैं तो इस मेल-डामिनेंटि सोसाइटी में उन्हें अपनी तरफ़ उठी हुई अंगुलियों का सामना करना पड़ता है।

इंडिया में तलाक़ का रेशियो दूसरे मुलकों से काफ़ी कम है। लेकिन अफ़सोस की बात यह है कि फिर भी मेट्रो सिटीज़ में पिछले पांच सालों में यह रेशियो डबल हो गया है।

शादी के बारे में इस्लाम ने जो तालीम दी है अगर उस पर अमल किया जाए और सब अल्लाह पर छोड़ दिया जाए तो तलाक़ तो बहुत दूर की बात है कोई बड़ा झगड़ा भी पैदा नहीं होगा, इंशाअल्लाह। मियां-बीवी अगर सच्चाई पर रहें और एक-दूसरे के ख़यालों और जज़्बात का ध्यान रखें, ज़रुरतों का ख़याल रखें तो घर उजड़ने का सवाल ही पैदा नहीं होता।

मां-बाप को चाहिए कि वह ख़ानदानी स्टेटस, पेशा, किसी भी तरह की कोई लालच या बड़े ख़ानदान वाले लड़कों का इंतेज़ार करने के बजाए किसी भी शरीफ़, नेक और अच्छे अख़लाक़, और हलाल रोज़ी-रोटी कमाने वाले लड़के से अपनी बच्ची की शादी कर दें क्योंकि जनाबे रसलू इस्लाम[स०] बहुत पहले कह गए हैं कि जो भी माल-दौलत या ख़ूबसरती के लिए किसी से शादी करेगा, उसे यह चीज़ें मिलेंगी ही नहीं। यह बात सिर्फ़ मां-बाप के समझने की नहीं है बल्कि बेटियों को भी अल्लाह पर भरोसा करके शादी के लिए हां कर लेनी चाहिए। शादीशुदा ज़िंदगी में सबसे बड़ी और ख़ास बात यह है कि मियां-बीवी दोनों अपनी तमन्नाओं, ख़्वाहिशों, आरज़ुओं और ज़रूरतों को समेट कर रखें और दूसरों की देखा-देखी हर दूसरी चीज़ को ख़रीदने की कोशिश न करें यानी जितनी चादर हो उतने ही पैर फैलाएं और आगे के लिए भी उतनी कोशिश करें जितनी करने की ताक़त हो वरना गुब्बारे में अगर हद से ज़्यादा हवा भर दी जाए तो वह जल्दी या देर में फट ही जाता है। और फिर शौहर भी उतना ही काम तो करेगा जितना उसमें स्टेमिना होगा....हां! अगर वह नाकारा हो या काम-काज करना ही न चाहता हो तो फिर अलग बात है।

रसूले इस्लाम[स०] फ़रमाते हैं कि दुनियावी चीज़ों में अपने से नीचे वालों की तरफ़ देखो और रूहानियत या दीनदारी में अपने से अच्छे लोगों की तरफ़...।

कुरआन की मिसालें

फ़साहत हुसैन

मिसाल के ज़रिए किसी भी बात को आसानी और ख़ूबसूरती के साथ सामने वाले को समझाया जा सकता है। इसलिए हर ज़बान और हर इल्म में मिसालों का सहारा लिया जाता है। कभी-कभी जिन बातों को दलीलों से समझना मुश्किल होता है वह मिसाल से आसानी के साथ समझ में आ जाती हैं। इस तरह कभी किसी बात की अच्छाई बताने के लिए भी उसकी मिसाल अच्छी चीज़ से दी जाती है और कभी किसी चीज़ की बुराई बताना हो तो उसके लिए बुरी चीज़ की मिसाल देते हैं ताकि यह अच्छी तरह मालूम हो जाए कि वह चीज़ कितनी अच्छी या बुरी है।

क़ुरआन ने अपनी बातें आसानी से लोगों के दिल में उतारने के लिए जगह-जगह मिसालें दी हैं। यह मिसालें ऐसी हैं जिन्हें हर अक़्ल रखने वाला समझ सकता है और अगर उसे हिदायत लेना हो तो हिदायत ले सकता है। यह मिसालें दिल को छू लेने वाली और ज़हन को सोचने पर मजबूर करने वाली हैं। इन मिसालों को पढ़ते वक़्त आदमी की आँखों के सामने वह मंज़र अच्छी तरह आ जाता है जिसे क़ुरआन पेश करना चाहता है। यहाँ पर हम अलग-अलग सब्जेक्ट्स के बारे में क़ुरआन की दी हुई मिसालों पर बात कर रहे हैं।

तौहीद

ख़ुदा ने नबियों और आसमानी किताबों को इसीलिए नाज़िल किया ताकि लोग एक ख़ुदा को मानें और अपने जैसे इन्सानों या अपने से नीची चीज़ों की इबादत न करें। यह क़ुरआन की एक अहम टीचिंग है इसलिए क़ुरआन इसे समझाने के लिए कभी दलीलें देता है और कभी आसान मिसालों से बात समझाने और दिल में उतारने की कोशिश करता है। हम यहाँ पर उनमें से कुछ मिसालें पेश कर रहे हैं:

“यह लोग अल्लाह को छोड़कर उनकी इबादत करते हैं जो न आसमान व ज़मीन में किसी रिज़्क़ के मालिक हैं और न किसी चीज़ की ताक़त रखते हैं।” [1]

इसके बाद क़ुरआन इसकी मिसाल इस तरह देता है, “एक ग़ुलाम है जिसके पास अपना कुछ भी नहीं है। वहीं दूसरी तरफ़ एक ऐसा आदमी है जिसे ख़ुदा ने माल व दौलत दी है और वह उस से ज़रूरतमंद लोगों की मदद करता रहता है। यह दोनों लोग बराबर नहीं हो सकते हैं।”

इस मिसाल में क़ुरआन ने बुतों और दूसरी चीज़ों को उस ग़ुलाम की तरह बताया है जिसके पास कुछ भी नहीं है। दूसरी तरफ़ वह एक ख़ुदा है जिसके पास “ज़मीन और आसमान में जो कुछ है सब उसी का है।” अगर किसी के सामने ऐसे दो लोग हों यानी एक तरफ़ एक ग़ुलाम हो जिसके पास कुछ भी नहीं है और दूसरी तरफ़ एक ऐसा आदमी है जिसके पास इतना है कि वह दूसरों को भी दे देता है तो इन्सान किसके पास जाएगा और किस से अपनी ज़रूरत पूरी करने के लिए कहेगा? जिस तरह एक ख़ाली हाथ ग़ुलाम और एक दौलतमंद को बराबर नहीं समझा जा सकता है उसी तरह सब कुछ जानने वाले और हर काम पर क़ुदरत रखते वाले ख़ुदा के सामने लाचार और मजबूर बुतों को नहीं रखा जा सकता है।

दूसरी जगह पर क़ुरआन एक ख़ुदा और कई ख़ुदाओं को मानने के साइकॉलोजिकल

असर की तरफ़ इशारा करते हुए यह मिसाल देता है, "अल्लाह ने उस शख़्स की मिसाल बयान की है जिसमें बहुत से झगड़ा करने वाले शरीक हों और वह शख़्स जो एक ही शख़्स के सुपुर्द हो जाए, क्या दोनों हालात के एतेबार से एक जैसे हो सकते हैं।[2]

इस तरह मुसलमान के सामने हर चीज़ का अलग-अलग देवता और ख़ुदा नहीं है कि वह सोचे कि किसकी इबादत करे और किसकी न करे। किस देवता के लिए कौन सा काम करेगा तो वह ख़ुश होगा और कहीं उसी काम से दूसरा देवता नाराज़ न हो जाए बल्कि उसके सामने सिर्फ़ एक ख़ुदा है उसे जिसकी बात सुनना और मानना है।

यहाँ पर क़ुरआन ने एक आदमी की मिसाल दी है कि अगर उसके कई ख़ुदा हों तो वह परेशान रहेगा और उसकी समझ में नहीं आएगा कि किसकी बात माने और क्या करे। वहीं दूसरी जगह पर क़ुरआन पूरी दुनिया के लिए कहता है कि अगर पूरी दुनिया के लिए दो ख़ुदा मान लिए जाएं तो यह दुनिया ख़त्म हो जाएगी क्योंकि हर ख़ुदा चाहेगा कि उसकी मर्ज़ी से दुनिया चले लेकिन जिस तरह गाड़ी का एक ड्राइवर होता है और एक क्लास का एक टीचर और एक कम्पनी का एक मैनेजर होता है और अगर कई हों तो न गाड़ी आगे बढ़ सकती है और न क्लास और कम्पनी, इसी तरह अगर दुनिया में अलग-अलग ख़ुदा और देवता हों तो यह दुनिया ख़त्म हो जाएगी।

क़यामत

दूसरी ज़रूरी बात जिसके बारे में क़ुरआन ने बहुत सी जगहों पर मिसालें पेश की हैं वह क़यामत है। कुछ लोगों के ज़ेहन में यह ख़याल आता है कि जब हम मर जाएंगे तो ख़ुदा मिट्टी में मिल जाने वाले हमारे जिस्मों को कैसे इकट्ठा करेगा और किस तरह ज़िंदा करेगा।

क़ुरआन ने सूरए यासीन की आयत/77-79 में यह सवाल और इसका जवाब पेश किया है। रसूलुल्लाह[स०] के पास एक आदमी कुछ सूखी हड्डियाँ लेकर आया और उन्हें अपने हाथों में मसल दिया। फिर वह रसूल[स०] से कहता है कि क्या आप यह समझते हैं कि ख़ुदा इन्हें ज़िंदा करेगा जबकि यह बिल्कुल मिट्टी बन चुकी हैं?

ख़ुदा ने इसका जवाब यह दिया कि यह आदमी अपनी पैदाईश को भूल गया। जिस तरह ख़ुदा उस वक़्त पैदा कर सकता है जब यह हड्डी भी नहीं थी तो मिट्टी में मिल जाने वाली इन हड्डियों के साथ दोबारा भी पैदा कर सकता है। इस तरह ख़ुदा क़यामत में इंसान को ज़िंदा करने की मिसाल उसकी पैदाईश से देता है और बिना किसी लम्बी-चौड़ी दलील के आसानी से क़यामत को समझा देता है।

इसी तरह क़ुरआन ने बहुत सी जगहों पर पिछले नबियों के वाक़िए बयान किए हैं जिनमें कुछ लोगों को दोबारा ज़िंदा किया गया था ताकि लोग यह समझ सकें कि जिस तरह पिछली उम्मत में कुछ लोग ज़िंदा हुए थे इसी तरह मरने वालों को क़यामत में भी ज़िंदा किया जाएगा।

जनाब ईसा[अ०] की मिसाल

रसूल[स०] के ज़माने में ईसाई उन से जनाबे ईसा[अ०] के ख़ुदा का बेटा होने पर बात कर रहे थे और रसूले ख़ुदा[स०] उनको समझा रहे थे कि वह ख़ुदा की एक मख़लूक़ थे, ख़ुदा के बेटे नहीं थे। ख़ुदा का न कोई बाप है न बेटा। ख़ुदा ने जनाबे ईसा की मिसाल जनाबे आदम से दी है। क्योंकि वह जनाबे ईसा को ख़ुदा का बेटा इसी वजह से कह रहे थे कि जनाबे ईसा के बाप नहीं थे इसलिए ख़ुदा उनका बाप है। क़ुरआन ने कहा, "ईसा की मिसाल अल्लाह के नज़दीक आदम के जैसी है जिन्हें मिट्टी से पैदा किया था।"[3]

जनाबे ईसा के सिर्फ़ बाप नहीं थे लेकिन ख़ुदा ने जनाबे आदम को बिना माँ-बाप के बनाया था तो जो ख़ुदा आदम को सिर्फ़ मिट्टी से बिना माँ-बाप के बना सकता है वही ख़ुदा जनाबे ईसा को बिना बाप के भी बना सकता है और जिस तरह ख़ुदा जनाबे आदम और हव्वा का बाप नहीं है बल्कि उन्हें बनाने वाला है इसी तरह वह जनाबे ईसा का भी बाप नहीं बल्कि उन्हें बनाने वाला है।

इसके अलावा क़ुरआन में बहुत सी जगहों पर मिसालें दी गई हैं जैसे ख़ुदा की राह में ख़र्च करना, ईमान और कुफ़्र, हक़ और बातिल वग़ैरा। हमारे लिए इन मिसालों में ग़ौर करना ज़रूरी है क्योंकि इनमें बहुत सी ऐसी हिक्मत की बातें (Wisdom) आसान अंदाज़ में पाई जाती हैं जिनको दूसरी जगहों पर समझना हमारे लिए बहुत मुश्किल होता है।

1-16/73, 2- 39/29, 3- 3/59

जहेज़

■ राज़िया रिज़वी

जहेज़ हमारे समाज में इतना आम हो गया है कि इसके बग़ैर शादी का तसव्वुर ही नहीं कर सकते। अगर माँ-बाप के पास इतना पैसा नहीं है कि वह जहेज़ का इंतेज़ाम कर सकें तो वह अपनी बेटियों को अपने सामने उम्र निकलते देखते रहते हैं और घुट-घुट कर जीने पर मजबूर होते हैं। बॉय चाँस किसी ग़रीब की शादी तय हो जाती है तो उसे जहेज़ तो देना ही है चाहे माँ-बाप पड़ोस से माँगें या रिश्तेदारों से, एक ग़ैरतदार बाप को बेग़ैरत बनना पड़ता है अपनी औलाद की ख़ातिर, दूसरी तरफ़ एक तबक़ा ऐसा भी है जो जहेज़ के नाम पर ज़रूरत से बहुत ज़्यादा अपनी बेटियों को दे देते हैं। जितनी की शायद उन्हें ज़रूरत भी न हो लेकिन अपना स्टेटस दिखाने के लिए इससे अच्छा मौक़ा कहाँ मिलेगा। काश! हमें एहसास हो कि जहेज़ एक लानत है। यह रस्म मुसलमानों ने हिन्दुओं से ली है। हिन्दू तो लड़की को ज़्यादा जहेज़ इसलिए देते थे कि उनके यहाँ लड़कियों को विरसा नहीं मिलता, यह सोचकर उनकी औलाद हमेशा के लिए उन से दूर हो रही है और उसे कोई हिस्सा उनके माल-जाएदाद से नहीं मिलेगा, उन्होंने अगर जहेज़ दे भी दिया तो कोई हरज नहीं। हमारे यहां तो जाएदाद का हिस्सा लड़की को मिलता है, उन्हें क्या ज़रूरत है कि अपनी दूसरी औलाद के हक़ों में कमी करके लड़की को दे दें। इस हिमाक़त भरे काम में दो ख़याल हैं: एक तो यह कि हम जहेज़ नहीं देंगे तो लोग बातें बनाएंगे। जब औरों ने ज़्यादा जहेज़ दिया है तो हम क्यों न दें। दूसरा ख़याल यह है कि ससुराल में ज़्यादा इज़्ज़त होगी हालांकि यह दोनों ख़याल ग़लत हैं। क्या ज़्यादा जहेज़ देकर लोग पीठ पीछे देने वाले के बारे में बातें नहीं बनाते या ज़्यादा जहेज़ लाई हुई लड़की को टार्चर नहीं किया जाता। करोड़ों का जहेज़ देने के बाद भी अगर लोग लालची हैं तो उनकी लालच और हवस और बढ़ जाएगी, सोचेंगे मालदार घराना है जितना चाहे नोच लो इन दो चीज़ों के अलावा एक चीज़ और पैदा होगी ज़्यादा जहेज़ लाई हुई लड़की कहीं-कहीं मग़रूर भी हो जाती है वह अपनी शादी-शुदा ज़िंदगी नार्मल तरीक़े से जी नहीं पाती, न तो शौहर को इज़्ज़त देती है, न ही उसके घर वालों को। आप ने देखा, जहेज़ में बुराईयाँ ज़्यादा पाई जाती है अगर जहेज़ देने में अच्छाईयाँ होती तो हमारे काएनात के रसूल[स०] अपनी बेटी के घर को जहेज़ से भर देते लोग यह जुमला सुनकर यही कहते हैं वह रसूल थे उनकी हमारी क्या मिसाल यह बात तो ठीक है लेकिन हम बेजा इसराफ़ तो कम कर सकते हैं हमारे समाज में जहेज़ की शुरुआत ऊँचे तबक़े से हुई इसका ख़ात्मा भी ऊँचे तबक़े से होना चाहिए क्योंकि अगर ग़रीब कहेगा कि हम जहेज़ के बग़ैर शादी करेंगे तो लोग हंस कर यही कहेंगे कि कुछ है नहीं देने को, तो बातें बना रहे हैं यही बात हाई-सोसाइटी के लोग करेंगे तो मिसाल बनेंगे। लोग धीरे-धीरे इस बुराई को ख़त्म करने में आगे बढ़ेंगे तो शायद हमारे समाज में यह बुराई कम हो जाए। काश! हमें तौफ़ीक़ मिले कि जहेज़ के बग़ैर शादी के मिशन को आगे बढ़ाएं और हमारे पैरेंट्स इस नेक काम में हमारा साथ दें और ख़ुदा और रसूल की ख़ुशनूदी हासिल करें। ●

सोयाबीन

हाई प्रोटीन का ख़ज़ाना

सोयाबीन की पैदाइश चीन की है। चाइनीज़ फ़ूड के बहाने हर कोई थोड़ी बहुत मिक़्दार में सोयाबीन के प्रोटीन ज़रूर ले लेता है। ऐसे कहा जा सकता है कि चाइनीज़ फ़ूड के बहाने सोयाबीन घर-घर पहुँच गया है लेकिन बहुत सारे लोग ऐसे भी हैं जिन्हें सोयाबीन का टेस्ट और स्मेल पसंद नहीं होती। वहीं सेहत की तरफ़ ध्यान रखने वाले लोग सोयाबीन का दही, पनीर, तेल खाना बहुत पसंद करते हैं और वह इसलिए कि यह कोलेस्ट्रोल को कम करता है। यही वजह है कि दिल के मरीज़ों को सोयाबीन खाने की राय दी जाती है। इसीलिए आजकल मार्केट में सोयाबीन के आटे से लेकर सोया मिल्क, पनीर, सोया चंक्स (बरी), सोया आयल सब कुछ मिल जाता है।

दिल की बीमारी ख़ासकर कोलेस्ट्रॉल की शिकायत में, गुर्दे की बीमारी, औरतों में मोनोपॉज़ में सोयाबीन बहुत अच्छी चीज़ है। ज़्यादा तर गाइनोकोलोजिस्ट्स का मानना है कि मोनोपॉज़ के दौरान औरतों में कुछ ख़ास हार्मोन्स की कमी देखी जाती है। सोयाबीन में पाए जाने वाला आइसोफ़्लेवींस औरतों में पाए जाने वाले हार्मोन्स एस्ट्रोजेन को बैलेंस में रखता है। इसी वजह से चीन और जापान की औरतों को मोनोपॉज़ के दौरान होने वाली तकलीफ़ों का सामना नहीं करना पड़ता है। सोयाबीन, अंडे और पनीर से तीन गुना, गाय के दूध से बारह गुना ज़्यादा प्रोटीन वाला होता है। इसके अलावा इसमें हमारे जिस्म के लिए कुछ ज़रूरी खनिज जैसे कैल्शियम, पोटेशियम और आइरन का अच्छा सोर्स भी होता है। पहले की सोच ग़लत थी कि गोश्त, मछली, अंडे में किसी भी दूसरे खाने से ज़्यादा प्रोटीन होता है पर रिसर्च से साबित है कि सोयाबीन गोश्त प्रोटीन से भी अच्छा होता है वह इसलिए कि इसमें गोश्त की तरह तेज़ाबियत नहीं होती। जिन्हें जिस्म के किसी हिस्से में पथरी की शिकायत हो उन्हें सोयाबीन जरूर खाना चाहिए क्योंकि यह पथरी को गला देता है, पुराने क़ब्ज़ को दूर करता है और कोलेस्ट्रोल कम करता है। दूसरी तरफ़ ब्लड शूगर को भी कंट्रोल करता है। इतने सारे फ़ायदे वाले सोयाबीन से मुँह मोड़ना क्या अपनी सेहत से मुँह मोड़ना नहीं है ? ●

CULTURAL ATTACK

■ आयतुल्लाह मेहदी आसफ़ी
ट्रांसलेशनः इम्तियाज़ हुसैन रिज़वान

वैल्यूज़, नज़रियों और मोरल्स के एक नस्ल से दूसरी नस्ल तक पहुँचने को ''कल्चरल हेरिटेज'' कहा जाता है। वैल्यूज़ और नज़रियों की एक अहम कल्चरल विरासत हज़रत आदम[अ०], हज़रत इब्राहीम[अ०] और हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा[स०] से होती हुई हम तक पहुँची है। हम भी इस सिलसिले की एक कड़ी हैं क्योंकि कल्चरल विरासत के पुलों से होती हुई यह अज़ीम टीचिंग्स हम तक पहुँची हैं।

इन पुलों के ज़रिए एक नस्ल दूसरी नस्ल से जुड़ी रह सकती है। अगर यह पुल ख़त्म कर दिए जाएं तो एक नस्ल का दूसरी नस्ल से रिश्ता ख़त्म हो जाएगा। इन पुलों के नाम यह हैं:

1- घर
2- एजुकेशनल सेंटर्स
3- मस्जिद

यह पाकीज़ा कल्चर इन्हीं पुलों से होता हुआ हम तक पहुँचा है इसलिए इस्लाम ने इन पर बहुत ध्यान दिया है।

1- घर

घर का मतलब 'फ़ैमिली' है। कल्चरल विरासत को जवान नस्ल तक पहुँचाने में घर का सबसे अहम रोल है क्योंकि ईमान की जिन बुनियादों पर बच्चे की शख़्सियत बनती है, वह इन्सान के अपने घर में बनती है। इन्सान के फ़्युचर का ख़ाका इसी घर की चारदीवारी में तैयार होता है।

एक अच्छी फ़ैमिली नई नस्ल तक कल्चरल विरासत पहुँचाकर उसे बनाने में एक अहम रोल अदा करती है जिसकी एक मिसाल इमाम हसन[अ०] के नाम हज़रत अली[अ०] की वसीय्यत है।

2- एजुकेशनल सेंटर्स

एजुकेशनल सेंटर्स एक ऐसा टाइटल है जिसमें स्कूल, कालेज, युनिवर्सिटीज़, किताब, पढ़ाने का तरीक़ा, टीचर, कल्चरल प्रोग्राम्स, ज़बान और मीडिया सभी कुछ आते हैं।

इस टाइटल में स्कूल, कालेज और युनिवर्सिटीज़ सबसे अहम पुल हैं जो किसी कल्चर को एक नस्ल से दूसरी नस्ल तक पहुँचाते हैं। हर आदमी शुरुआती तालीम घर में हासिल करता है इसलिए दूसरी स्टेज में उसकी शख़्सियत स्कूल में बनती है।

इस्लाम में टीचर की अज़्मत और एहतेराम के बारे में बहुत ज़ोर दिया गया है और किसी को पढ़ाने का बहुत बड़ा सवाब बताया गया है जिस से मालूम होता है कि तालीम कितनी असरदार चीज़ है।

3- मस्जिद

इस्लाम में मस्जिद नज़रियाती, अख़लाक़ी, सियासी और समाजी मुश्किलें और मसले हल करने, नेक कामों में एक दूसरे की मदद करने और दूसरों की ख़िदमत करने का सेंटर है।

इस्लामी हिस्ट्री में मस्जिद ने लोगों की तरबियत करने और सियासी व समाजी मुश्किलों को हल करने के सेंटर के तौर पर एक अहम रोल अदा किया है। यह मस्जिदें इस्लामी नज़रियात और वैल्यूज़ का मज़बूत क़िला रही हैं। इन्हीं मस्जिदों के ज़रिए मुसलमान अपनी कल्चरल और ईमानी विरासत को दुश्मन के हाथों बर्बाद होने से बचा सके हैं।

पुलों को गिराना

इस्लाम ने जितना ज़्यादा इन पुलों की अहमियत और इस्लामी समाज में उनके असर पर ध्यान दिया है उतना ही साम्राज इन पुलों को गिराने की प्लानिंग करता रहता है। यह बात कही जा सकती है कि हमारे ज़माने में सबसे बड़ा चैलेंज हमारे और साम्राजी दुनिया के बीच होने वाली वह जंग है जिसका मेन प्वाइंट इन पुलों को 'गिराना' और 'जोड़ना' है।

यह चैलेंज हर जगह देखा जा सकता है; स्कूल, कालेज, रोड, मार्केट, आर्ट, मीडिया, लिट्रेचर, शायरी, रस्मो रिवाज, ज़बान, ज़िंदगी और सोचने समझने का अंदाज़... यानी यह हर जगह मौजूद है।

कल्चरल अटेक का मक़सद

साम्राज के पास अपना कोई कल्चर नहीं है। उसका असली मक़सद दौलत और दुनिया कमाना है। उसे यह पता है कि जब तक मुसलमान क़ौम अपने ख़ूबसूरत बीते हुए कल और अज़ीम कल्चर से जुड़ी रहेगी तब तक वह साम्राज के हर नज़रियाती हमले का मुक़ाबला करती रहेगी और उसे यह भी पता है कि इस बहादुरी और अपनी बात पर अटल रहने की वजह मुसलमानों का दीन और दीनी कल्चर है। इसलिए वह उस वक़्त तक

English Medium

मुसलमानों के पास मौजूद दौलत के ख़ज़ानों तक नहीं पहुँच सकता जब तक उनकी सोच को अपना क़ैदी न बना ले और उन्हें उनके दीन और कल्चर से दूर न कर दे क्योंकि जब कोई क़ौम अपनी कल्चरल पहचान खो बैठती है और दूसरे कल्चर पर डिपेंड हो जाती है तो उसके पास अपने कल्चर से मुक़ाबला करने की ताक़त बाक़ी नहीं रह पाती।

वेस्टर्न कल्चर को बढ़ावा देने वाले लोग

इस्लामी दुनिया को उसकी कल्चरल विरासत से दूर करने और वेस्टर्न कल्चर को बढ़ावा देने के लिए दो लोगों ने बहुत ज़्यादा कोशिश की है। एक लीडर्स और दूसरे नाम भर के रिफ़ार्मिस्ट्स ने; लीडर्स ने अपनी ताक़त से और दूसरे ग्रुप ने अपनी ज़बान और क़लम से।

इन लोगों ने तरक़्क़ी और माडर्निज़्म के बहाने वेस्टर्न कल्चर को बढ़ावा दिया। अलग-अलग मुल्कों में वेस्टर्न कल्चर के दीवाने बहुत से पढ़े-लिखे लोगों ने अलग-अलग अंदाज़ में मुसलमानों को इस्लामी कल्चर से दूर होने और वेस्टर्न कल्चर अपनाने के लिए समझाना शुरु कर दिया। उन सबका कॉमन प्वाइंट यह थाः

आज एजुकेशन और टेक्नॉलोजी के मैदान में पश्चिमी दुनिया हम से बहुत आगे निकल चुकी है। अगर हम भी तरक़्क़ी करना चाहते हैं तो हमें भी उन्हीं के रास्ते पर चलना होगा, उन्हीं की तरह सोचना होगा और उन्हीं का लाईफ़-स्टाइल अपनाना होगा। यहाँ तक कि रहन-सहन, बोल-चाल और लिबास पहनने के मामले में भी उनकी नक़ल करना होगी।

ऐजुकेशन, टेक्नॉलोजी और कल्चर में फ़र्क़

इन लोगों की सबसे बड़ी ग़लती यह है कि इन्होंने साइंस व टेक्नॉलोजी और कल्चर को एक मान लिया है जबकि इन तीनों में फ़र्क़ है।

एजुकेशन और टेक्नॉलोजी के जिन मैदानों में हम कमज़ोर हैं हमें मजबूरी की वजह से वेस्टर्न मुल्कों के ज़रिए अपनी इस कमज़ोरी को दूर करना चाहिए लेकिन दीन, अख़लाक़, कल्चर, अक़ाएद और फ़लसफ़े में तो हम मज़बूत हैं इसलिए हमें इन चीज़ों से दूर नहीं होना चाहिए।

टेक्नॉलोजी में वेस्टर्न दुनिया की तरक़्क़ी ने उनकी आँखों को इतना चकाचौंद कर दिया था कि वह अपनी शख़्सियत, विरासत और कल्चर सब कुछ भुलाकर उनकी गोद में जाकर बैठ गए और इस्लामी कल्चर पर एतराज़ करने लगे।

अगर किसी क़ौम को अपनी कल्चरल विरासत का एहसास हो और वह अपने कल्चरल उसूलों की पाबंद हो तो दूसरी क़ौमों से एजुकेशन और टेक्नॉलोजी लेते हुए भी अपना कल्चर बचाए और संभाले रखती है।

कल्चरल अटेक के रास्ते
तुर्की में अरबी स्क्रिप्ट को लेटिन स्क्रिप्ट में बदल देना

तुर्की लीडर, मुस्तफ़ा कमाल अतातुर्क जिसने उस्मानी हुकूमत का तख़्ता उलट कर तुर्की में एक बेदीन और नेशनलिश्ट हुकूमत की बुनियाद डाली थी, उसने सबसे ज़्यादा इस बात की कोशिश की कि मुसलमानों को वेस्टर्न कल्चर अपनाने पर मजबूर करे और उन्हें उनकी तहज़ीब और कल्चर से दूर कर दे।

लिट्रेचर, दो नस्लों के बीच नज़रियाती और कल्चरल रिश्ते का सबसे मज़बूत मीडियम होता है। अगर स्क्रिप्ट बदल दी जाए तो नई नस्ल अपनी हिस्ट्री और कल्चर से दूर हो जाएगी। साम्राजी ताक़तें भी सिर्फ़ टहनियाँ और पत्ते नहीं काटती हैं बल्कि पेड़ की जड़ पर हमला करती हैं ताकि पूरा पेड़ ख़त्म हो जाए। तुर्की में भी यही हुआ कि जब पुरानी और नई नस्ल के कनेक्शन का सबसे मज़बूत मीडियम ख़त्म हो गया तो नई नस्ल अपने दीन और मज़हब से भी दूर हो गई। वह क़ुरआन, हदीस, हिस्ट्री, अख़लाक़, फ़िक़ह और अक़ीदे की किताबें नहीं पढ़ सकती थी। स्क्रिप्ट बदलने की वजह से लाखों किताबें बेकार हो गईं और बेशुमार लाइब्रेरियाँ वीरान हो गईं।

कमाल अतातुर्क ने इसके साथ बहुत से काम और भी किए जैसे स्कूलों में दीनी तालीम पर पाबंदी, औरतों को हिजाब न करने पर मजबूर करना और स्कूलों में कल्चरल प्रोग्रामों के बहाने लड़कों और लड़कियों के एक साथ डाँस और ड्रामों के प्रोग्राम करवाना वग़ैरा।

मिस्र और ईरान में भी बहुत से बहानों के साथ कोशिशें हुईं कि अरबी स्क्रिप्ट लेटिन स्क्रिप्ट से बदल दी जाए लेकिन उन्हें हार का मुँह देखना पड़ा।

स्कूलों पर क़ब्ज़ा

साम्राज ने इस्लामी दुनिया में बहुत से स्कूल और युनिवर्सिटीज़ बनाईं, जिनका मक़सद नई नस्ल को उनके कल्चर से दूर करना था। ईसाईयों ने इस से सबसे ज़्यादा फ़ाएदा उठाया। उनका असल मक़सद नई नस्ल पर अपना मज़हब लागू करना नहीं बल्कि उन्हें उनकी तहज़ीब और कल्चर से दूर करना था।

पश्चिमी साम्राज ने इस बात को अच्छी तरह समझ लिया था कि वह स्कूलों, कालेजों और युनिवर्सिटियों पर क़ब्ज़ा करके नई नस्ल को उसकी कल्चरल विरासत से आसानी से दूर कर देगा जिस से वह ख़ुद बख़ुद वेस्टर्न कल्चर और नज़रियों को अपना लेंगे। इस काम के लिए उन्होंने स्कूलों में कोर्सेज़ और सेलेबस तैयार करने से लेकर कल्चरल प्रोग्रामों तक हर चीज़ को अपने मक़सद के लिए इस्तेमाल किया।

साज़िश का नतीजा

साम्राज ने इन साज़िशों के ज़रिए हमारी नई नस्ल को न सिर्फ़ पुरानी नस्ल बल्कि उसकी अज़ीम हिस्ट्री और कल्चर से भी दूर कर दिया यहाँ तक कि हमारे घर भी उनकी घुसपैठ से नहीं बच सके और घरों में भी नंगापन और बेहयाई लाकर उन्होंने हमारे घरों को असली मक़सद और परवरिश से दूर कर दिया। ●

इमाम ख़ुमैनी के आख़िरी अलफ़ाज़

3 JUNE WAFAT

"मैं पूरे सुकून, मुतमइन दिल, ख़ुश व ख़ुर्रम रूह और पुर उम्मीद ज़मीर के साथ ख़ुदा के फ़ज़्लो-करम के साए में अपनी बहनों और भाइयों से इजाज़त लेकर अपनी आख़िरी मंज़िल की तरफ़ रवाना हो रहा हूँ। मुझे आपकी नेक दुआओं की सख़्त ज़रूरत है और ख़ुदाए रहमान व रहीम से मेरी दुआ है कि वह मेरी उन ग़लतियों और कमियों को माफ़ फरमाए जो आप सब की ख़िदमत करते हुए मुझ से हुई हैं। अपनी क़ौम से भी मुझे उम्मीद है कि वह मेरी तरफ़ से होने वाली कमियों को नज़रअन्दाज़ करेगी और पूरी ताक़त, हिम्मत और मज़बूत इरादे के साथ आगे बढ़ती रहेगी।"

यह थे इस्लामी इन्क़िलाब के फ़ाउंडर, इमाम ख़ुमैनी[रह०] के वसिय्यतनामे के आख़िरी अलफ़ाज़। ये उस लीडर की ज़िन्दगी के आख़िरी अलफ़ाज़ हैं जिसने अपनी क़ौम को ज़ुल्मो-सितम की चक्की में पिसने से निजात दिलाई थी और उसको बेहयाई और बुराईयों के समंदर में डूबने से बचा लिया था।

दुआ

सै. आले हाशिम रिज़वी
aleyhashim@yahoo.co.in

इन्सान जब परेशानियों, उलझनों और नाकामियों में घिरता है तो उसके हाथ अपने आप दुआ के लिए उठ जाते हैं। खुदा भी दुआ के लिए अपने बंदों के उठे हुए हाथों को बहुत पसंद करता है। क़ुरआने मजीद की सूरए मोमिन की आयत/60 में वह फ़रमाता है, ''मुझ से दुआ करो, मैं क़ुबूल करूँगा। और यक़ीनन जो लोग मेरी इबादत से अकड़ते हैं वह बहुत जल्दी ज़लील होकर जहन्नम में जाएंगे।''

रसूले इस्लाम[स॰] ने दुआ को मोमिन का हथियार बताया है। दरअसल यह एक ऐसा हथियार है जिसको अगर सलीक़े और नेक इरादे के साथ इस्तेमाल किया जाए तो इसका रिज़ल्ट पॉज़िटिव ही मिलता है। हमारे नबियों और इमामों ने दुआ की बहुत अहमियत बयान की है। इमाम जाफ़र सादिक़[अ॰] ने तो दुआ को तेज़ धार वाले किसी भी हथियार से ज़्यादा असरदार बताया है और उसे गुनाहों का कफ़्फ़ारा भी क़रार दिया है। इसी तरह ''सहीफ़-ए-कामेला'' जैसी दुआओं के कलेक्शन का तोहफ़ा देने वाले इमाम ज़ैनुलआबेदीन[अ॰] फ़रमाते हैं, ''दुआ मुसीबतों को टालने और बलाओं से बचने का बेहतरीन ज़रिया है।'' दुनिया का हर इन्सान दुआ की ज़रूरत को महसूस करता है। इस्लाम में सबसे बड़ी इबादत नमाज़ है और नमाज़ में सबसे अहम सूरए फ़ातेहा है जो कि एक दुआ ही है। इससे दुआ की अहमियत का बख़ूबी अंदाज़ा होता है। दुआ वही करता है जिसे अल्लाह पर यक़ीन होता है। यह ऐसा यक़ीन है जो इन्सान को नाकामियों के बाद भी मायूस नहीं होने देता। दुआ बंदे और माबूद के बीच के रिश्ते को मज़बूत बनाती है। दुआ करने की आदत इन्सान में ग़ुरूर पैदा नहीं होने देती। जब हम ख़ुदा के सामने अपनी हाजत के लिए हाथ फैलाते हैं तो हमें अपनी कमज़ोरी का एहसास रहता है, यही वह एहसास है जो हमें ग़ुरूर से दूर रखता है।

अक्सर कुछ लोग नादानी की वजह से यह कहते हैं कि ख़ुदा तो सब कुछ जानता है। वह हमारी हालत और हाजत को अच्छी तरह पहचानता है, फिर बार-बार दुआ माँगने की क्या ज़रूरत है? इसका जवाब हमें हज़रत अली[अ॰] के एक इरशाद में मिलता है। वह फ़रमाते हैं, ''अल्लाह इस बात को पसंद करता है कि हम अपनी ज़रूरतों को उसकी बारगाह में पेश करें। बार-बार दुआ करके जब हम अल्लाह की रहमत के दरवाज़ों को खटखटाएंगे तो वह हमारे लिए खुल जाएंगे।

दुआओं से होने वाले फ़ाएदे और उसके असर को देखते हुए अब तो साइंटिस्ट्स भी इसकी अहमियत को मानने पर मजबूर हो गए हैं। दुआ अब रिसर्च का एक टॉपिक बन चुकी है। कुछ दिनों पहले अमेरिका के Templeton Foundation की एक रिसर्च टीम ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि वह मरीज़ जिनके लिए दुआएं की गईं उनको जिस तरह से फ़ाएदा हुआ वह हैरान करने वाला है। यह रिसर्च 1800 मरीज़ों पर की गई जिसमें 10 साल का टाइम लगा था। फ्रांस के एक हॉस्पिटल ने भी दिल के मरीज़ों पर रिसर्च की और इसी नतीजे पर पहुँचा कि जिन मरीज़ों के लिए दुआ की गई थी वह दूसरे मरीज़ों के मुक़ाबले जल्द सही हो गए थे। ऐसा नहीं है कि इस तरह की रिसर्च हमारे मुल्क में नहीं हुई है। टाइम्स ऑफ़ इंडिया के एक सर्वे के मुताबिक़ दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता और बंग्लौर के 90% लोगों ने यह क़ुबूल किया है कि दुआओं से उन्हें बहुत फ़ाएदा पहुँचा है।

जिस तरह से हर काम का एक तरीक़ा और सलीक़ा होता है उसी तरह दुआ माँगने का भी मुनासिब ढंग हमें बताया गया है। इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने इस बारे में फ़रमाया है, ''जब तुम में से कोई अपने ख़ुदा से दुआ माँगे तो पहले ख़ुदा की तारीफ़ करे, पैग़म्बर[स०] और उनकी औलाद पर सलवात पढ़े, अपने गुनाहों से तौबा करे और फिर अपनी हाजत तलब करे।''

दुआ हमेशा बहुत सिम्पल अलफ़ाज़ में माँगनी चाहिए यानी उसमें किसी तरह की बनावट नहीं होनी चाहिए। आपके अंदाज़ में जितनी सादगी, जोश, तड़प और ख़ुलूस की झलक नज़र आए उतना ही बेहतर है। कुछ लोग नासमझी की वजह से दुआ के क़ुबूल न होने पर शिकवा करने लगते हैं। वह यह सवाल भी उठाते नज़र आते हैं कि जब क़ुरआन में ख़ुदा ने दुआ क़ुबूल करने की बात कही है तो फिर कुछ दुआएं क़ुबूल क्यों नहीं होतीं? यहाँ पर मैं बताना चाहूँगा कि ख़ुदा को किसी काम के लिए पाबंद नहीं किया जा सकता। अक्सर कुछ दुआओं का क़ुबूल न होना भी हमारे हक़ में बेहतर होता है। इस हक़ीक़त को ख़ुदा समझता है लेकिन बंदे जान नहीं पाते हैं। इसके साथ ही हमें ग़ौरो फ़िक्र करके यह समझने की भी कोशिश करनी चाहिए कि कहीं दुआ माँगने में हमसे कोई कमी तो नहीं हो रही है। वह कौन से रीज़न हैं जो दुआ को क़ुबूल नहीं होने दे रहे हैं?

एक बार किसी शख़्स ने हज़रत अली[अ०] से दुआ क़ुबूल न होने की शिकायत करते हुए कहा कि जब ख़ुदा कहता है कि मुझसे दुआ करो मैं क़ुबूल करूँगा तो फिर मेरी दुआ क्यों क़ुबूल नहीं हो रही है? इमाम[अ०] ने जवाब दिया, ''आठ ऐसी चीज़ें हैं जो तुम्हारी दुआ को क़ुबूल होने से रोक रही हैं।'' उस शख़्स ने हैरानी से पूछा, ''वह आठ चीज़ें कौन सी हैं?'' इमाम[अ०] ने जो आठ चीज़ें बयान कीं वह इस तरह हैं:

1- तुमने ख़ुदा को पहचान कर भी उसका हक़ अदा नहीं किया।

2- तुम उसके भेजे हुए नबियों पर ईमान तो रखते हो लेकिन उसकी सुन्नत पर अमल नहीं करते।

3- तुम उसकी किताब क़ुरआन को तो पढ़ते हो लेकिन उस पर अमल नहीं करते।

4- तुम ख़ुदा के अज़ाब से तो डरते हो लेकिन उसके हुक्म की नाफ़रमानी भी करते हो।

5- तुम जन्नत की चाहत तो रखते हो लेकिन काम ऐसे करते हो जो तुम्हें उससे दूर ले जाते हैं।

6- ख़ुदा की नेमत का फ़ाएदा उठाते हो लेकिन सच्चे दिल से उसका शुक्र अदा नहीं करते।

7- तुम शैतान को बुरा तो कहते हो लेकिन तुम्हारे अमल ऐसे हैं जिससे लगता है कि तुम वाक़ई उसके मुख़ालिफ़ नहीं हो।

8- तुम दूसरों के ऐब तो ख़ूब गिनाते हो लेकिन अपने ऐब नहीं देखते।

यह 8 रीज़न बताकर हज़रत अली[अ०] उस शख़्स से फ़रमाते हैं कि ऐसी हालत में तुम ख़ुदा से कैसे उम्मीद करते हो कि वह तुम्हारी दुआ क़ुबूल करे, जबकि तुमने ख़ुद दुआ के क़ुबूल होने के दरवाज़े बंद कर रखे हैं।

आख़िर में मैं एक बात क्लियर कर देना बहुत ज़रूरी समझता हूँ कि जिस तरह किसी मरीज़ के ठीक होने के लिए दुआ के साथ सही दवा और इलाज की भी सख़्त ज़रूरत होती है, उसी तरह किसी भी मुसीबत और परेशानी को दूर करने के लिए या किसी मक़सद को हासिल करने के लिए दुआ के साथ अमल और कोशिश में भी कोई कमी नहीं होनी चाहिए। हज़रत अली[अ०] के मुताबिक़ दुआ बिना अमल के बिल्कुल वैसे ही है जैसे बिना कमान के तीर चलाना। हज़रत अली[अ०] का यह इरशाद हमें बताता है कि दुआओं में असर तो होता है लेकिन अमल की भी बहुत अहमियत होती है। हमें अपनी बेहतरी के लिए दुआओं के साथ अमल की सूरत में तदबीर भी करते रहना चाहिए। अमल की कमी दुआओं को कमज़ोर कर देती है।

मुश्किल पड़े तो नाम ख़ुदा का लिया करो
फैला के हाथ दिल से दुआ भी किया करो
हुस्ने अमल में आए न हाशिम कोई कमी
इस बात का भी दिल में तहय्या किया करो

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

यक़ीन रखो कि क़ुरआन एक बेलौस नसीहत करने वाला है और ऐसा हादी है जो गुमराह नहीं करता, एक ऐसा बोलने वाला है जो झूठ नहीं बोलता।

जिस किसी ने भी क़ुरआन के साथ हमनशीनी की तो बिना किसी कमी और इज़ाफ़े के नहीं उठा, इज़ाफ़ा उसकी हिदायत में हुआ और कमी उसकी जिहालत में हुई।

जिस किसी ने अल्लाह के कलाम को अपने लिए रहनुमा बनाया, उसकी मज़बूत रास्ते की तरफ़ हिदायत होगी।

सबसे अफ़ज़ल ज़िक्र क़ुरआन है। इसके ज़रिए सीने खुल जाते हैं और इंसान के अंदर नूर आ जाता है।

क़ुरआन दिलों की बहार है। इसमें उलूम के चश्में हैं और दिलों को इसके अलावा और किसी चीज़ से जिला नहीं मिलती।

बेशक क़ुरआने मजीद का ज़ाहिर ताअज्जुब भरा और नेक है। इसका बातिन गहरा है। इसके अजाएबात ख़त्म होने वाले नहीं हैं और अंधेरे इसके बिना दूर नहीं हो सकते। ●

मैं सबसे ख़ूबसूरत हूँ

■ बाक़िर रज़ा काज़मी

ख़ूबसूरती अल्लाह की दी हुई ख़ूबसूरत नेमतों में से एक नेमत है। वैसे हक़ीक़त में अगर देखा जाए तो पूरा संसार ही अपनी जगह पर ख़ूबसूरत है और जिस चीज़ पर भी आप नज़र डालें वह अपनी कुछ ख़ास क्वालिटीज़ के साथ अपनी जगह एक ख़ूबसूरती रखती है। ख़ुद अल्लाह ''जमील'' है और ''जमाल'' यानी ख़ूबसूरती को पसंद भी करता है। जब ऐसा है तो तय है कि जो कुछ भी ख़ुदा बनाएगा वह हसीन, जमील और ख़ूबसूरत ही होगा।

शायद आपको यह जानकर ताज्जुब हो दुनिया में कुछ लोग ऐसे हैं जो अपने को दुनिया का सबसे ख़ूबसूरत इन्सान मानते हैं और वह अपने इस दावे के लिए एक ख़ास दलील भी रखते हैं। बहरहाल यह कोई इतना बड़ा और अहम मसला नहीं है कि हम यह जानने की कोशिश करें कि ऐसे लोग कौन हैं जो अपने आप को सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत जानते हैं और उनकी दलीलें क्या हैं। इस बारे में जानना और कुछ लिखना भी कोई इतना ज़रूरी नहीं है लेकिन...

जब मैंने इस सवाल के जवाब में कि ''क्या आप सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत हैं? और अगर हैं तो इसकी क्या दलील है?'' एक दस साल की लड़की का जवाब पढ़ा तो मैं हैरत में पड़ गया और मुझे उसकी ज़ाहिरी ख़ूबसूरती से कहीं ज़्यादा उसके फ़िक्री हुस्न और उसकी सोच की ख़ूबसूरती पर ताज्जुब हुआ!

उसका जवाब क्या था वह मैं आपको बाद में बताऊँगा, उस से पहले यह बता दूँ कि हॉलैंड के मिशेल शोल्टस कर्ज़बज़ानोफ़िस्की नाम के एक फ़ोटोग्राफ़र ने दुनिया के पाँचों कांटीनेंट्स का सफ़र किया ताकि दुनिया के अलग-अलग मुल्कों में रहने वाले लोगों से यह दो सवाल करे:

1- ख़ूबसूरती किसे कहते हैं?

2- क्या आप सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत हैं?

उसने 10 मुल्कों से फ़ोटोज़ को इकटठा किया और उन्हें ''दुनिया का सबसे ख़ूबसूरत शख़्स'' नामी एक किताब में पब्लिश किया है।

मिशेल ने कई मुल्कों के रहने वालों से यह दो सवाल किए और सब ने अपने-अपने जवाब अपनी दलील के साथ उसके सामने रखे।

किसी ने कहा कि मैं अपनी बड़ी-बड़ी आँखों की वजह से सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत हूँ।

किसी ने कहा मेरे बाल बहुत अच्छे हैं इसलिए मैं ख़ूबसूरत हूँ।

किसी ने कहा कि जब मैं हंसती हूँ तो मेरे गालों में डिंपल पड़ जाते हैं, इसलिए लोग मुझे ख़ूबसूरत कहते हैं।

एक ब्लाइंड हिन्दुस्तानी लड़की ने कहा कि मैं इसलिए सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत हूँ क्योंकि जो भी मुझे देखता है वह मुझसे कहता है कि ''तुम बड़ी सुन्दर हो।''

किसी ने अपने रंग-रूप को दलील बनाया तो किसी ने अपनी चाल को।

किसी का कहना था क्योंकि मेरी आँखें सुनहरी हैं इसलिए मैं ख़ूबसूरत हूँ।

किसी ने अपनी ख़ूबसूरती को लेकर अपने माँ-बाप के गीत गाए।

और किसी ने अपनी ख़ूबसूरती की कसौटी अपने लिए आने वाले रिश्तों की तादाद को बताया।

लेकिन जब यह फ़ोटोग्राफ़र ईरान पहुँचा और 10 साल की मेहदिया आज़री नाम की बच्ची से सवाल किया तो उसने एक ऐसा जवाब दिया जो शायद मेरी नज़र में मिशेल के ''ख़ूबसूरती'' नाम के 5 साल के प्रोजेक्ट की जान थी। मेहदिया ने कहा,

''मैं इसलिए सबसे ख़ूबसूरत लड़की हूँ क्योंकि मैं नमाज़ पढ़ती हूँ।''

उस छोटी बच्ची के जवाब ने मुझे तो हिला दिया, आप पर इसका क्या असर हुआ, मुझे नहीं मालूम।

इसके जवाब से जो बात मेरी समझ में आई वह यह कि ख़ूबसूरती सिर्फ़ चेहरे या बदन की नहीं होती बल्कि एक ख़ूबसूरती और होती है जो रूह की ख़ूबसूरती कही जाती है।

हक़ीक़त में हर इन्सान एक आर्टिस्ट की तरह होता है जो अपने कैरेक्टर के ब्रश से अपनी पर्सनालिटी को डिज़ाइन करता है। अगर एक मुसलमान है और अच्छा मुसलमान है तो वह एक

अच्छे आर्टिस्ट की तरह होता है जो डिज़ाइनिंग और पेंटिंग अच्छी तरह जानता है। और एक मुसलमान जो सबसे अच्छा ब्रश अपनी पर्सनालिटी को डिज़ाइन करने के लिए अपने हाथ में ले सकता है वह नमाज़ है।

रसूले इस्लाम[स॰] फ़रमाते हैं, ''नमाज़ मोमिन का नूर है।'' नूर, रौशनी, लाइट जहाँ भी हो, जिसके साथ भी हो वह हुस्न और ख़ूबसूरती ही नहीं बल्कि कभी-कभी डर और वहशत भी इन्सान में पैदा कर देती है।

दिन इसलिए ख़ूबसूरत होता है क्योंकि उसमें सूरज की रौशनी होती है।

फ़ानूस उस वक़्त हसीन और दिलरुबा होता है जब उसमें चिराग़ रौशन हो। रात उस वक़्त हसीन होती है जब उसमें सितारे टिमटिमा रहे हों। और मोमिन उस वक़्त जगमगाता है और उसमें उस वक़्त ख़ूबसूरती पैदा होती है जब उसमें नमाज़ का चिराग़ रौशन हो...।

आख़िर में एक बात आपको यह बता दूँ कि उस बेचारे ''मिशेल'' ने अपनी उम्र के 5 साल ''ख़ूबसूरती'' नाम के जिस प्रोजेक्ट पर गंवाए हैं उसको एक नाकाम प्रोजेक्ट समझा गया।

लेकिन! अगर मुझ से पूछें तो मेरी नज़र में उसका यह प्रोजेक्ट एक कामयाब प्रोजेक्ट था। आप क्या सोचती हैं?!!! ●

एक चरवाहा

कहते हैं कि जब हज्जाज बिन यूसुफ़ अपने गुलामों और सिपाहियों के साथ पूरी शानो शौकत के साथ हुकूमत बनाने के लिए यमन जा रहा था तो रास्ते में जहाँ भी पड़ाव डाला जाता, वहीं हज्जाज के लिए एक अलग ख़ेमा लगा दिया जाता था। अच्छा और लज़ीज़ खाना दिया जाता और कुछ देर आराम करने के बाद दोबारा सफ़र शुरू कर दिया जाता था।

एक बार जब किसी जंगल में पड़ाव डाला गया तो उस वक़्त बहुत सख़्त गर्मी थी इसलिए ख़ेमे के पर्दे उठा दिए गए। जब खाने का वक़्त हुआ तो दस्तरख़्वान बिछाया गया और लज़ीज़ खाने और मिठाईयां सजा दी गईं।

अभी हज्जाज ने खाने की तरफ़ हाथ बढ़ाया ही था कि उसे दूर से कुछ भेड़ें नज़र आईं जिन्हें एक जवान चरवाहा चरा रहा था। उस जवान ने गर्मी की वजह से एक भेड़ के बच्चे को अपने सर पर उठा रखा था ताकि उसका सर गर्मी से बचा रहे लेकिन उसका पूरा बदन धूप में तप रहा था।

हज्जाज दूर बैठा यह सब देख रहा था। वह फ़ौरन ख़ेमे से बाहर निकल आया और अपने गुलामों से कहा कि जाकर उस चरवाहे को मेरे पास ले आओ।

गुलाम गए और चरवाहे को हज्जाज का पैग़ाम दिया। चरवाहे ने बहुत मना किया और कहा कि मुझे किसी अमीर से नहीं मिलना है लेकिन गुलाम उसे मजबूर करके हज्जाज के पास ले ही आए।

''मैंने देखा कि तुम गर्मी से परेशान हो तो मुझे बहुत दुख हुआ। आओ मेरे ख़ेमे में आ जाओ और कुछ देर आराम कर लो।'' हज्जाज ने चरवाहे से कहा।

''मैं आराम नहीं कर सकता।'' चरवाहे ने साफ़ इंकार कर दिया।

''क्यों?'' हज्जाज ने हैरत से पूछा।

''मैं मज़दूर हूं और मुझे भेड़ें चराने के लिए दी गई हैं इसलिए मुझे भेड़ों को छोड़ कर आराम नही करना चाहिए।'' जवान चरवाहे ने बताया।

''अच्छा अंदर आकर कुछ खा लो, फिर चले जाना।'' हज्जाज ने कहा।

''मैं नहीं खा सकता।'' चरवाहे ने फिर साफ़ इंकार कर दिया।

''क्यों?'' हज्जाज बिन यूसुफ़ से फिर नहीं रहा गया।

''क्योंकि किसी और से वादा कर रखा है।'' चरवाहे ने टका सा जवाब दिया।

''क्या इससे बेहतर भी कोई और जगह है?'' हज्जाज ने दिलचस्पी से पूछा।

''हां!'' चरवाहे ने कहा।

''वहां का खाना भी शाही खाने से बेहतर है?''

''हां!'' एक बार फिर चरवाहे ने कहा।

''तो बताओ किस के मेहमान हो?'' हज्जाज ने फिर पूछा।

''मैं ख़ुदा का मेहमान हूं। मैं रोज़े से हूं और रोज़ेदार अल्लाह का मेहमान होता है। आज इफ़्तार उसी के पास है।'' चरवाहे ने जवाब दिया।

''आज रोज़ा तोड़ डालो। कल रख लेना।'' हज्जाज ने कहा।

''मैं एक शर्त पर रोज़ा तोड़ूंगा। आप मुझे लिख कर दीजिए कि मैं कल तक ज़िंदा रहूंगा ताकि कल रोज़े की क़ज़ा कर लूं।'' चरवाहे ने कहा।

''ऐसा मज़ेदार खाना तुम्हें फिर कभी नहीं मिलेगा।'' हज्जाज ने लालच दी।

''क्या उसको मज़ेदार बनाने वाले आप हैं?'' चरवाहे ने दो टूक जवाब दिया।

चरवाहे की दो टूक बात-चीत सुनकर हज्जाज ख़ामोश हो गया। ●

ख़ुदा का शुक्रिया

मौलाना फ़ैय्याज़ बाक़िर हुसैनी

क्या आप ने अब तक ऐसे लोगों का शुक्रिया अदा किया है जिन्होंने आपकी मदद या आपके साथ कोई अच्छाई की हो? ऐसा ज़रूर हुआ होगा। लेकिन सवाल पैदा होता है कि आख़िर क्यों? वह इसलिए कि इन्सान की अक़्ल और उसका नेचर उसे इस बात पर उकसाता है कि ऐसे लोगों को Thank you बोला जाए जो उसके साथ अच्छाई करते हैं या मुश्किल घड़ी में उसके काम आते हैं। यानी यह कि नेमत की वजह से इन्सान को शुक्रिया का मौक़ा मिलता है और उसकी अक़्ल और नेचर ही उसको शुक्रिया अदा करने पर मजबूर करता है। यहाँ तक कि अगर कोई हमारा दोस्त पढ़ाई में हमारी मदद करे, अपनी कोई कापी-किताब हमें दे दे, हमारे पढ़ने-लिखने में हमारी मदद करे, क्लास में अपनी कमियों को दूर करने में हमारी मदद करे या किसी मुश्किल में हमारे काम आए... इन तमाम हालतों में हम ख़ुद को उसका एहसानमंद समझते हैं और चाहते हैं कि हम भी कभी उसकी इन अच्छाईयों का जवाब दें।

हम सब इस बात को मानते हैं कि सबसे अच्छी नेमतें अल्लाह ने हमें दी हैं और जो नेमतें उसने हमें दी हैं वह कोई और नहीं दे सकता।

उसने हमें अक़्ल, जान, सोच, इरादा और सलाहियतें दी हैं।

ज़िंदगी जैसी अज़ीम नेमत दी है और उसी के लिए इस पूरी दुनिया को आबाद किया है।

ज़िंदगी का रास्ता दिखाने को रसूल भेजे हैं।

वह पैदा करने वाला है हम पैदा होने वाले हैं।

उसे किसी की कोई ज़रूरत नहीं है, वह सब कुछ कर सकता है। हम उसके मोहताज हैं और हमारी सारी ज़रूरतों को भी वही पूरा करता है और हम उसकी मदद के बग़ैर कुछ भी नहीं कर सकते।

अगर हम पढ़ते-लिखते भी हैं तो यह भी उसी का करम है क्योंकि उसी ने हमें यह सलाहियत दी है।

ज़िंदगी के लिए साँस की ज़रूरत होती है और साँस लेने के लिए ज़रूरी चीज़ें भी हमारे ख़ुदा ने ही हमें दी हैं।

एक मोहताज बंदे से बंदगी के सिवाए और हो भी क्या सकता है?

एक कमज़ोर इन्सान से ख़ुदा के आगे सर झुकाने के अलावा और क्या उम्मीद रखी जा सकती है?

एक आदमी जो नेमतों में डूबा हुआ हो, उस से शुक्र के सिवाए किस चीज़ की उम्मीद रखी जा सकती है?

हम सबके पास अक़्ल है, हम सोचते-समझते भी हैं और यह भी जानते हैं कि किसने हमें यह सब नेमतें दी हैं, तो ऐसे में अगर हम अल्लाह की इबादत करते हैं, उस से माँगते हैं, उसके सामने सर झुकाते हैं, तन्हाई में बैठकर उस से बातें करते हैं या नमाज़ पढ़ते हैं तो सिर्फ़ इसलिए ताकि यह बताएं कि वह ख़ुदा है और हम उसके बंदे।

अगर हम इबादत न करें तो इसका मतलब यह है कि हम अपने असली मक़सद को पूरा नहीं कर रहे हैं क्योंकि क़ुरआन करीम में अल्लाह फ़रमाता है, "मैंने जिन्नों और इन्सानों को सिर्फ़ अपनी इबादत के लिए पैदा किया है।" (1)

एक और दूसरी जगह पर है, "मेरी इबादत करना कि यही सीधा रास्ता है।" (2)

ऐसे में अगर हम इस सही और सीधे रास्ते से हट जाएं और अल्लाह की इबादत न करें, उसका कहा न सुनें तो इसका मतलब यह है कि हम नाशुक्री कर रहे हैं और उसकी रहमत और करम से ख़ुद को दूर कर रहे हैं और जो अल्लाह से दूर हो जाता है वह शैतान और उसके मानने वालों के जाल से बच नहीं सकता। सिर्फ़ अल्लाह की इबादत ही आदमी को ताक़त और इज़्ज़त देकर उसे दूसरी ज़ालिम ताक़तों के चंगुल से बचाती है।

नमाज़

हमारे नमाज़ पढ़ने से अल्लाह को कोई फ़ाएदा नहीं होता है और न ही हमारे नमाज़ न पढ़ने से उसे कोई नुक़सान पहुँचता है। अगर हम चाहते हैं कि अपनी रूह को बनाएं, संवारें तो यह सिर्फ़ नमाज़ से ही हो सकता है। और अगर हम नमाज़ को छोड़ देते हैं तो ख़ुद हम ही उसके दुनियावी और रूहानी फ़ाएदों और बरकतों से दूर हो जाएंगे और फिर उस दुनिया में भी अज़ाब से नहीं बच सकते।

कमाल तो उसी वक़्त है जब हम अल्लाह के

बंदे भी रहें और उसकी इबादत भी करें। उसकी इबादत का सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि हम नमाज़ पढ़ें। नमाज़ का मतलब है अल्लाह की इबादत, उसके सामने सर झुकाना, उस से बातें करना और उस से माँगना। यह काम हम दिन में कम से कम पाँच बार करते हैं।

नमाज़ से हम अल्लाह को याद रखते हैं और उसकी याद हमें गुनाह, गुमराही, फ़साद और बुराईयों से बचाती है।

जो अल्लाह का बंदा बन जाता है फिर वह दुनियावी ख़ाहिशों, हवस और शैतान के क़ब्ज़े में नहीं आ सकता।

जो नमाज़ पढ़कर अल्लाह के सामने सर झुका देता है वह फिर किसी भी दूसरी ताक़त के सामने हार नहीं मान सकता।

हम नमाज़ इसलिए पढ़ते हैं ताकि हमें हमेशा याद रहे कि हम बंदे हैं और वह हमारा पालने वाला है।

क़ुरआन में है, ''मुझे याद रखने के लिए नमाज़ क़ाएम करो।'' [3]

एक दूसरी आयत में है, ''नमाज़ हर बुराई और बदकारी से रोकने वाली है।'' [4]

लेकिन अब सवाल यह है कि नमाज़ कैसे पढ़ी जाए?

हम जो नमाज़ पढ़ते हैं, यह ख़ुदा और रसूल के हुक्म की वजह से पढ़ते हैं। इसलिए ज़रूरी है कि नमाज़ के बारे में जो अहकाम, हदीसों और तौज़ीहुल मासएल में मौजूद हैं, उन्हें जाना और समझा जाए ताकि जिस तरह अल्लाह का हुक्म है उसी तरह बिना किसी कमी के नमाज़ पढ़ी जा सके।

ख़ुदा, रसूल और इमामों ने नमाज़ और इबादत के कुछ आदाब बताए हैं जो इस तरह हैं:-

1- नमाज़ पूरी तवज्जो और ध्यान के साथ पढ़ी जाए यानी आदमी को नमाज़ पढ़ते वक़्त यह पता हो कि वह क्या पढ़ रहा है, क्या कह रहा है, किसके सामने खड़ा है...तवज्जो और ध्यान के बिना पढ़ी जाने वाली नमाज़ में कोई सवाब भी नहीं होता है। रसूले इस्लाम[स॰] फ़रमाते हैं, ''तवज्जो के साथ दो रकात पढ़ी जाने वाली नमाज़, बे-ध्यानी के साथ की जाने वाली शब बेदारी से अच्छी है।'' [5]

2- नमाज़ इश्क़ के साथ हो यानी ज़बरदस्ती और सुस्ती के साथ पढ़ी जाने वाली नमाज़ का कोई फ़ाएदा नहीं है। दिल में अल्लाह की मोहब्बत और लगाव के साथ नमाज़ पढ़ी जाए। यह समझते हुए नमाज़ पढ़ी जाए कि अल्लाह ही है जिसने हमें यह सब नेमतें दी हैं। रसूले इस्लाम[स॰] फ़रमाते हैं, ''नमाज़ मेरी आँखों का नूर है।''

नमाज़ से ऐसा शौक़ और इतनी मोहब्बत होना चाहिए कि अज़ान की आवाज़ कान में पड़ते ही हम अपने हर काम को छोड़ दें और अपने अल्लाह की बारगाह की तरफ़ दौड़ पड़ें।

3- ख़ुलूस के साथ हो। जितने भी दीनी काम और इबादतें हैं उन सब में ख़ुलूस का होना बहुत ज़रूरी है यानी सारी इबादतें और दीनी काम सिर्फ़ ख़ुदा के लिए ही होने चाहिएं। क़ुरआन मजीद में है, ''उन्हें सिर्फ़ इस बात का हुक्म दिया गया है कि अल्लाह की इबादत करें और इस इबादत को उसी के लिए ख़ालिस रखें।'' [6]

इबादतों और कामों में दिखावा भी एक तरह का शिर्क है और इस शिर्क की वजह से किसी भी दीनी काम की कोई क़ीमत नहीं रह जाती है। अल्लाह भी ऐसी इबादत को क़ुबूल नहीं करता जो दिखावे के लिए की जाती है और उस पर कोई सवाब भी नहीं दिया जाता है। नमाज़ एक बदन की तरह है और उस बदन की रूह ख़ुलूस है।

4- ख़ुशू होना चाहिए। यानी हमें चाहिए कि हम अपने ध्यान, सोच, ख़याल और तवज्जो को सिर्फ़ नमाज़ में लगाए रखें, इधर-उधर न देखें, अपने हाथों से न खेलें, दूसरों की बातें न सुनें, अपना बदन न हिलाएं वग़ैरा। अगर हम इन सारी बातों को ख़याल रखते हैं तो इसका मतलब यह है कि हम नमाज़ ख़ुशू के साथ पढ़ रहे हैं। एक हदीस में आया है, ''अल्लाह की इबादत इस एहसास के साथ करो कि वह तुम्हें देख रहा है।'' [7] अगर इस एहसास के साथ इबादत की जाए तो ख़ुशू अपने आप पैदा हो जाएगा।

एक तरफ़ जब हम नमाज़ के उन आदाब पर नज़र डालते हैं और दूसरी तरफ़ नबियों, इमामों, उलमा और अल्लाह के ख़ालिस बंदों की नमाज़ों को देखते हैं तो हमें अपनी नमाज़ को देखकर शर्मिंदगी होती है और हमारा सर शर्म से झुक जाता है। काश हम भी ऐसी नमाज़ पढ़ने लगें जैसी ख़ुदा चाहता है।

कोशिश करें कि पाबंदी के साथ और अव्वल वक़्त पर ही नमाज़ को पढ़ा जाए क्योंकि नमाज़ को हलका समझना, उसको अहमियत न देना और कभी पढ़ना और कभी न पढ़ना ऐसा गुनाह है जो आदमी को मासूमीन[अ॰] की शिफ़ाअत से दूर कर देता है।

इमाम जाफ़र सादिक़[अ॰] फ़रमाते हैं, ''जो नमाज़ को हलका समझता है उसको हमारी शफ़ाअत नहीं मिलेगी।''

1-सूरए ज़ारियात/56, 2-सूरए यासीन, 61, 3-सूरए कहफ/110, 4-सूरए अनकबूत/45, 5-बिहारुल अनवार, 84/259, 6-सूरए बय्यिनह/5, 7- मिस्बाहुश्शरीअत/8

ग़ीबत 2

■ आयतुल्लाह मकारिम शीराज़ी

समाज पर ग़ीबत का बुरा असर

1- ग़ीबत अगर समाज में हर तरफ़ फैल जाए तो समाज की एक बहुत क़ीमती दौलत कि जो भाईचारा, युनिटी और मोहब्बत है, ख़त्म हो जाती है साथ ही समाज की बुनियाद यानी हुस्ने ज़न और आपसी भरोसा भी उठ जाता है, क्योंकि ग़ीबत के रिवाज से लोग एक दूसरे की छुपी कमज़ोरियों को जान जाते हैं और क्योकि समाज के अक्सर लोगों में कुछ न कुछ कमियाँ और कमज़ोरियाँ होती हैं इसलिए इन कमज़ोरियों की आम जानकारी समाज में खुले तौर पर बद गुमानी पैदा कर देती है जिसकी वजह से आपसी अख़लाक़ और भाईचारगी भी ख़त्म हो जाती है और इस तरह समाजी ज़िंदगी से मिलने वाले फ़ाएदे ख़ुद-बख़ुद ख़त्म हो जाते हैं। रिज़ल्ट यह होता है कि लोग समाज से अलग-थलग ज़िंदगी गुज़ारने लगते हैं।

2- अकसर ग़ीबत समाज में फ़ितना, फ़साद, दुश्मनी और नफ़रत वग़ैरा की आग को भड़का देती है क्योंकि हो सकता है कि दूसरों के ढके ऐब उन हक़ों में दख़लअंदाज़ी की वजह बन जाएं या कम से कम इस तरह ऐसे लोगों के हाथ में एक मज़बूत हथियार आ जाए जो हमेशा इंतेक़ाम की आग में जलते रहते हैं और दूसरों की इज़्ज़त से खेलना अपना पैदाइशी हक़ समझते हैं। ज़ाहिर है कि यही आपसी दुश्मनी की वजह बन जाएगा।

3- ग़ीबत दूसरों की शख़सियत, इज़्ज़त और एहतेराम को ख़त्म कर देती है और एहतेराम व इज़्ज़त कम हो जाने या ख़त्म हो जाने से उनके दिल से गुनाह का डर भी कम हो जाता है क्योंकि बहुत से लोग अपनी इज़्ज़त, शख़सियत और एहतेराम की वजह से भी बहुत से ग़लत काम नहीं करते हैं और अगर करते भी हैं तो छुपकर लेकिन अगर ग़ीबत के ज़रिए उनके गुनाह और बुराइयाँ सामने आ जाती हैं तो फिर वही लोग खुल्लम-खुल्ला उन कामों को करने लगते हैं और इस तरह ग़ीबत बुराईयों के रिवाज की वजह बन जाती है।

4- फ़ाईनेंशली भी ग़ीबत समाज को बहुत नुक़सान पहुँचाती है क्योंकि लोगों का आपसी भरोसा ही समाज के फ़ाईनेंस को आगे बढ़ाने में मददगार साबित होता है और इसके बिना पैसे में कोई तरक़्क़ी नहीं हो सकती। जिसका नतीजा यह होगा कि फ़ाईनेंस अपनी जगह पर ठहर जाएगा।

इन्सान पर ग़ीबत का पड़ने वाला असर

एक इन्सान को ध्यान में रखकर अगर देखा जाए तो ग़ीबत दूसरों पर ज़ुल्म और उनके ज़ाती हक़ पर हमला करने की तरह है। तमाम अख़लाक़ी व इन्सानी बुराइयाँ जो एक इन्सान के अंदर दूसरों पर ज़ुल्म करने की वजह से पैदा होती हैं, ग़ीबत की वजह से ही पैदा होती हैं।

इस तरह ग़ीबत जहाँ एक इन्सान को ह्युमन वैल्यूज़ व क्वालिटीज़ के लेहाज़ से कमज़ोर करती है वहीं समाज की बुनियादों को भी हिला देती है।

ग़ीबत की हदें

1- ग़ीबत की क़िस्में

पहली नज़र में ऐसा ही लगता है कि ग़ीबत यानी दूसरों के ढके ऐबों को ज़बान के ज़रिए बयान करने का नाम है लेकिन ग़ीबत की कसौटी से जानकारी के बाद साफ़ हो जाता है कि ग़ीबत इस से भी बड़ी चीज़ है जो अपने अंदर हर ज़बान, क़लम, इशारे या नक़्ल वग़ैरा सभी को शामिल कर लेती है। जैसा कि रिवायत में है कि एक औरत रसूले इस्लाम[स॰] की ख़िदमत में हाज़िर हुई। जब वह चली गई तो जनाबे आएशा ने अपने हाथों के इशारे के ज़रिए उसके छोटे क़द की तरफ़ इशारा किया। रसूले इस्लाम[स॰] ने फ़रमाया, ''तुमने उसकी ग़ीबत की है।''[1]

एक दूसरी रिवायत में आया है कि जनाबे आएशा ने उस औरत की नक़ल की तो रसूले इस्लाम[स॰] ने ऐसा करने से मना कर दिया।[2]

यहीं से यह बात भी साफ़ हो जाती है कि अपनी राइटिंग्स में दूसरों की सोच व नज़रिए पर तंक़ीद करते हुए इस तरह बहस की जानी चाहिए कि कहीं ग़ीबत न हो जाए। अक्सर ऐसा ही होता है कि दूसरों की सोच व नज़रियात पर तंक़ीद करते हुए ऐसे अलफ़ाज़ इस्तेमाल किए जाते हैं जो उनकी ग़ीबत, मज़म्मत, तौहीन वग़ैरा की खुली निशानी होते हैं जैसे अगर यह कहा जाए कि फ़ुलाँ बात ग़ैर अक़्ली है तो यह बहरहाल ग़ीबत ही में गिनी जाएगी मगर यह कि इस बात का कहने वाला मालूम हो या उसकी ग़ीबत जाएज़ हो। इस तरह कभी-कभी ऐसा भी होता है कि इन्सान इशारों में कोई बात कहता है लेकिन ऐसे सुबूत मौजूद होते हैं कि सामने वाला उसकी बात को समझ जाता है, यह भी ग़ीबत है। जैसे अगर कहा जाए कि मैंने

आज फुलाँ जगह एक शख़्स को एक बात कहते सुना, जबकि सुन्ने वाला जानता है कि उस जगह कौन शख़्स वह बात कह रहा था।

2- ग़ीबत का एक दूसरे गुनाह के साथ मिल जाना

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि यह बुरा अमल एक दूसरे बुरे अमल या आमाल के साथ मिल जाता है और अपनी असल शक्ल व सूरत को पूरी तरह बदल लेता है या यह कि एक अच्छे अमल के कपड़े पहन लेता है। जैसे कुछ लोग ग़ीबत से बचने के लिए इस तरह कहते हैं कहीं ऐसा न हो कि कहीं कुछ और खुलकर कहने पर ग़ीबत हो जाए या इस से भी आगे बढ़कर यूँ कहते हैं अफ़सोस कि शरीअत ने हमारी ज़बान पर लगाम लगा दी है या फिर यह कि शरीअत इजाज़त नहीं देती है वरना बहुत कुछ कहने को था, इस तरह के लोग न सिर्फ़ यह कि इशारों में ग़ीबत कर बैठते हैं बल्कि अपनी बात को साफ़ न करने की वजह से अपने मुख़ातब के ज़हन में जिसकी ग़ीबत कर रहे हैं उसके बारे में हज़ारों तरह के शक और बदगुमानियाँ पैदा कर देते हैं। इसके अलावा ऐसे लोग रियाकारी के भी गुनाहगार होते हैं। इस तरह एक साथ दो गुनाह कर डालते हैं और दोनों को एक दूसरे में मिला देते हैं। मज़े की बात तो यह है कि हमदर्दी का इज़हार करते हुए यहाँ तक कह जाते हैं, "बेचारा! ग़लती कर बैठा और इस से फुलाँ गुनाह हो गया, खुदा इसकी मग़फ़िरत करे।" यहाँ भी रिया और ग़ीबत को एक दूसरे में मिला दिया गया है या यह कि रियाकारी करते हुए कहते हैं, "अलहम्दु लिल्लाह! खुद मैं तो शराब व जुए वग़ैरा जैसे गुनाहों का फुलाँ शख़्स की तरह शिकार नहीं हुआ हूँ। अगर खुदा किसी की हिदायत न करे तो बचना बहुत मुश्किल है, अगर खुदा का करम न हो तो... वग़ैरा।

और इस तरह रिया, ग़ीबत, खुदनुमाई और खुद पसंदी वग़ैरा सारे के सारे गुनाह आपस में मिल जाते हैं।

कभी-कभी ऐसा भी कहा जाता है, "मैंने यह सारी बातें जो तुम से कही हैं उस से भी कही हैं या कहूँगा।" और इस तरह हुस्ने ज़न का दरवाज़ा भी बंद कर दिया जाता है और ग़ीबत को और ख़तरनाक बना दिया जाता है।

3- ग़ीबत हक़्क़ुन्नास में से है

ग़ीबत लोगों के हक़ों में से एक है जिसका लिहाज़ किया जाना ज़रूरी है क्योंकिः-

1: इसके ज़रिए जिसकी ग़ीबत की जाती है उसका एहतेराम, इज़्ज़त व आबरू और शख़सियत कम हो जाती है और दीन में इन चीज़ों की अहमियत अक़्ल और शरीअत के लिहाज़ से माल व दौलत की अहमियत से बिल्कुल कम नहीं है।

2: सूरए हुजरात में ग़ीबत को मोमिन भाई का गोश्त खाने के बराबर बताया गया है जिस से साफ़ हो जाता है कि ग़ीबत करना, ज़ुल्म है और ज़ुल्म करना दूसरे का हक़ छीनने की तरह है।

3: कई रिवायतों में भी इस ऊपर वाली बात की तरफ़ इशारा किया गया है जैसे "नेक आमाल के बुरे आमाल में बदल जाने के बारे में यह रिवायत बहुत मशहूर है, "ग़ीबत करने वाले को उस वक़्त तक नहीं बख़्शा जाएगा जब तक जिसकी ग़ीबत की गई है वह न बख़्श दे।""[3]

इसके अलावा यह हदीस भी है, "ग़ीबत करने वाले का कफ़्फ़ारा यह है कि जिसकी ग़ीबत की गई है उसके लिए इस्तेग़फ़ार करे।"[4]

बहरहाल ग़ीबत खुल्लम-खुल्ला ज़ुल्म है और ग़ीबत करने वाला शख़्स उस वक़्त तक नहीं बख़्शा जाएगा जब तक उसको वह शख़्स माफ़ न कर दे जिसकी उसने ग़ीबत की है। यहीं से यह नतीजा भी मिल जाता है कि ऐसा बिल्कुल नहीं सोचना चाहिए कि ग़ीबत का कफ़्फ़ारा सिर्फ़ तौबा और इस्तेग़फ़ार है।

हाँ! अगर ऐसा हो कि खुद को माफ़ करवाने का कोई रास्ता ही न हो या ग़ीबत के ज़रिए अमली तौर पर जिसकी ग़ीबत की गई है उसकी इज़्ज़त व आबरू को कोई नुक़सान न पहुँचा हो तो हो सकता है कि इस्तेग़फ़ार ही काफ़ी हो जाए।

1-अह्याउल उलूम, 3/145, 2-अह्याउल उलूम, 3/145, 3-मुहज्जतुल बैज़ा, 5/251, 4-बिहार, 75/242, मुहज्जतुल बैज़ा, 5/273

مؤسسة المؤمل الثقافية
AL-MU'AMMAL CULTURAL FOUNDATION

دوماہی مؤمّل لکھنؤ

उमदा तबाअत | عمدہ طباعت
आसान ज़बान | آسان زبان
क़ुर्आनी मालूमात | قرآنی معلومات
अख़्लाक़ी बातें | اخلاقی باتیں
आर्ट गैलरी | آرٹ گیلری
इस्लामिक पज़ल | اسلامک پزل
कामिक्स | کامکس

آج ہی ممبر بنئے
زر سالانہ
Rs.150

द्विमासिक मुअम्मल लखनऊ
MUAMMAL

AL-MU'AMMAL CULTURAL FOUNDATION
546/203 Near Era's Lucknow Medical College
Sarfarazganj, Hardoi Road, Lucknow-3 U.P. (India)
Ph.: 0522-2405646, 9839459672
email: muammal@al-muammal.org

माँ-बाप की ज़िम्मेदारी

■ डा. मुजतबा नासिर

इस्लाम की नज़र में माँ-बाप का मक़ाम बहुत बुलन्द है। इतना बुलन्द कि कुरआन ने माँ-बाप के साथ अच्छा सूलूक करने के लिए कई जगह हुक्म दिया है जैसे:-

"और तुम्हारे रब ने फ़ैसला कर दिया है कि सिर्फ़ उसी की इबादत करो और वालदैन के साथ हुस्ने सुलूक इख़्तियार करो।" [(1)]

इमाम सादिक़[अ०] ने फ़रमाया है, "तीन चीज़ें बेहतरीन अमल हैं: 1-वक़्त की पाबंदी के साथ पंजवक़्ता नमाज़ों की अदाएगी, 2- मां-बाप के साथ अच्छा बर्ताव, 3-खुदा की राह में जिहाद

अब ये सवाल पैदा होता है कि माँ-बाप को ये मरतबा क्यों मिला है? माँ-बाप बच्चे के लिए कौन सा बड़ा काम अन्जाम देते हैं कि जिसकी वजह से वह इतने ऊंचे मुक़ाम के लायक़ हो जाते हैं। नौ महीने के बाद एक नन्हा मुन्ना बच्चा ज़मीन पर क़दम रखता है। माँ उसे दूध और दूसरी ग़िज़ा देती है। उसे कभी साफ़ करती है, कभी कपड़े बदलती है, उसकी तरी और खुश्की का ख़याल रखती है। उधर बाप घर के ख़र्चे पूरे करता है और माँ और बच्चे की देखभाल करता है। माँ-बाप का अपनी औलाद के लिए इतना सब कुछ करना, औलाद के लिए कुर्बानियां देना और अपना सब कुछ निछावर कर देना ही माँ-बाप को इतना अज़ीम बना देता है। यहां मासूमीन[अ०] की हदीसों से औलाद के लिए ऐसे कुछ हक़ बयान किए जा रहे हैं जिन को अदा करना माँ-बाप की ज़िम्मेदारी है।

1- पैग़म्बरे इस्लाम[स०] फ़रमाते हैं, "जिस तरह तुम्हारा बाप तुम पर हक़ रखता है, तुम्हारी औलाद भी तुम पर हक़ रखती है।"[(2)]

2- पैग़म्बरे अकरम[स०] फ़रमाते हैं, "जैसे औलाद अपने माँ-बाप की नाफ़रमानी की वजह से आक़ हो जाती है उसी तरह हो सकता है माँ-बाप भी अपने फ़रीज़े को अदा न करने की वजह से औलाद की तरफ़ से आक़ हो जाएं।" [(3)]

3- रसूले अकरम[स०] फ़रमाते हैं, "खुदा ऐसे माँ-बाप पर लानत करे जो अपनी औलाद के आक़ होने की वजह बनें।" [(4)]

4- इमाम सज्जाद[अ०] फ़रमाते हैं, "तुम्हारी औलाद का हक़ ये है कि तुम इस पर ग़ौर करो कि वह बुरी है या अच्छी। जैसी भी है, बहरहाल तुम्हीं से वुजुद में आई है और इस दुनिया में वह तुम्हीं से मन्सूब है। अब तुम्हारी ज़िम्मेदारी है कि तुम उसे अदब सिखाओ, अल्लाह की मारेफ़त के लिए उसकी राहनुमाई करो और परवरगिदार की इताअत में उसकी मदद करा। तुम्हारा सुलूक अपनी औलाद के साथ ऐसे शख़्स का सा होना चाहिए कि जिसे यक़ीन होता है कि एहसान के बदले में उसे अच्छी जज़ा मिलेगी और बदसुलूकी की वजह से उसे सज़ा मिलेगी।" [(5)]

ज़िम्मेदारियां

■ ततहीर ज़ेहरा

ख़ुदावंदे आलम अपने रसूल से फ़रमा रहा है, "ऐ रसूल[स॰]! आप कह दीजिए कि सच्ची बात तुम्हारे ख़ुदा की तरफ़ से नाज़िल हो चुकी है। जो चाहे माने और जो चाहे न माने मगर हम ने ज़ालिमों के लिए वह आग तैयार कर रखी है जिसकी लपटें उन्हें घेर लेंगी और अगर वह फ़रियाद करेंगे तो उनकी फ़रियादरसी खौलते हुए पानी से की जाएगी जो पिघले हुए ताँबे की तरह होगा और मुँह को जला डालेगा, क्या बुरा पानी है और जहन्नम भी क्या बुरी जगह है।"

हर इन्सान की ज़िम्मेदारी है कि वह अपनी ज़िंदगी को ज़ुल्म से बचाए, किसी को न सताए और किसी पर ज़ुल्म न करे क्योंकि अगर इन्सान ज़ालिम बन जाता है तो उसको सज़ा दी जाएगी और उसे जहन्नम में डाला जाएगा क्योंकि इस दुनिया में हर इन्सान का एक फ़रीज़ा है और उसकी ज़िम्मेदारी हैः-

1- इन्सान की पहली ज़िम्मेदारी यह है कि वह अपने पैदा करने वाले को पहचाने और ग़ौर करे कि उसका पैदा करने वाला कौन है।

2- इन्सान की दूसरी ज़िम्मेदारी यह है कि अल्लाह की दी हुई नेमतों में ग़ौर करे कि ख़ुदावंदे आलम ने नेमत अता करके उस पर कितना बड़ा एहसान किया है। इन नेमतों से फ़ायदा उठाकर आख़िरत के लिए तोशा इकट्ठा करे और नबियों, इमामों की अख़्लाक़ी सीरत व किरदार पर अमल करे।

3- इन्सान की तीसरी ज़िम्मेदारी यह है कि इन्सान अपनी ज़िम्मेदारी को समझे यानी वाजिबात को अदा करे और बुरी बातों से बचे ताकि ख़ुदा की बारगाह में बुलंद दर्जा पा सके।"

4- इन्सान की चौथी ज़िम्मेदारी यह है कि अगर गुनाह कर रहा है तो यह देखे कि किसका गुनाह कर रहा है। जिन चीज़ों में ख़ुदा ने मना किया है, जिन गुनाहों से ख़ुदा नाराज़ होगा उन सब से बचे और परहेज़ करे।

5- इन्सान की पाँचवीं ज़िम्मेदारी यह है कि देखे कि जो चीज़ें ख़ुदा ने वाजिब की हैं उनको अदा कर रहा है या नहीं। एक दूसरे का क्या हक़ है उसे पहचाने, माँ-बाप का क्या हक़ है उसे पहचाने, अम्र बिल मारुफ़ के ज़रिए दूसरों तक ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचाए और बुराईयों से बचे और बचाए।

5- हज़रत अली[अ॰] फ़रमाते हैं, "कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारी वजह से तुम्हारा ख़ानदान और तुम्हारे रिश्तेदार बदबख़्त लोगों में से हो जाएं।"[6]

6- पैग़म्बरे अकरम[स॰] फ़रमाते हैं, "जो कोई भी ये चाहता हो कि अपनी औलाद को आक़ होने से बचाए उसे चाहिए कि नेक कामों में उसकी मदद करे।"[7]

7- पैग़म्बरे अकरम[स॰] फ़रमाते हैं, "जिस किसी के यहाँ बेटी हो और वह उसे ख़ूब अदब-अख़्लाक़ सिखाए, उसकी तालीम के लिए कोशिश करे, उसके लिए आराम-आसाइश का इन्तेज़ाम करे तो वह बेटी उसे दोज़ख़ की आग से बचाएगी।"[8]

सब से बढ़कर ये कि ख़ुदा क़ुरआने मजीद में फ़रमाता है, "ऐ ईमान वालो! अपने आपको और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ कि जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर हैं।"[9]

बच्चा अपने बच्चा होने की वजह से अपनी ज़िन्दगी के बारे में कोई रास्ता तय नहीं कर सकता है। उसके अन्दर कामयाब या नाकाम होने दोनों की क़ाबिलियत होती है। उसे एक अच्छा इन्सान भी बनाया जा सकता है और एक घटिया दर्जे का हैवान भी। हर इन्सान की कामयाबी और र्बबादी उसकी उसकी परवरिश पर टिकी होती है और इस अज़ीम काम की ज़िम्मेदारी माँ-बाप के कन्धों पर डाली गई है। उसूली तौर पर माँ-बाप के मायने भी यही हैं यानी इन्सान बनाने वाले।

रसूले इस्लाम[स॰] ने फ़रमाया है, "बाप अपनी औलाद को जो बेहतरीन चीज़ अता कर सकता है वह अच्छा अदब और नेक परवरिश है।"[10]

माँ का रोल यहां सब से ख़ास है। यहां तक कि प्रेगनेन्सी के बीच भी उसकी ख़ुराक और लाइफ़ स्टाइल का बच्चे की कामयाबी और बदबख़्ती पर असर पड़ता है।

पैग़म्बरे इस्लाम[स॰] ने फ़रमाया है, "ख़ुशनसीब वह है जिसकी ख़ुशक़िस्मती की बुनियाद माँ के पेट में पड़ी हो और बदबख़्त वह है जिसकी कामयाबी की शुरूआत माँ के पेट से न हुई हो।"[11]

यह तो हम सभी जानते हैं कि रसूले अकरम[स॰] ने फ़रमाया है, "जन्नत माँ के क़दमों के नीचे है।"

हज़रत अली[अ॰] ने फ़रमाया, "बुरी औलाद इन्सान के लिए मुसीबतों में से है।"[12]

हज़रत अली[अ॰] ने ये भी फ़रमाया है, "बुरी औलाद माँ-बाप की आबरू गवां देती है और वारिसों को रुसवा कर देती है।"[13]

पैग़म्बरे इस्लाम[स॰] ने फ़रमाया है, "ख़ुदा उन माँ-बाप पर रहमत करे जिन्होंने अपनी औलाद की अच्छी परवरिश की ताकि वह उनके साथ अच्छा सुलूक करे।"[14]

1-सूरए बनी इस्राईल/23, 2-मजमउज़्ज़वायद, 8/146, 3-बिहार, 10/93, 4-मकारिमुलम अख़लाक/518, 5-मकारिमुल अख़लाक़/484, 6-गुररुल हिकम/802, 7-मजमउज़्ज़वाएद, 8/146, 8-मजमउज़्ज़वाएद, 8/158, 9-सूरए तहरीम/6, 10-मजमउज़्ज़वाएद, 8/159, 11-बिहार, 77/115-133, 12-गुररुल हिकम/180, 13-गुररुल हिकम/780, 14-मकारिमुल अख़लाक़/517

25

Rajab

Shahadat

Imam

Musa Kazim

a.s.

इमाम मूसा काज़िम अ०

सबसे ज़्यादा क़ीमती इन्सान वह है जो दुनिया को अपने नफ़्स पर अहमियत न दे। याद रखो! तुम्हारे बदन की क़ीमत जन्नत के अलावा कुछ नहीं है। इसलिए इसे किसी और चीज़ के बदले में मत बेचो।

फ़ुलेरीन (Fullerene)

स्टील जैसी सख़्त चीज़ से 250 गुना सख़्त लेकिन लोहे से 10 गुना हल्की इस मिनेरल की हर बात निराली है।

■ मुहम्मद यूसुफ़ मुड़की

कुछ दिन पहले तक यह धातु सारी दुनिया में सिर्फ़ रूस में मिलती थी लेकिन अब पता चला है कि आंध्रा प्रदेश के ज़िला कड़पा में यह अच्छी ख़ासी मिक़दार में मौजूद है। इंटरनेशनल मार्केट में इसके एक तोले यानी 10 Gms. मिक़दार की क़ीमत क़रीब Rs. 10,58,000 से लेकर Rs. 20,70,000 है।

ज़िला कड़पा के ओबोलावानी पिली मंडल के गाँव मंगमपेट में मौजूद ब्राइटस की कानों में इस नायाब धातु के ज़ख़ीरे मिले हैं। यूँ तो इसक पता अक्टूबर 2008 में चला था और उसके बाद से एक्सपर्ट्स ने इसकी पूरी मिक़दार का पता लगाने की खोज शुरू की थी और उस खोज को हाल ही में पूरा कर लिया गया है। इसकी बुनियाद पर तमाम फ़ुलीरीन की जो मिक़दार का पता चला है उसकी क़ीमत लगभग 95 हज़ार करोड़ रुपये बताई जाती है।

आप यह सोच रहे होंगे कि आख़िर इतनी क़ीमती धातु आख़िर है क्या चीज़?आपको यह जान कर शायद ताज्जुब होगा कि यह कोयले की ही एक क़िस्म है! कोयला जिसे केमिस्ट्री में कार्बन कहते हैं।

केमिस्ट्री की Mass Spectroscopy के मैदान में हुई तरक़्क़ी की बुनियाद पर जब कुछ साइंटिस्ट्स ने हेंसन के नज़रिये की जांच शुरू की तो उन्हें पता चला कि कार्बन के 60-70 या और भी ज़्यादा एटमस से ख़ास क़िस्म के मुकम्मल मॉलिक्यूल बनते हैं। इसलिए 1985 में यूनिवर्सिटी आफ़ सेसेक्स के हार्वड क्रोटो, राइस यूनिवर्सिटी के जेम्स हेथ, सीन एब्राउन, राब्रट कर्ल और रिचर्ड सिमाली ने कार्बन के 60 एटम्स रखने वाले Molecule सी-60 का पता लगाया। उसके फ़ौरन बाद कार्बन के और एटमस से बनने वाले मॉलिक्यूल्स का भी पता लगाया गया जिसके नतीजे में जो चीज़ें सामने आती हैं उनको Fullerenes का नाम दिया गया है। यह केमिस्ट्री में इतनी अहम खोज थी कि क्रोटो, कर्ल और सिमाली को 1996 का केमिस्ट्री का नोबल इनाम भी दिया गया। लेबोरेट्री में तैयार किए हुए इन फ़ुलेरीन का बाद में क़ुदरती हालत में भी पता लगा लिया गया। जैसे आम मोमबत्ती के धुएं में भी यह पाए गए लेकिन फ़ुलेरीन को ख़ालिस हालत में हासिल करना बहुत मुश्किल है और यह काम साइंटिस्ट्स के लिए एक चेलेंज की तरह है। फ़ुलेरीन सी-60 वाला Molecule अपनी अच्छी ख़ुसूसियात की वजह से बहुत ख़ास है। नेचर में कुछ एलीमेंटस कुछ अलग-अलग नेचरल शक्लों में पाए जाते हैं। मिसाल के तौर पर आक्सीज़न और ओज़ोन गैसों को लीजिए। दोनों गैसें एक ही एलीमेंट यानी आक्सीज़न से बनती हैं। आक्सीज़न गैस में आक्सीज़न के दो जौहर आपस में मिलकर आक्सीज़न गैस का एक Molecule बनाते हैं। जबकि ओज़ोन में आक्सीज़न के तीन एटम्स आपस में मिलकर ओज़ोन गैस का एक Molecule बनाते हैं। एक साल में मौजूद एटमस की अलग-अलग तादाद की वजह से उन दो गैसों की ख़ुसूसियात भी हर लिहाज़ से बदल जाती हैं। इसी तरह कार्बन की भी चार अलग-अलग क़िस्में हैं। एक तो है कोयला, दूसरा ग्रेफ़ाइट, तीसरा हीरा और चौथा फ़ुलेरीन।

एक ज़माने तक साइंटिस्ट्स को इतना ही मालूम था कि कार्बन के तीन ही रूप होते हैं यानी कोयला, ग्रेफ़ाइट और हीरा। लेकिन 1985 में इसके चौथे रूप फ़ुलेरीन की खोज भी सामने आई। उसकी खोज की कहानी भी बड़ी दिलचस्प है।

1970 में जापान के एक साइंटिस्ट आइजी ओसावा ने जापान की एक मैग्ज़ीन में अपनी रिसर्च छपवाई थी। उसमें उसने यह नज़रिया पेश किया था कि कार्बन न सिर्फ़ कोयला, ग्रेफ़ाइट और हीरा बल्कि एक और शक्ल में भी मौजूद हो सकता है। यह एक बड़ी अहम साइंसी ख़बर थी लेकिन चूंकि ओसावा की रिसर्च सिर्फ़ जापानी ज़बान में छपी थी इसलिए वह यूरोपी और अमेरिकी साइंटिस्ट्स की नज़रों से नहीं गुज़री। इसी दौरान अमेरिका के एक रिसर्च स्कॉलर आर. डब्लू. हेंसन ने भी यह बात कही थी कि कार्बन का एक बहरूप सी-60 की शक्ल में पाया जा सकता है। हेंसन के इस नज़रिए को भी उस वक़्त साइंटिस्ट्स ने संजीदगी से नहीं लिया था क्योंकि उसने सी-60 के साथ जो दलीलें पेश की थीं वह कमज़ोर थीं।

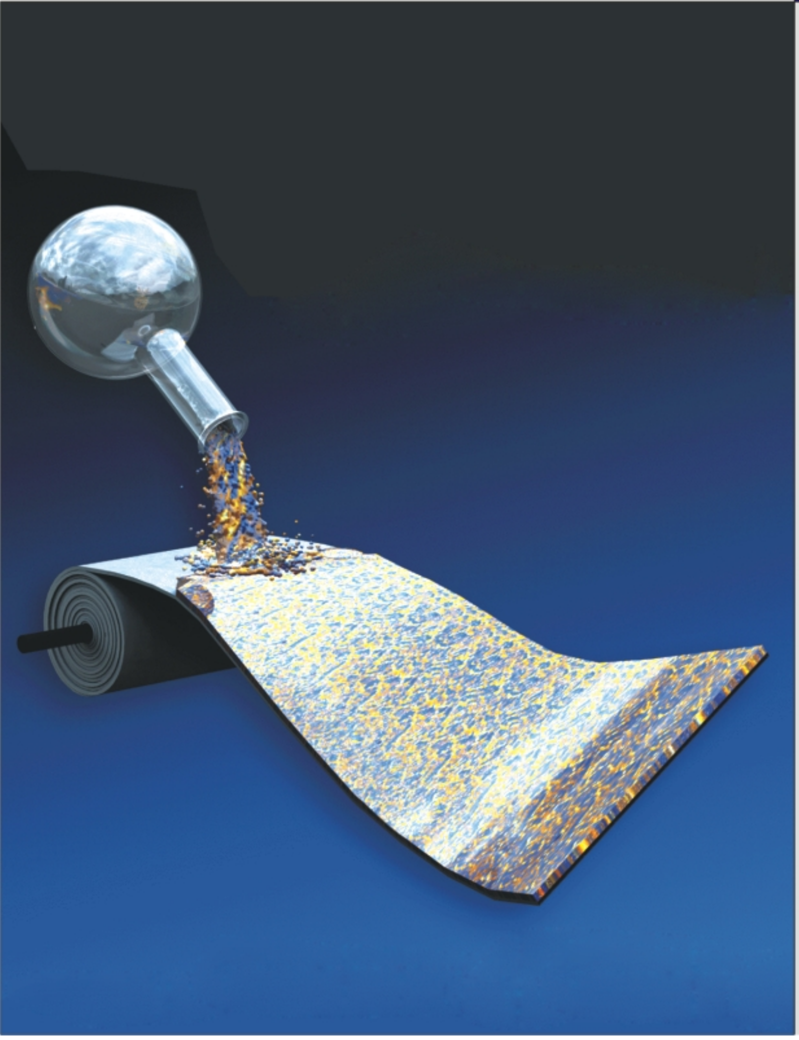

इसलिए उसके दिए गए नतीजों को छापा नहीं गया था। वैसे कुछ वक़्त गुज़रने के बाद "कार्बन" मैग्ज़ीन के 1999 के इशू में उसके नज़रिए को मान लिया गया था।

इस धातु का नाम फ़ुलेरीन कैसे रखा गया, यह भी किसी दिलचस्पी से ख़ाली नहीं है!

आम तौर पर ऐसे साइंटिस्ट्स जिन्होंने बड़ी-बड़ी खोजें की हों उन ही के नाम पर किसी नई खोज या नज़रिए वग़ैरा का नाम रखा जाता है। लेकिन फ़ुलेरीन के साथ ऐसा नहीं हुआ। इसका नाम अमेरिका के एक आरकीटेक्ट इंजीनियर रिचर्ड बिकमन्सटर फोलर के नाम पर रखा गया है। इसकी वजह यह है कि फ़ुलेरीन Molecule बड़ी हद तक उस आरकीटेक्ट के डिज़ाइन किए हुए Geodesic Domes से मिलती-जुलती है। जब सी-60 Molecule के बाद उस ग्रुप में और एटमस वाले Molecules सामने आने लगे तो इस लंबे नाम को छोटा करके सिर्फ़ Fullerenes कहा जाने लगा।

कार्बन के इस बहरूपी शक्ल की केमिकल और नेचरल ख़ुसूसियात पर पिछली एक दहाई से लगातार रिसर्चेस हो रही हैं। उनकी ख़ुसूसियात पर बड़े पैमाने पर रिसर्च और डवलपमेंट हो रहे हैं। उनकी फ़ाएदेमंद ख़ुसूसियात की बुनियाद पर उनको हथियार बनाने के मैदान में इस्तेमाल के लिए भी ग़ौर किया जा रहा है। इसी तरह मेडिकल साइंस में दवाओं के ऐसे इस्तेमाल जो अब तक मुमकिन नहीं थे उनको काम में लाने पर भी रिसर्च हो रही है। इससे हटकर आज की उभरती "नैनो-टेक्नालॉजी" और Super-Conductivity के मैदानों में उसके इस्तेमाल पर बहुत सी स्टडी चल रही है। इस तरह एक और अहम मैदान वह है जहाँ उनको हवाई जहाज़ों और स्पेस जहाज़ों की तैयारी में इस्तेमाल किया जा सकता है।

बहरहाल इनकी अजीबो-ग़रीब और निराली ख़ुसूसियात और इनकी कामयाबी की वजह से इनकी कम से कम क़ीमत एक तोले के लिए दस लाख रुपये से ज़्यादा यूँ ही नहीं तय की गई है!

(सोर्सः एतेमाद)

प्रेग्नेंसी में दिल की बीमारियां

■ डॉ. रूबीना इदरीस

प्रेगनेंसी में जिस्म के अंदर कुछ बदलाव आ जाते हैं जो कि नार्मल होते हैं। यह बदलाव प्रेगनेंसी के शरू में ही शुरु हो जाते हैं। ख़ून की नालियों में ख़ून का बहाव बढ़ जाता है क्योंकि इन नालियों में जो रुकावट होती है वह आम तौर पर कम हो जाती है। इस वजह से ख़ून का दौरान लगभग चालीस फ़ीसद बढ़ जाता है। सबसे ज़्यादा यह बीसवें से अठ्ठाईसवें हफ़्ते के दौरान बढ़ता है। इससे दिल की धड़कन में दस से बीस धड़कन 1 मिनट का इज़ाफ़ा हो जाता है। ब्लेड प्रेशर पहले छः हफ़्तों में कम हो जाता है। लेटे रहने की पोज़ीशन में ख़ून की बड़ी नाली पर प्रेशर कम पड़ता है जिसकी वजह से दौरान इस पोज़ीशन में कम होता है। इसलिए प्रेग्नेंसी में सीधे या ज़्यादा तर उल्टे हाथ की करवट पर लेटने की हिदायत दी जाती है।

डिलीवरी के वक़्त

डिलीवरी के दौरान पहले छः सात घंटों में दौरान पंद्रह फ़ीसद बढ़ जाता है जो बाद में 50 फ़ीसद तक बढ़ जाता है जिसकी वजह से सांस लेने में भी तकलीफ़ हो जाती है लेकिन डिलीवरी के बाद धरे-धरे यह नार्मल की तरफ़ आना शुरु हो जाता है और तक़रीबन दो हफ़्तों में यह बिल्कुल नार्मल हो जाता है।

एहतियात

1- प्रेगनेंसी से पहले

दिल की मरीज़ माओं को प्रेगनेंसी से पहले Cardiologist और Obstetrician (गायनी और दिल के डाक्टर) से कॉन्टेक्ट करना चाहिए। ECG और ECHO टेस्ट भी पहले ही करा लेना चाहिए। दिल की बीमारी को प्रेगनेंसी के दौरान आसान नहीं लेना चाहिए क्योंकि बद एहतियाती माओं की जान भी ले लेती है और अगर किसी को सर्जरी की या मेडिकल ट्रीटमेंट की ज़रूरत हो तो वह पहले उसका पूरा इलाज कराएं फिर प्रेगनेंसी के बारे में गायनी के डाक्टर से मशवरा करें।

2- प्रेगनेंसी के बीच

सांस की तकलीफ़, सांस तेज़ और खींच के लेना, दिल की धड़कन का तेज़ होना, आम कामों में बहुत जल्दी थक जाना, इन सब बातों को आसान नहीं लेना चाहिए बल्कि फ़ौरन अपने दिल के डाक्टर को यह सारी बातें बतानी चाहिए वरना मरीज़ को नुक़सान पहुंच सकता है। इसीलिए ऐसे मरीज़ों को हर महीने अपना बाक़ाएदा चेकअप गायनी और दिल के डाक्टर दोनों से ज़रूर कराना चाहिए और कोशिश यह होनी चाहिए कि टेंशन व परेशानी वग़ैरा को अपने ऊपर हावी न होने दें। मरीज़ का वज़न बहुत ज़्यादा नहीं बढ़ना चाहिए। बाक़ाएदा चेकअप कराने से यह सारी चीज़ें नार्मल लेवेल में रहेंगी फिर भी अगर ऐसे मरीज़ों को ज़रूरत पड़ी तो पहले से Antibiotic भी शुरु करा दी जाती है ताकि बाद में कोई परेशानी न हो।

3- डिलिवरी के बीच

डिलीवरी के दौरान दर्द की वजह से Stress पर बढ़ जाता है तो ऐसे मरीज़ों को ख़ास तौर ध्यान की ज़रूरत होती है। उनमें Oxygen की कमी भी हो जाती है। इसलिए Oxygen की कमी को पहले ही पूरा करना चाहिए और कोशिश यह होनी चाहिए कि जल्दी से जल्दी डिलीवरी हो जाए। Fluid-Intake प्रेगनेंसी के बीच बैलेंस्ड होना चाहिए।

4- डिलीवरी के बाद

दिल के मरीज़ माओं को डिलीवरी के बाद भी बहुत सावधानियां बरतने की ज़रूरत होती है। उन्हें डिलीवरी के बाद भी अपने दिल के डाक्टर से मशवेरा ज़रूर लेना चाहिए। छः हफ़्तों तक अपना बाक़ाएदा चेकअप ज़रूर करवाएं और जिस तरीक़े से डाक्टर दवाएं इस्तेमाल करने को बताएं ज़रूर लेनी चाहिए।

दिल के मरीज़ अगर पहले से ही अपने डाक्टरों के मशवरे पर अमल करेंगे और दवाएं पाबंदी से लेंगे तो प्रेगनेंसी में कोई परेशानी नहीं होगी। इस तरह मरीज़ की सेहत भी अच्छी रहेगी और बच्चा भी सेहतमंद होगा।

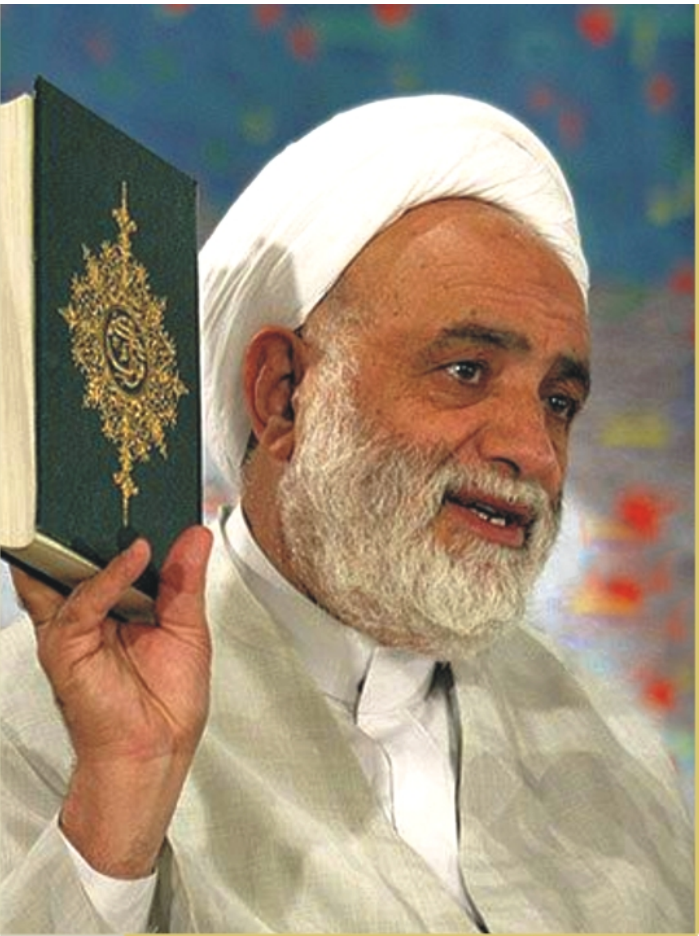

आयतुल्लाह मोहसिन क़राअती

आयतुल्लाह मोहसिन क़राअती ईरान के एक बहुत बड़े आलिमे दीन, स्कॉलर और कुरआने करीम के मुफ़स्सिर हैं। कुरआने मजीद पर जवानों के लिए आपने इतना ज़्यादा काम किया है कि हिन्दुस्तान की बात तो अलग है, बाहर की सारी दुनिया में कुरआन से मोहब्बत करने वाले शायद बहुत कम ऐसे जवान होंगे जो उनको न जानते हों।

आयतुल्लाह की एक ख़ास बात यह भी है कि वह बड़े हाज़िर जवाब हैं और बात-बात में ऐसी बात कह जाते हैं जो सोने से तौलने के लायक़ होती है।

हम यहां आपकी ज़िंदगी के ऐसे ही कुछ वाक़ेए पेश कर रहे हैं...।

मेरे घर के पास एक बाग़ था। मैंने बाबा से कहा, ''इस बाग़ में इतने सारे पेड़ हैं लेकिन क्या बात है कि इन पेड़ों में कभी फल नहीं लगते?'' बाबा ने जवाब में कहा, ''हाँ! बेटा लेकिन ज़रा यह भी सोचो कि इस घर में माशाअल्लाह इतने सारे लोग हैं लेकिन इसमें कोई भी नमाज़ नहीं पढ़ता?''

हश्र का मंज़र हज में समझ में आया

मैं हज के लिए मक्के गया। जब मिना में पहुँचा तो मेरी चप्पल टूट गई। वहाँ बहुत ज़बरदस्त गर्मी पड़ती है जिसकी वजह से ज़मीन का फ़र्श बहुत गर्म रहता है। मैं नंगे पैर उस ज़मीन पर चल रहा था लेकिन ज़मीन की गर्मी की वजह से पैर रखना मुश्किल था जिसकी वजह से मैं उछल-उछल कर चल रहा था। लोग मुझे देख रहे थे, सलाम कह रहे थे और आगे बढ़े जा रहे थे। किसी ने मुझ से यह नहीं पूछा कि आप ऐसे क्यों चल रहे हैं और न ही किसी को मुझ पर तरस आया कि यह लीजिए! यह चप्पल पहन लीजिए। इस वाक़िए से मेरा ज़हन फ़ौरन हश्र के मैदान की तरफ़ चला गया कि वहाँ का भी मंज़र ऐसा ही होगा।

बिना अमल की दोस्ती

मेरे पास मेरा बच्चा बैठा हुआ था। जब मैं घर से निकलने लगा तो बच्चे ने कहा कि बाबा मेरे लिए बिस्कुट लाइएगा। मैंने कहा कि ठीक है बेटा ज़रूर लेकर आऊँगा। लेकिन जब घर वापस आया तो भूल गया। जैसे ही मैंने घर का दरवाज़ा खोला बच्चा दौड़ता हुआ आया और पूछा बाबा! बिस्कुट लेकर आए? मैंने कहा कि बेटा भूल गया। बच्चे ने पलट कर कहा कि बाबा यह काम सही नहीं है।

मैंने बच्चे को गोद में उठा लिया और उसे से कहा कि बेटा! मैं तुमको बहुत चाहता हूँ। बच्चे ने कहा कि फिर आप मेरे लिए बिस्कुट लेकर क्यों नहीं आए?इस वाक़िए से यह बात समझ में आती है कि बिना अमल के दोस्ती को छोटा बच्चा तक क़ुबूल नहीं करता तो हम किस तरह यह कह सकते हैं कि हम ख़ुदा, रसूल[स॰] व आले रसूल[अ॰] से मोहब्बत करते हैं लेकिन उनके बताए हुए अहकाम पर अमल नहीं करते!

आप ही से कह रहा हूँ!

एक बार जामा मस्जिद में नमाज़ के वक़्त एक दीवाना आया और बुलंद आवाज़ से कहने लगा, ''तुम लोग पागल हो।'' उसकी यह बात सुनकर सब नमाज़ी हंसने लगे। फिर उसने कहा कि तुम लोग ऐसे हो, वैसे हो फिर लोग हंसने लगे। फिर उसने पेशनमाज़ से कहा, ''क़िब्ला मैं आप से कह रहा हूँ।'' इसके बाद पहली सफ़ वालों से कहा, ''मैं तुम लोगों से कह रहा हूँ'' यह सुनते ही नमाज़ियों ने ग़ुस्से में आकर कहा, ''इस पागल को पकड़ कर मस्जिद से बाहर निकाल दो।''

यह एक दीवाने के दास्तान थी लेकिन इस वाक़िए से हमें एक सबक़ मिलता है कि जब इन्सान एक आम बात करता है तो सुन्ने वालों पर उसका कोई असर नहीं होता लेकिन अगर उसी बात को किसी ख़ास इन्सान से कहा जाए तो वह असरदार हो जाती है।

ग़ैर ख़ुदा के लिए काम

एक बार मैं सफ़र पर जा रहा था। अभी जहाज़ पर बैठा ही था कि ऐयर होस्टेस ने एलान किया कि सारे मुसाफ़िर जहाज़ से उतर जाएं। जब लोग जहाज़ से उतर गए तो क्या देखते हैं कि वह सामान भी जो लगेज हुए थे उनको भी उतार लिया गया है। लोगों ने इसकी वजह पूछी तो जवाब दिया गया कि जहाज़ में एक चूहा घुस गया है जिसको निकालने के लिए ऐसा किया गया है। मैंने कहा कि इतनी ज़हमत और फ़्लाइट में देरी की वजह सिर्फ़ एक चूहा बना है?

जवाब में कहा गया कि जी हाँ। अगर उस चूहे को जहाज़ से बाहर न निकाला जाए तो हो सकता है कि यह जहाज़ एक बड़े हादसे का शिकार हो जाए क्योंकि हो सकता है यह चूहा किसी तार को काट दे। मेरे ज़हन में फ़ौरन यह बात आई कि एक चूहे में इतनी ताक़त है कि जहाज़ को हादसे का शिकार बना सकता है तो अगर चूहे शिर्क, कुफ़्र, तकब्बुर, ग़ीबत, दुनिया परस्ती, शहवत वग़ैरा की शक्ल में इन्सान की रूह में घुस जाएं तो इन्सान व ख़ुदा के

बीच के तारों को भी काट सकते हैं जिसके नतीजे में इन्सान एक बड़े हादसे का शिकार हो जाएगा।

ज़ोहद और कंजूसी

मैं सफ़र पर गया हुआ था। एक दिन सुबह मेरे पास नाश्ता लाया गया जिसमें सिर्फ़ रोटी और मक्खन था। मेज़बान ने बड़े फ़ख़्र से कहा कि जब मेरी शादी हुई थी तो मुझे नाश्ते में रोटी और दही दिया गया था। मैंने कहा कि जब इन्सान इस दुनिया में आता है तो इस्लाम कहता है कि उसके अक़ीक़े में बकरा ज़बह करो लेकिन जब आप बड़े हो गए, पढ़ लिखकर इन्सानों में गिने जाने लगे और शादी भी कर ली तो उसमें और बरकत होनी चाहिए थी न कि उसमें और कमी। इसके अलावा ज़ोहद और तक़्वे के मायने यह हैं कि खुद न खाओ, न यह कि दूसरों को भी न खिलाओ।

सबसे अच्छा और सबसे बुरा

लुक़मान हकीम एक ख़्वाजा की उलटी-सीधी बातों से बहुत नाराज़ थे। लुक़मान इस चक्कर में थे कि कोई ऐसा मौक़ा मिले जिस से उसके ज़मीर को जगा सकें।

एक दिन ख़्वाजा के घर पर एक मेहमान आया। ख़्वाजा ने लुक़मान से कहा, "एक बकरा ज़बह करो और उसमें से उसके सबसे अच्छे हिस्सों को पकाओ।"

हकीम लुक़मान ने बकरे को ज़बह करके उसकी ज़बान और उसके दिल को चुना और उस से मज़ेदार खाना पकाकर दस्तरख़्वान पर पेश कर दिया।

दूसरे दिन ख़्वाजा ने फिर कहा, "लुक़मान एक बकरा ज़बह करो और उसके सबसे बुरे हिस्सों को पकाओ।" लुक़मान ने बकरे को ज़बह किया और फिर वही हिस्से यानी ज़बान और दिल को चुना और उन से खाना पकाकर दस्तरख़्वान पर रख दिया।

ख़्वाजा को लुक़मान के इस काम पर बड़ी हैरत हुई। पूछा, "तुम ने किस तरह इन हिस्सों को सबसे अच्छे और बुरे, दोनों के लिए इस्तेमाल किया है?"

लुक़मान ने कहा, "ख़्वाजा जी! दिल और ज़बान ही हैं जो ख़ुशबख़्ती और बदबख़्ती का रोल अदा करते हैं। अगर दिल को ख़ुदा के नूर का सोर्स और ज़बान को ख़ुदा की मारेफ़त, इल्मे दीन फैलाने और लोगों के सुधार के लिए इस्तेमाल किया जाए तो यह जिस्म के सब से बेहतरीन हिस्से हैं और अगर यह दिल बुराईयों से भरा हुआ और ज़बान ग़ीबत व फ़ितनों से आलूदा हो तो यह हिस्से सबसे बुरे हैं।"

ख़्वाजा ने इस वाक़िए से नसीहत ली और ख़ुद को सुधारने का पक्का इरादा कर लिया। ●

आपके लैटर्स

जनाबे आली

मरयम मार्च 2012 का अंक पढ़ा। निहायत संजीदा लेख पेज 5 पर 'औरतों की आईडियल' व 8 पर 'पॉज़िटिव-निगेटिव थिंकिंग' व 16 पर 'बरमूदा ट्राइंगिल' व 26 पर 'अगला क़दम' बहुत अच्छे लगे।

नज़्म 'माँ की अज़्मत', लेखक ने इस जहान का ख़ूबसूरत तोहफ़ा 'माँ' के लिए लिखा है। ऐसी उपमा कभी नही पढ़ी।

उम्मीद करूगां कि अरबी भाशा के शब्दों का हिन्दी अर्थ लेख के अन्त मे दिया करेंगे।

सुबोध अग्रवाल
बलखण्डी नाका, बाँदा, (उ.प्र.)

एडीटर साहब!
सलामुन अलैकुम

'मरयम' को पढ़ने के बाद रूह को नई तवानाई मिली। अल्लाह तआला मोहम्मद[स०] व आले मोहम्मद[अ०] के सदक़े में इस रूहानियत को तरोताज़ा रखे। आमीन!

अलविया
लखनऊ

एडीटर मोहतरम!
अस्सलामो अलैकुम

आपकी मैगज़ीन 'मरयम' के बारे में बड़ी तारीफ़ सुनी है कि एक मंथली मैगज़ीन ऐसी भी है जो इस ज़माने में पब्लिश हो रही है और जो आज के समाज के लिए बहुत ज़रूरी है।

हमारे क्लब में अपनी मैगज़ीन नमूने के तौर पर ज़रूर भेजिए।

मेराज आज़मी
गैलेक्सी डी. एक्स. क्लब, आज़मगढ़

RNI No: Title Code: UPHIN41897

मरयम

का एक साल पूरा होने के मौक़े पर

हम आपके घर लेकर आए हैं ख़ूबसूरत और क़ीमती

तोहफ़े

पहला इनाम	:	उमरा
दूसरा इनाम	:	फ़्रिज
तीसरा इनाम	:	माइक्रोवेव
चौथा इनाम	:	मोबाईल सेट
पांचवां इनाम	:	डिनर सेट
छटा इनाम	:	ज्वैलरी
सातवां इनाम	:	मिक्सर
आठवां इनाम	:	पंखा
नवां इनाम	:	लेमन सेट
दसवां इनाम	:	घड़ी

दिसम्बर 2011 से मरयम में हर महीने एक कूपन छपेगा।
10 कूपन जमा करके मरयम की तरफ़ से दी जाने वाली आख़िरी तारीख़ तक कूपन भेजने वालों में से ड्रॉ के ज़रिए 10 लोगों को सिलेक्ट करके इनाम दिए जाएंगे।
अगर आप मरयम के सब्सक्राईबर नहीं हैं तो जल्दी कीजिए।
खुद भी सब्सक्राईब कीजिए और अपने रिश्तेदारों व दोस्तों को भी सब्सक्राईब कराईए और इस स्कीम से फ़ाएदा उठाने का मौक़ा हाथ से मत जाने दीजिए!

नियम व शर्तें:

1. मरयम में हर महीने अलग-अलग तरह के कूपन छापे जाएंगे। दिसम्बर 2011 से नवम्बर 2012 तक 10 कूपन जमा करके भेजने वालों को ही इस ड्रॉ में शामिल किया जाएगा।
2. मरयम की टीम का फ़ैसला ही आख़िरी होगा और इस बारे में किसी को कोई एतेराज़ का हक़ नहीं होगा।
3. इस सिलसिले में किसी भी तरह की अदालती कार्यवाई सिर्फ़ लखनऊ की अदालत में ही की जा सकेगी।

Contact No.:
+91-522-4009558
+91-9956620017 (Lucknow)
+91-9892393414 (Mumbai)
maryammonthly@gmail.com

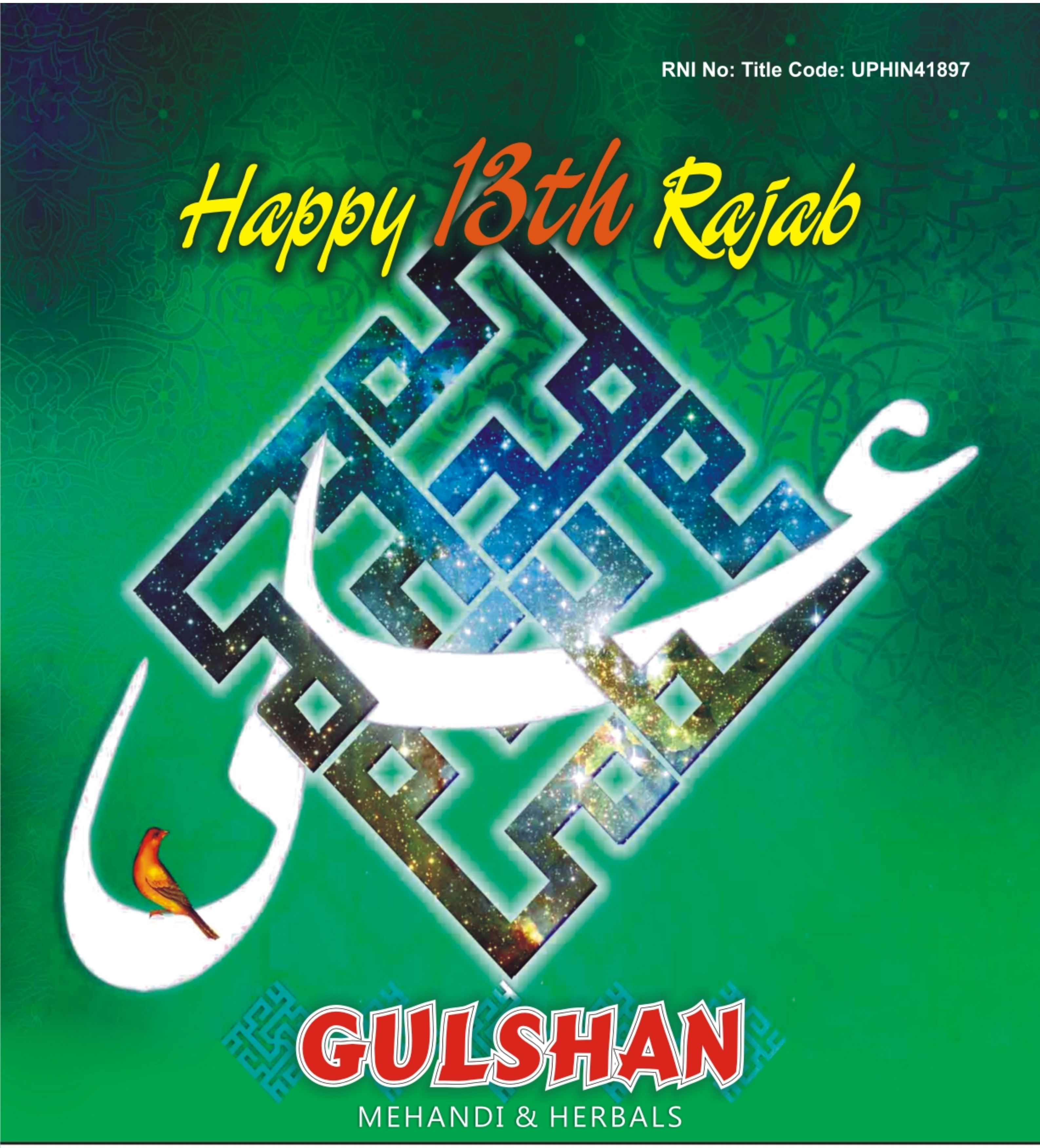

IRFAN ALI PRADHAN
403 & 404, A Block
REGALIA HEIGHTS
Ahmadabad Palace Road
KOHE-FIZA
BHOPAL (M.P.) 462001, INDIA.
+919893030792, +917554220261

MOHTARMA "GULSHAN"
G-1, Krishna Apartment
Plot No. 2, Firdaus Nagar
Bairasia Road, BHOPAL
+91-755-2739111